।। श्री शासनपति महावीराय नमः ।।
गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिगुरुभ्यो नमः ।।

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

संस्थापक–श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | फरवरी–2020

दिव्याशीष–लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में अयोध्यापुरम से सिद्धाचल महातीर्थ के संघ के संघपति छाजेड़ परिवार (पारा) कांबली ओढाते हुए ।

जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. श्री अमराईवाड़ी श्रीसंघ के प्रमुखों से मतभेद दूर करने के लिये चर्चा करते हुए ।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला – जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला – रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)
14. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
15. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम) म.प्र.)

हमारे गौरव

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

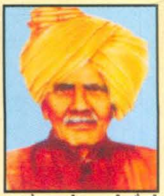
शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

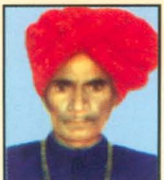
शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

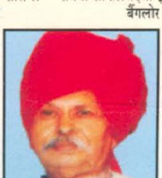
मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंद
बागरा

Rec 11/2/2020 3171

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

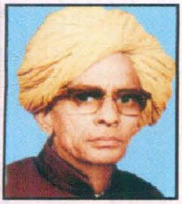
स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

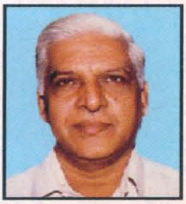
शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

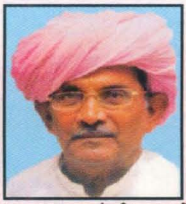
स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी संकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

34516

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

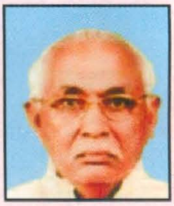

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

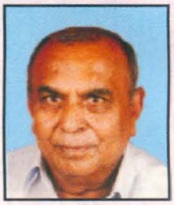

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

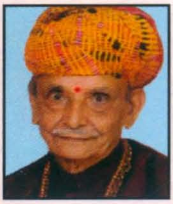

स्व.श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

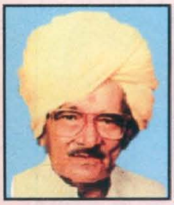

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

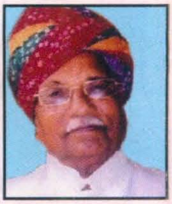

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

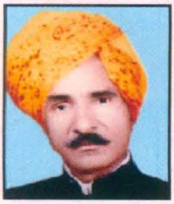
स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

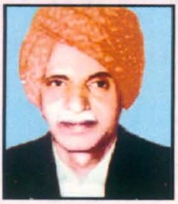
स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

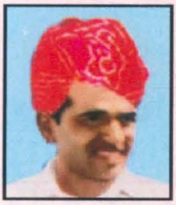
संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाघाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

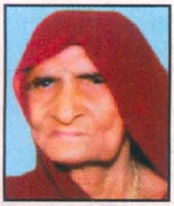
पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

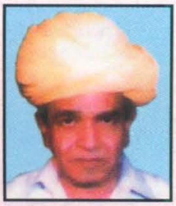
श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा (हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल जालोर

पुखराजजी समताजी गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़ नैनावा

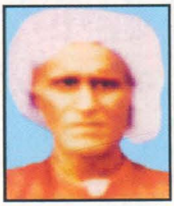
वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी देसाई

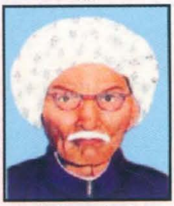
वेदलीया हालचंद भाई माणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन भोगीलाल सरुपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल (वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

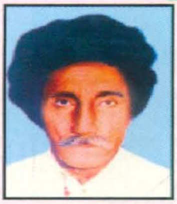
संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

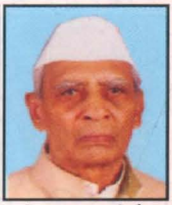
श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

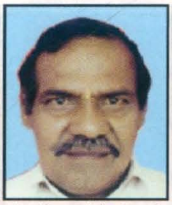
श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

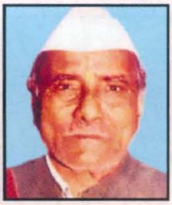
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

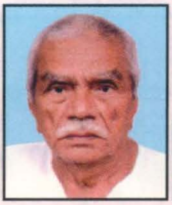
श्री मानसिंहजी
राजगढ़

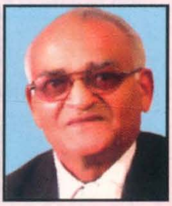
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय
खाचरौद

हमारे गौरव

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी , बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी , बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

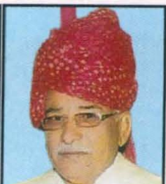
शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
फरवरी : 2020 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 68 अंक 2
वीर सं. 2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी (संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू (परिषद अध्यक्ष)
श्री सुधीर लोढ़ा (महामंत्री)
श्री ओ.सी. जैन (न्यासी)
श्री विनोद संघवी (न्यासी)
आदि

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

खरी साधना आत्मध्यान की साधना बन जाती है

आबू पर्वत की सुनसान निर्जन टेकरी पर

योगी पुरुष श्री आनंदघनजी

ध्यानस्थ थे तभी एक अन्य योगी ने जो उनका मित्र था, अपना शिष्य भेज कर सुवर्णसिद्धि की सफलता में प्राप्त 'रससिद्धि' को एक शीशे में भरकर भेजा। शिष्य ने यह शीशी आनन्दघनजी को भेंट की। आनन्दघनजी ने शीशी हाथ में ली तथा निकट रखी पत्थर की शिला पर फोड़ दी।

शिष्य को आवेश आया। उसने कहा–

'मेरे गुरु ने उग्र साधना कर सुवर्णसिद्धि प्राप्त की है। उनने रससिद्धि आपको भेजी। आपने कभी इसे देखी भी थी।'

सुनते ही आनन्दघनजी उठे। निकट रखी पत्थर की शिला तक गये तथा वहाँ पर पेशाब कर दिया। शिला सोने की हो गई।

शिष्य आश्चर्य में गिर गया। उसने आनंदघनजी के पैर पकड़ लिये। वह बोल उठा–

'ओह ! जिनके पेशाब में स्वर्णसिद्धि है, उसे रससिद्धि की क्या आवश्यकता है ? आपकी योगशक्ति कितनी विशिष्ट होगी ।'

आनन्दघनजी के शरीर के अणु तथा परमाणु ऐसे उत्तम बन गये थे कि उनके पेशाब में प्रबल शक्ति घनीभूत हो गई थी।

खरी साधना आत्म ध्यान की साधना हो जाती है।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	09
2.	अध्यक्ष की पाती (वाघजीभाई वोरा)	11
3.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	12
4.	ज्वाजल्यमयी था तीर्थंकर श्री महावीर का केवल्य (श्री शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)	13
5.	अशुभ वचन योग (34) (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	15
6.	प्रश्नोत्तरी	18
7.	उत्तम आहार-शाकाहार-29 : सुखी समाज के लिये गुणवान नागरिक (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)	19
8.	जिनशासन की वर्णमाला (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	21
9.	देवद्रव्य भक्षण एक महादोष (साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	23
10.	गणधरवाद (लेखांक-73) (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	26
11.	चिन्तन का चित्रांकण (जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	29
12.	धारावाहिक उपन्यास-लेखांक-4 (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	31
13.	महाराजा श्रेणिक (मुनिराज डॉ. सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	33
14.	याद रहे मुक्ति की दूनि है श्री जिनभक्ति (पं. श्री गुणसुंदरविजयजी गणी)	35
15.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	37
16.	श्री जयंतसेन जयनाद (मुनिश्री प्रशमसेनविजयजी म.सा.)	39
17.	आचार्यपद के 34 वर्ष (मुनिश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा.)	41
18.	पुण्य सम्राट् के 63 चातुर्मास की सुवास (पुण्यसम्राट् ज्ञानाञ्जनम् पर्व-पाटण)	44
19.	सात अजूबों से कम नहीं श्री देलवाड़ा (आबू) तीर्थ जैन मंदिर (जैन जयराज देवड़ा, धोका)	46
20.	श्री राजेन्द्र जैन पर्व दिवस कैलेण्डर	48
21.	प्रकृति का अनमोल उपहार-धूप (श्री अचलचन्द जैन, सायला)	50
22.	माँ (श्री अरविन्द सी मोदी, जालोर)	52
23.	गुजराती संभाग	53-68
24.	कुमकुम सने पगलिये	69-73
25.	श्रीसंघ सौरभ	74-86
26.	परिषद प्रांगण से	87-99
27.	जैन विश्व	100-102
28.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	103-104

सम्पादकीय

तीर्थंकर महावीर के समकालीन वैचारिक जागृति (3)

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

(गतांक से आगे)

षोडस महाजनपदों के अतिरिक्त महावीर स्वामी के समकालीन स्वतंत्र तथा अर्ध स्वतंत्र गणराज्य होने का उल्लेख भी यहाँ दिया जाना प्रासंगिक होगा। इनमें कपिलवस्तु के शाक्य, सुसमारगिरि के भग्ग (गर्ग), अल्लकम्प के बुलि, रामग्राम व देवदह के लिय, पिप्पलिवन के मोरिय तथा केसपुत्र के कालाभ भी विभिन्न ग्रंथों में प्राप्त होते हैं। महाजनपद मगध, अवन्ति, कौसल तथा वत्स विस्तारवादी एवं युद्धोन्मादी माने जाते थे। ये अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाते रहते थे। सेनाओं में रथ, हाथी, घोड़े एवं पैदल चार अंग होते थे। रथ के साथ हाथियों की भूमिका भी ऐतिहासिक रहती थी। शास्त्रों में कई राजाओं के हाथियों के करतब उल्लेखित हुए हैं।

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के युग की सामाजिकता वर्ण व्यवस्था से युक्त थी। दास प्रथा का प्रचलन खूब था। पुरुष दास व स्त्री दासी कहे जाते थे। दास-दासियों को विक्रय किये जाने या खरीदे जाने के कई उदाहरण धर्म शास्त्रों में है। दास-दासी उपहार में भी दिये जाते थे। इन्हें इनके मालिक बुरी तरह पीटते भी थे।

कुल मिलाकर तीर्थंकर महावीर स्वामी का काल आध्यात्मिक तथा वैचारिक सुधारवाद का प्रतीक माना जाता है। महात्मा गौतम बुद्ध का जन्म ईसा पूर्व 563 में लुम्बिनी वन में हुआ था। यह नेपाल की सीमा पर स्थित रूमिनदेई से पहचाना जाता था। शाक्य वंशीय शुद्धोधन उनके पिता थे जो कपिलवस्तु के राजा थे। उनकी माता माया की मृत्यु उनके जन्म से एक सप्ताह बाद ही हो गई थी। उनको उनकी पत्नी यशोधरा से राहुल पुत्र का जन्म हुआ। उनने संसार के दुःखों, मृत्यु, जन्म-जरा व रोग को देखकर 29 वर्ष की अवस्था में संन्यास लिया था। उनने पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यान लगाते हुए ज्ञान की प्राप्ति की। उनके पहले उपदेश को धर्मचक्र प्रवर्तन कहा गया। उनने कई राजाओं व प्रमुख लोगों को मत परिवर्तन करवाकर उन्हें बौद्ध बनाया। अस्सी वर्ष की आयु में कुसिनारा में उनका परिनिर्वाण हुआ।

ब्राह्मण संन्यासी वानप्रस्थित्

तथा तावस, गेरूए या परिब्राजक इन दो भागों में विभाजित थे। तावस वन में रहते थे। परिब्राजक भ्रमणशील साधु या आचार्य होते थे। वे बड़े ज्ञानी होते थे। वे घरों पर जाकर भिक्षा एकत्र करते थे। परिब्राजक ब्राह्मण सिर का मुण्डन रखते थे तथा घास, कपड़े, चमड़े के टुकड़े से अपना शरीर ढंकते थे। उनका शयन कोरी जमीन पर होता था। ये वैदिक साहित्य के विद्वान होते थे। परिब्राजकों की संख्या सैंकड़ों से भी अधिक थी। इनके उत्तम आश्रम कई स्थानों पर बने हुए थे। उरूवेला वैदिक धर्म का उल्लेखनीय केन्द्र था। उरूवेला में प्रतिवर्ष एक विशाल यज्ञ होता था। ये ब्राह्मण साधु कहे जाते थे तथा वैदिक कर्मकाण्ड में निपुण थे। लोकायतों का उल्लेख भी मिलता है।

उस समय दार्शनिक विचार विमर्श में आत्मा, संसार, शरीर, देवता, मृत्यु, इन्द्रियां, ध्यान आदि को या इनमें से किसी एक या अधिक को केन्द्रित कर बौद्धिक मीमांसाएं की गई तथा सिद्धांत स्थापित किये गये। वैदिक देवकुल तथा धार्मिक क्रियाओं का अपना स्थान बना हुआ था। वैदिक कर्मकांड समाज में प्रचलित थे। हालांकि उनकी संख्या कम हो रही थी लेकिन उनका अस्तित्व बराबर रहा। युग के सोत्थिय तथा ब्राह्मण महासाल वैदिक धर्म के संरक्षक थे। अश्वमेध, सम्मपस तथा वाजपेय यज्ञों के नाम मिलते हैं। यज्ञों में बलि पशुओं में भेड़, गाय, बैल, बधिया, पशु, बकरी आदि की दी जाती थी। बलि चढ़ाये जाने वाले पशुओं की संख्या किसी यज्ञ में 500 या 700 तक हो जाती थी। यह विशाल समारोह के रूप में होते थे। इनके द्वारा कहा जाता था कि बलि अधर्म नहीं धर्म है, भगवान ने यज्ञों के लिये ही पशुओं की रचना की है, वेदविहित यज्ञ में की जाने वाली हिंसा, हिंसा नहीं प्रत्युत अहिंसा है।

ब्राह्मणों को पूजनीय माना जाता था। वर्ण व्यवस्था तथा जातिवाद प्रबलता पर थे, निम्न वर्ग को अपनी सुविधाओं तथा स्वतंत्रता में सीमितता महसूस होती थी। सूत्र कृतांग में क्रियावाद, अक्रियावाद, विनयवाद तथा अज्ञानवाद थे चार नास्तिकवाद मिलते हैं। इन चारों वादों के 363 मत थे, जिनमें क्रियावाद 180, अक्रियावाद के 84 अज्ञानवाद के 67 तथा विनयवाद के 32 मत सम्मिलित हैं।

(संदर्भ ग्रंथ-जैन धर्म का इतिहास- डॉ. कैलाशचंद्र जैन, जैन धर्म का प्रामाणिक इतिहास -आचार्य श्री हस्तीमलजी, जैन धर्म नुं. इतिहास-बंधु त्रिपुटी)

◆◆◆

अध्यक्षीय पाती

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

जैन लिखावें जनगणना पत्रक में

देश में प्रति दस वर्ष के अन्तर से शासकीय स्तर से की जाने वाली जनगणना वर्ष 2020 में हो रही है। जनगणना का कार्य इसलिये महत्वपूर्ण माना जाता है कि इसके आधार पर तैयार होने वाले आंकड़े देश की भावी प्रायोजनाओं तथा नीतियों को निश्चित करते हैं।

जनगणना में धर्म का भी खाना होता है जिसके आधार पर विभिन्न धर्म मानने वालों की संख्या गणना में आती है वर्तमान में जनगणना 2011 के अनुसार देश में केवल 45 लाख जैन हैं जो कि देश में विद्यमान विभिन्न धर्मावलम्बियों की संख्या में सबसे न्यून हैं। जैन समाज का मानना है कि जैनों की वास्तविक संख्या देश में डेढ़ करोड़ से कम नहीं है। इसे जागृति तथा सक्रियता से हम अगली जनगणना में वास्तविक आंकड़ों तक पहुंचा सकते हैं। इसके लिये सभी स्थानीय श्रीसंघों तथा परिषद परिवार की शाखाओं को अभी से ही अभियान छेड़ कर जुट जाना है। हमें घर-घर जाकर प्रशिक्षण करना चाहिये कि धर्म तथा जाति के खाने में हम केवल जैन लिखाएं। जैन ओसवाल या ओसवाल जैन या पोरवाल या खंडेलवाल जैसे शब्दों का उपयोग न करें। सिर्फ जैन शब्द, जनगणना पत्रक पर लिखा गया है, यह सतर्कता के साथ ध्यान दें। वैसे जनगणना का कार्य दोपहर में घरों पर जाकर शासकीय कर्मचारियों द्वारा किया जाता है, उस समय अधिकांशतः महिलाएँ घरों पर रहती हैं, अतएव उनको भी पूरी जानकारी से अवगत किया जाना हमारा कर्त्तव्य है।

आशा है समस्त स्थानों के संघ इस हेतु सक्रियता से कार्य करेंगे तथा परिषद परिवार या अन्य युवा, महिला इकाइयों को उत्तरदायित्व निर्धारित कर सभी को इस महान कार्य में जोड़ लेंगे यदि वहां सकल जैन समाज कोई ऐसा प्रयास कर रहा हो तो उसमें पूर्ण सहयोग देवें। आपके द्वारा की गई कार्यवाही से कृपया महामंत्री कार्यालय को सूचित करने का कष्ट करें।

◆◆◆

अध्यक्षीय संदेश

आध्यात्म यात्रा शिविर

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

परिषद के प्रणेता स्व. राष्ट्रसंत युग प्रभावक श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने अपने जीवन के सन्ध्याकाल में धार्मिक शिक्षा को भावी पीढ़ी में प्रभावशाली बनाने के लिये पूर्ण प्रयत्न करने का निर्देश दिया था। उसके परिपालन में परिषद ने पूरे गत वर्ष में सूत्र कण्ठस्थ योजना को कार्यान्वित कर पर्याप्त परिणाम प्राप्त किया। उस योजना की काफी प्रशंसा हुई। इस योजना के प्रायोजक स्व. विजयाबहिन बच्चुभाई चिमनलाल धरू थे तथा उनकी भावना को परिषद ने साकार किया।

इस वर्ष उसी क्रम को अग्रशील करने के लिये आध्यात्म शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। ये शिविर पाठशालाओं के माध्यम से द्विदिवसीय संचालित किये जा रहे हैं। इन शिविरों के उद्देश्य नई पीढ़ी को पूजा, प्रतिक्रमण, भक्ति, योग तथा अभिषेक का प्रत्यक्ष प्रशिक्षण देना तथा उन्हें सही रीति, विधि से अवगत कराना है। साथ ही जैन इतिहास, गुरु परम्परा आदि विषयों का अध्ययन भी करवाया जा रहा है। इन आध्यात्मिक शिविरों को संचालित किये जाने तथा प्रशिक्षित करने का दायित्व निर्वहित करने के लिये श्रद्धावान युवाओं को तैयार किया गया है। वे मालवा के नगरों में पहुंचकर अपनी पीढ़ी के साथियों को स्नेह सूत्रों में प्रविष्ठ कर रहे हैं। इस योजना के इस वर्ष के लाभार्थी स्व. अलका बहिन भारतभाई वाघजीभाई वोरा हैं जो परिषद के राष्ट्रीय शिक्षामंत्री के परिवार से सम्बद्ध हैं।

इस आध्यात्म यात्रा शिविरों के प्रथम चरण में पांच नगरों इंदौर, बड़नगर, राणापुर, लाबरिया तथा दसाई पर यह आयोजन किया जा चुका है। प्रत्येक स्थान पर प्रशिक्षित युवाओं ने धर्म जागृति की मशान प्रज्जवलित की है। परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने भी दौरा कर कार्यक्रम को सुदृढ़ किया है। प्रसन्नता है कि परिषद का यह प्रयोग सफलता प्राप्त कर रहा है।

आशा है सभी परिषद शाखाएँ इस दिशा में सक्रिय होकर पुण्य सम्राट के स्वप्नों को कार्यान्वित करने में योगदान करेंगी। धार्मिक शिक्षा से नई पीढ़ी को परिपक्व करने में किसी भी शाखा/पाठशाला/ श्रीसंघ को कोई कठिनाई हो तो कृपया सम्पर्क कीजिये।

– जय जिनेन्द्र

◆◆◆

ज्वाजल्यमयी था तीर्थंकर श्री महावीर का केवल्य

(श्री शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

सुधर्मा स्वामी फरमाते हैं- 'से पव्वए सद्दमहप्प गासे।' वह सुमेरू पर्वत, सद्दमहप्पगासे- शब्द महाप्रकाश अर्थात अनेक नामों से प्रसिद्ध है, वैसे ही भगवान महावीर भी अनेक नामों- वीर, महावीर, वर्धमान, सन्मति, वैशालिक, ज्ञातपुत्र, त्रिशलानंदन आदि कई नामों से पुकारे जाकर विभिन्न गुणों को विस्तारित करते हैं।

बचपन में साहसी वर्धमान बच्चों के साथ खेल रहे थे। इस बात की चर्चा देवलोक में चली। एक देव परीक्षा लेने को क्रीड़ा स्थल पर आकर सांप का रूप बनाकर बच्चों को डराने लगा। वर्धमान को छोड़कर शेष बच्चे डरकर भाग गये। नियमानुसार देव हारने पर वर्धमान उसकी पीठ पर बैठकर देव बड़ा रूप बनाकर आसमां को छूने लगा तो वर्धमान ने जान लिया कि यह देव है। वर्धमान ने उसकी पीठ पर मुक्के का वार किया। देव असली रूप में आकर क्षमा मांगने लगा। इस वीरता की देव सहित सभी ने प्रशंसा की और भगवान का नाम 'वीर' हो गया। संगम द्वारा भगवान महावीर को छे मास तक घोर उपसर्ग दिये। इन्द्र की आत्मा भी लोमहर्षक उपसर्गों की बौछारों से काँप गई और 'महावीर' नाम से उपमित किया।

माँ की कुक्षी में पदार्पण करते ही राज भण्डार में ऋद्धि, सिद्धि, समृद्धि दिन दूनी और रात चौगुनी वृद्धि होने लगी इससे आपका नाम 'वर्धमान' रखा गया।

बचपन (छुटपन) में पार्श्वनाथ भगवान के दो शिष्य संजय-विजय को मन में तत्व को लेकर उठी शंका का समाधान भगवान के महल में पहुँचकर झरोखे से भगवान का मुख का आभामण्डल देखते ही हो गया। प्रभु 'सन्मति' नाम से जाना जाने लगा।

इसी तरह वैशाली के होने से वैशालिक, ज्ञातवंशी होने से 'ज्ञात पुत्र', त्रिशला के पुत्र होने से 'त्रिशलानंदन' पुकारे जाने लगे।

भगवान महावीर ने संयम व्रत का पालन दोषों से मुक्त विशुद्धि से किया उन पर परिषह उपसर्ग आये लेकिन कभी विचलित नहीं हुए। इस तरह वह 'विरायई कंचणमट्ठवण्णे' स्वर्ण मेरू के समान चिकने शुद्ध वर्ण से शोभायमान

रहे।

वीर भगवन्त की ओजस्वी, दिव्य ध्वनि दूर- दूरन्त तक श्रोताओं को लाभान्वित करती थी। जो एक योजन तक बिना बाधा सुनाई देती थी। इसके अतिरिक्त भगवान महावीर दुर्गम मेखलाओं एवं उपपर्वतों की तरह अनेकांत की गहन भंगावलियों के कारण तथा गौतमादि अन्तेवासियों के कारण वादियों के लिये दुर्गम और अजेय थे। 'अणुत्तरे' गिरिसु य पव्वदुग्गे पुच्छिंसुणं- मंगल- महामंगल' में यह सुधर्मा स्वामी ने कहा है। 'गिरिवरे से जलिए व भोमे' जिस प्रकार गिरिवर अनेकों वृक्षों के समूह से दैप्यमान है। इसी प्रकार प्रभु वीर भगवान की आत्मा भी अनंत गुणों से दैदीप्यमान थी। आभामण्डल की तेजस्वीता से वादी-प्रतिवादी नतमस्तक हो जाते थे। मिथ्यादृष्टियों की आत्मा सम्यक्त्व से जगमगा उठती थी। उनकी निश्रा में रहने वाले ग्यारह गणधर, सैंकड़ों लब्धिधर तप संयमी त्यागी वैराग्य से भावित हो जाते थे। प्रभु के केवल ज्ञान के प्रकाश में स्वयं तो प्रतिभाषित थे ही, लोकालोक के सभी उनके केवल्य में ज्वाजल्यमान रहते थे।

◆◆◆

श्रवण क्रिया के मुख्य सूत्र

श्रमण क्रिया के मुख्य सूत्र विवेचनकार- जैनाचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेन सूरीश्वरजी म., प्रकाशक- दिव्य संदेश प्रकाशन ठि. सुरेन्द्र जैन, 205 सोना चेम्बर्स, 507-509 जे.एस.एस. रोड़, चीरा बाजार, सोनापुरगली के सामने, मरीन लाईन्स (ई), मुंबई 400002, मो. 9892069330, आवृत्ति- प्रथम, मूल्य - 200 रुपये, पृष्ठ -230, पक्की बाइण्डिंग, बहुरंगी कव्हर- पृष्ठ, मुद्रक- शुभम मो. 9833835899, छपाई- सफाई-ठीक।

तीर्थंकर श्री महावीर देव के शासन में चतुर्विध संघ के लिये प्रातः व शाम छह आवश्यक की आराधना अनिवार्य मानी गई है। साधु-साध्वी तथा श्रावक-श्राविका के लिये क्रियाओं में प्रयुक्त सूत्र समान हैं लेकिन कुछ सूत्रों में अंतर है। साधु-साध्वी के लिये इन भिन्न सूत्रों को अर्थ तथा भावार्थ सहित इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया है। श्री करेमि भंते से संथारा पोरसी तक ऐसे ग्यारह सूत्रों का विवेचन इसमें है जो श्रमण वर्ग के लिये काफी उपयोगी है। हिन्दी में ऐसी पुस्तकों का अभाव है, इस रिक्तता की पूर्ति यह ग्रंथ करता है। आचार्यश्री का प्रयास प्रशंसनीय है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

प्रवचन

अशुभ वचनयोग (34)

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

अर्थात् सदा दुष्ट भाषा का परित्याग करना चाहिए।

दुष्टों जैसी भाषा दुष्ट भाषा है और दूषित भाषा भी। दोनों त्याज्य हैं। क्यों ? इसलिए कि-

वाया दुरुत्ताणि दुरुद्धराणि वेराणुवंधीणि महब्भयाणि ।। -दशवैकालिक

मुँह से निकले दुर्वचन चुभे हुए काँटों की तरह कठिनाई से निकाले जा पाते हैं, शत्रुता (बैर) को स्थायी बनाने वाले होते हैं और महान भय के उत्पादक होते हैं।

हल्के- भारी में विवेक रखने की सलाह देते हुए एक कवि ने अपने एक दोहे में कहा है-

'चन्दन' तन हलका भला मन हलका सुखकार ।
पर हलके अच्छे नहीं वाणी अरु व्यवहार ।।

शरीर और मन हल्के हो तो सुख देते हैं, परन्तु वाणी और व्यवहार हल्के अच्छे नहीं होते। कैसी वाणी बोलने योग्य नहीं होती ? यह जानने के लिये प्रभु महावीर ने एक महत्त्वपूर्ण सूत्र दिया है-

जं वइत्ता अणुतप्पइ तं न वत्तव्वं ।।

जिसे बोलने के बाद पछताना पड़े, वैसी बात नहीं बोलनी चाहिए।

जिस वाणी से दूसरों का विश्वास उठ जाय, दूसरों को गुस्सा आ जाय और उनका अहित होता हो- उनका काम बिगड़ जाता हो, ऐसी वाणी कभी नहीं बोलनी चाहिए-

'अप्पत्तियं जेण सिया आसु कुप्पिज्ज वा परे।
सव्व सो तं न भासिज्जा भासं अहियगाभिणीं ।। —दशवैकालिक 8/48

छह प्रकार के अवचनों की ओर संकेत करते हुए 'स्थानांगसूत्र' में लिखा है-

इमाइं छ अवयणाइं न वदित्तए- अलियवयणे, हीलियवयणे, खिंसियवयणे, फरुसवयणे, गारत्थियवयणे, विउसवितं वा पुणो उदीरित्तए।।

छह प्रकार के वचन बोलने योग्य नहीं होते - (1) आलीक वचन (2) तिरस्कार करने वाले वचन (3) क्रोध से कहे गए वचन (4) कठोर वचन (5) साधारण मनुष्यों की तरह कहे गए अविचारपूर्ण वचन और (6) शान्त कलह को पुनः उभारने वाले वचन ।

अवचन का पहला प्रकार है- अलीकवचन। इसका मतलब है- असत्य या झूठा वचन। काठ की हाँडी जैसे दूसरी बार चूल्हे पर नहीं चढ़ सकती, क्योंकि पहली बार में ही जल जाती है, उसी प्रकार झूठ भी पहली बार भले ही चल जाय, दूसरी बार उसकी दाल नहीं गल सकती। जब एक बार पता लग जाता है कि अमुक व्यक्ति झूठ बोल रहा था तो वह सदा के लिए लोगों का विश्वास खो देता है। झूठ की उम्र लम्बी नहीं होती, यह सदा ध्यान में रखना चाहिए।

कब तक देंगे काम ये झूठ तुम्हारे बोल।
आज नहीं तो कल यहाँ खुल जायेगी पोल।। —सत्येश्वरगीता

सच्चे व्यक्ति के दिल में पाप नहीं पनपता। कहा है-

सत्य वचन बोलो सदा छोड़ो कपट-कलाप ।
कभी पनप सकता नहीं सच्चे के दिल पाप ।। —सत्येश्वरगीता

एक बात और ध्यान में रखने योग्य है कि सत्य कभी अहिंसा के विरोध में न हो, अन्यथा सत्य भी असत्य हो जाएगा । कहा है-

तहेव फरूसा भाषा जा य भूओवघाइणी ।

सच्चावि सा न वत्तव्या जओ पावस्स आगमो ।। –दशवैकालिक 7/11

उसी प्रकार जीवों का घात (हिंसा) करने वाली कठोर भाषा सच्ची हो तो भी नहीं बोलनी चाहिए, क्योंकि उससे पाप लगता है।

दशवैकालिक सूत्र में दो नियम और बताए गए हैं बोलने के। एक तो यह कि बिना पूछे न बोला जाए और दूसरा यह कि किसी की बात पूरी होने के बाद ही बोला जाए, बीच में नहीं।

अपुच्छिओ न भासिज्जा भासणस्स अंतरा ।। –दशवैकालिक 8/47

बिना पूछे बोलने वाला बकवादी कहलाता है। उसकी बात कोई सुनना नहीं चाहता। पूछने पर बोलने वाले की बात ध्यान से सुनी जाती है। इसी प्रकार बोलने वाले की बात बीच में काटना अथवा पूरी बात सुने बिना बोलना, अपनी अधीरता और असभ्यता का परिचायक है।

पूछने पर बोलने वाला पूछने वाले की जिज्ञासा शान्त करता है, प्रश्न का उत्तर देता है, शंका का समाधान करता है। वह उतना ही बोलता है, जिससे सुनने वाला सन्तुष्ट हो जाय, इसलिए बोलने का यह नियम सबके लिए उपयोगी है, उपादेय है। (क्रमशः)

◆◆◆

प्र. मुक्त जीवों की गति कौन सी होती है ?

उ. अविग्रहा जीवस्य। मुक्त जीवों की गति विग्रह रहित अर्थात् सीधी होती है ।

प्र. संसारी जीवों की गति कैसी होती है ?

उ. विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः संसारी जीवों की गति कुटिल और सीधी दोनों ही प्रकार की होती है।

प्र. अविग्रहागति से क्या अभिप्राय है ?

उ. मोड़ रहित गति अविग्रहागति कहलाती है ।

प्र. अविग्रहागति कितने समय की होती है ?

उ. एक समयाऽविग्रहाः अविग्रहा (मोड़ रहित) गति एक समय मात्र होती है ।

प्र. विग्रहगति में जीव आहारक होता है या अनाहारक ?

उ. विग्रहगति में जीव एक, दो अथवा तीन समय तक अनाहारक रहता है।

प्रश्नोत्तरी

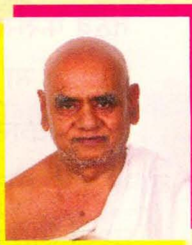

घाती कर्म के भेद कौन से ?

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्न -अघाती कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर- जो आत्मा के स्वाभाविक गुणों का नाश न करे, उसे अघाती कर्म कहते हैं।

प्रश्न -सर्वघाती कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर-जो जीव के स्वाभाविक का संपूर्ण रीति से घात करे, उसे सर्व घाती कर्म कहते हैं।

प्रश्न -देशघाती कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर-जो जीव के स्वाभाविक गुणों का कम से कम एक देश से घात करे उसे देशघाती कर्म कहते हैं ।

प्रश्न -घाती कर्म के कितने भेद हैं?

उत्तर-घाती कर्म के चार भेद हैं- 1. ज्ञानावरणीय, 2. दर्शनावरणीय, 3. मोहनीय और 4. अन्तराय ।

प्रश्न -अघाती कर्म के कितने भेद हैं?

उत्तर- अघाती कर्म के चार भेद हैं- 1. वेदनीय, 2. आयु, 3. नाम 4. गौत्र ।

प्रश्न - सर्वघाती कर्म की प्रकृतियाँ कितनी हैं ?

उत्तर- बीस हैं- 1. केवल ज्ञानावरणीय, 2. केवल दर्शनावरणीय, पाँच प्रकार की निद्रा, चार अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, चार अप्रत्या-ख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, चार प्रत्याख्यानावरणीय क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व मोहनीये 20।

प्रश्न- देशघाती प्रकृतियाँ कितनी हैं?

उत्तर- छब्बीस है- 1. मतिज्ञाना-वरणीय, 2. श्रुतज्ञानावरणीय,
3. अवधिज्ञानावरणीय,
4. मनः. पर्यवज्ञानावरणीय,
5. चक्षुदर्शनावरणीय,
6. अचक्षुदर्शनावरणीय, 7. अवधि दर्शनावरणीय संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ, नोकषाय, सम्यक्त्व मोहनीय और पाँच प्रकार के अन्तराय।

उत्तम आहार-शाकाहार-29

सुखी समाज के लिये गुणवान नागरिक

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

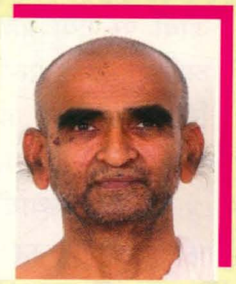

मनुष्य समाज को गिराने वाली अनेक दुष्प्रवृत्तियाँ हैं, पर मांसाहार उनमें से सबसे अधिक घृणित है, इससे मनुष्य में निष्ठुरता, क्रूरता, निर्दयता, स्वार्थ साधन आदि समाज विरोधी प्रवृत्तियों की अभिवृद्धि होती है, मांसाहार से करूणा, दया, क्षमा, संवेदना, सहानुभूति तथा सौहार्द जैसे आध्यात्मिक गुण नष्ट हो जाते हैं और मांसाहार सेवन करने वाले व्यक्ति अपने स्वाद एवं स्वार्थ के लिए बड़े से बड़ा अपराध करने में भी कदापि संकोच नहीं करते, जिस समाज में ऐसे अनात्मवादी एवं मांसाहारी व्यक्ति विद्यमान हों, उनमें मानवता के गुणों की अभिवृद्धि की आशा कैसे की जा सकती है? वैज्ञानिकों का कहना है कि मांस भोजन मानवता की स्थापना एवं स्थिरता के लिए एक बहुत बड़ी बाधा है, यह सभी जानते हैं कि एक सुखी समाज के लिए स्वस्थ गुणों के नागरिकों का होना अत्यन्त आवश्यक है, व्यक्ति का सद्गुणी होना उसके आंतरिक सदाचार पर निर्भर है अर्थात् सभ्य एवं स्वस्थ समाज की रचना तभी हो सकती है जब लोगों के मन स्वच्छ हों। यह बात भारतीय ऋषिमुनियों ने इस बात को बहुत पहले ही अच्छी तरह जान लिया था कि मन और कुछ नहीं अन्न या आहार का सूक्ष्म संस्कार मात्र है इसलिए उन्होंने आहार की सात्विकता पर बहुत जोर दिया है, उनके अनुसार मनुष्य के आहार का जो गुण होगा, उसके मन में भी वैसे ही गुणों का, विचारों का जन्म होगा और जैसे लोगों के विचार होंगे, आचरण भी वैसे ही होंगे, इस समग्र जानकारी के बाद ही स्वच्छ सात्विक आहार ग्रहण करने की आवश्यकता का प्रतिपादन किया गया था और भोजन व्यवस्था को अनेक कड़े नियमों से प्रतिबंधित कर दिया गया था।

आहार के मानवी मनोवृत्तियों तथा मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव पर अनुसंधान कर यह निष्कर्ष निकाला है कि मांसाहार से मनुष्य की मनोवृत्तियाँ क्रूर, दुस्साहसी, निर्दय और निष्ठुर बन जाती हैं, इन दुर्गुणों की अभिवृद्धि से समाज भी निश्चित रूप से प्रभावित होता है, जो व्यक्ति मांस के टुकड़ों के लिए

जीवों पर दया नहीं कर सकता है, वह व्यक्ति अपनी पत्नी एवं बच्चों के प्रति कितना दयालु होगा कहा नहीं जा सकता।

मांसाहार स्थायी स्वास्थ्य की समस्या का हल नहीं कर सकता, उससे अनेक शारीरिक- मानसिक बीमारियाँ उपजती हैं।

वैज्ञानिकों ने शाकाहारी एवं मांस खाने वाले हजारों व्यक्तियों का परीक्षण किया, उनका कहना है कि ऐसे अनेक व्यक्ति थे जो मांसाहार त्याग कर शाकाहारी बन जाने से पहले की अपेक्षा अधिक स्वस्थ हो गये तथा कब्ज, एसीडिटी, गठिया आदि रोगों से छुटकारा पा गए। अतः हम कह सकते हैं कि मांसाहार सेवन करने से शरीर के नाश के सिवाय और कुछ प्राप्त नहीं होता है, अतः हमें मांसाहार को जड़ से समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए तथा लोगों को शाकाहार सेवन करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

(क्रमशः) ◆◆◆

पुस्तक समीक्षा

समयसार पर अभिनव शोधग्रंथ

आचार्य कुंदकुंद विरचित समयसार एक प्रसिद्ध आध्यात्मिक व दार्शनिक ग्रंथ है। प्राकृत भाषा के इस प्राचीन ग्रंथ पर अनेक विवेचन और व्याख्यान हुए हैं। अब इसमें अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग का सरल व सटीक विवेचन भी जुड़ गया है। उनके द्वारा समयसार पर लिखित शोध-प्रबंध का नाम है- 'समय और समयसार।' उन्होंने पाँच अध्यायों के बीस परिच्छेदों में समयसार का विश्लेषणात्मक और समीक्षात्मक परिशीलन किया है। इस शोधपूर्ण और बोधपूर्ण लेखन में अनेक नई दृष्टियाँ और नये सन्दर्भ हैं।

इस अनुसंधानपरक लेखन में संभवतः पहली बार श्वेताम्बर आगमों व ग्रंथों के प्रचुर सन्दर्भ भी दिये गये हैं। जैनविद्या मनीषी डॉ. दिलीप धींग के बहुआयामी और सम्प्रदायमुक्त विवेचन से यह शोधग्रंथ सबके लिए सदैव पठनीय, मननीय और संग्रहणीय बन गया है। रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलाजी (सुगन हाउस, 18 रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई 600001) द्वारा प्रकाशित यह 360 पृष्ठीय ग्रंथ 40 प्रतिशत छूट के साथ मात्र तीन सौ रुपये में उपलब्ध है।

- डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया
(महासचिवः रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलोजी)

जिनशासन की वर्णमाला

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

अ. अष्टापद तीर्थ- 'जो तारे वह तीर्थ।' इस तीर्थ पर आठ चढ़ाव हैं इसलिए अष्टापद तीर्थ कहलाता है।

इस तीर्थ पर भगवान आदिनाथ का मोक्ष कल्याणक हुआ था। यहाँ पर सारी प्रतिमा रत्नों की हैं। गिरते हुए वर्तमान काल को देखकर सगर चक्रवर्ती के 60, 000 पुत्रों ने इस तीर्थ के चारों ओर बहुत गहरी खाई खोदी जिससे वहाँ पर कोई नहीं जा सके। गौतम स्वामी ने स्वलब्धि से अष्टापद तीर्थ की यात्रा की और 1500 तापस को भी करवाई। इस तीर्थ पर गौतमस्वामी ने जगचिंतामणी सूत्र की रचना करी। इस तीर्थ की यह विशेषता है कि सभी प्रतिमाएँ भगवान के शरीर के प्रमाण अनुसार है फिर भी नाक सभी भगवान के एक लेवल में है। यह तीर्थ बैठे हुए सिंह आकार में है। इसलिए इसका नाम सिंहनिषधा रखने में आया। रावण ने इस तीर्थ पर भक्ति करके तीर्थंकर नामकर्म का बंध किया।

आ. आत्मा :- जिसके द्वारा जाना जाए, देखा जाए ।

मैं कौन हूँ ??? मैं शरीर से भिन्न आत्मा हूँ। आत्मा अजर-अमर अविनाशी है। आत्मा नित्य है, आत्मा कर्म की कर्ता है, भोक्ता है। आत्मा अरूपी है। आत्मा में अनंत शक्ति है। आत्मा में अनन्त आनंद है। आत्मा का जन्म-मरण नहीं होता है। प्रत्येक भव्यात्मा कर्मों से मुक्त होकर परमात्मा बन सकती है।

इ- इन्द्र- असंख्य देवों का अधिपति (स्वामी)

जब भगवान का जन्म होता है तब इन्द्र महाराजा भगवान को मेरूपर्वत पर लाकर उनके चरण पादुका पर अभिषेक करते हैं। इन्द्र 64 होते हैं। सभी इन्द्र सम्यग्दृष्टि होते हैं। सोने के, रूपे के आदि बड़े-बड़े कलशों से अभिषेक करते हैं। लगभग एक - एक कलश 12 योजन का होता है। बड़ी-बड़ी नदियों से अभिषेक हेतु पानी लाते हैं और बड़े ही उत्साह और उल्लास से प्रभु का अभिषेक करते हैं। इन्द्र प्रभु का अभिषेक 160, 000, 00 कलशों से करते हैं।

ई. ईक्षुरस गन्ने का रस।

प्रभु आदिनाथ रोज गोचरी के लिए निकलते थे। एक वर्ष तक गोचरी के लिए घूमे। गोचरी नहीं मिलने पर 400 दिन तक चौविहार उपवास हो गए। साधु के लिए एक कहावत है- ' गोचरी मिले

तो संयम वृद्धि, नहीं मिले तो तपोवृद्धि। एक बार भगवान के पौत्र श्रेयांसकुमार को जाति स्मरण ज्ञान हुआ और गोचरी वोहराने की विधि का ज्ञात हुआ। तब उन्होंने निर्दोष 108 घड़े गन्ने के रस से प्रभु का पारणा करवाया था। आज सभी लोग वर्षीतप की तपस्या करते हैं और इक्षुरस से पारणा करते हैं।

उ- उपधान

उपधान अर्थात् असंयम से संयम तक प्रयाण अनाचार से आचार की ओर प्रयाण -- भोग से त्याग की तरफ प्रयाण-- । गण- भगवान द्वारा रचित नवकार आदि सूत्रों की योग्यता और अधिकार प्राप्त करने का अनुष्ठान उपधान तप।

प्रथम उपधान के 47 दिन होते हैं। एक दिवस के पौषध की 30 सामायिक होते हैं। 47 x30 = 1410 सामायिक। बहोत्तेर हजार अजब मण सोनु सात क्षेत्रमां वापरने से जो लाभ मिलता है उतना लाभ एक सामायिक से प्राप्त होता है उपधान तप के 47 दिवस के 1410 सामायिक से 10 करोड़ अजब, 15 लाख अजब, 20 हजार अजब मण सोनु 7 क्षेत्र में वापरने जितना लाभ सहजता से मिल जाता है करोड़ वर्ष के अशुभ कर्मों का नाश होता है और 47 दिनों तक सारे पाप व्यापार से निवृत होकर साधुता का आनंद प्राप्त होता है।

ऊ- ॐ - इस अक्षर में पाँचों परमेष्ठी का समावेश हो जाता है। अ+अ+आ+उ+म । अ= अरिहंत, अ= अशरीरी, आ= आचार्य, उ= उपाध्याय, म = मुनि । पाँचों परमेष्ठी का भाव से स्मरण करने पर सभी पापों का नाश हो जाता है और दुर्गति प्राप्त नहीं होती है। पाँचों परमेष्ठी का समावेश नमस्कार मंत्र में है। यह सब मंगलों में प्रथम मंगल है। शाश्वत मंत्र है। इस मंत्र के द्वारा तीनों काल के पाँचों परमेष्ठी की वंदना हो जाती है।

ए- ऐं - ज्ञानवृद्धि का यह एक श्रेष्ठ मंत्र है। इस मंत्र का जाप करने से ज्ञानावरणीय कर्म हल्के होते हैं। बुद्धि तीव्र होती है। याद जल्दी होता है और भूलते नहीं हैं। शुद्ध वस्त्र पहनकर, शुद्ध आसन बिछाकर, फिक्स टाईम पर, ज्ञान मुद्रा में जाप करने से अधिक लाभ मिलता है। प्रतिदिन 108 बार इस मंत्र का जाप करना चाहिए। ◆◆◆

धर्म की अनन्यता में अनंत शाश्वतत्ता का प्रतीक

शाश्वत धर्म पत्रिका आपके पोस्टल अड्रेस पर भेजी जायेगी

आप सभी से यह निवेदन है यह पत्रिका जरूर मंगवाइए

पत्रिका का शुल्क 10 वर्ष का सिर्फ 1100/- रूपए है

निवेदन : श्री सौधर्म बृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के घर-घर में शाश्वत धर्म पत्रिका होनी चाहिए ।

पत्रिका बुकिंग : शाश्वत धर्म पत्रिका
(गुजरात प्रतिनिधि)
विपुलकुमार बाबूलाल दोशी (जेतडा वाले)
9427969984, 84012 35001

देवद्रव्य भक्षण एक महादोष

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

संसार में प्रत्येक प्राणी सुखी होना चाहता है, और रात-दिन सुखी होने का ही प्रयास करता है, किन्तु आज तक कोई भी इस संसार में पूर्ण सुखी नहीं हो पाया या दुःख से मुक्त नहीं हो पाया, क्योंकि संसार दुःख का ही पर्याय है। दुःख मुक्ति का उपाय है। भव-भ्रमण से मुक्ति एवं भव - भ्रमण से मुक्ति का एक ही श्रेष्ठ उपाय है- जो इस भव भ्रमण से मुक्त हो गए ऐसे देव अर्थात् अरिहंत परमात्मा एवं सिद्ध परमात्मा की भक्ति करना। यह भक्ति अनेक प्रकार की होती है। देव तत्त्व के प्रति अत्यंत अहोभाव उनकी आज्ञा का पालन, जिनमंदिर, जिन प्रतिमा की सुरक्षा उनका निर्माण करना कराना आदि।

यदि जिनमंदिर का निर्माण करवाने का सामर्थ्य न हो तो कम से कम देव द्रव्य की सुरक्षा करके, देवद्रव्य की वृद्धि करने में सहभागी बनकर भी परमात्मा की भक्ति कर सकते हैं। देव तत्व का हमारे ऊपर अनन्त उपकार है। क्योंकि सिद्ध परमात्मा के कारण हम निगोद में से बाहर निकल पाए एवं अरिहंत परमात्मा ने हमें मोक्षमार्ग का उपदेश दिया। संपूर्ण सुख, शाश्वत सुख पाने का उपाय बताया है। इसलिए संप्रति महाराजा ने जीवन पर्यंत सवालाख जैन मंदिर, सवा करोड़ नई प्रतिमा, तेरह हजार जिनमंदिरों का जिर्णोद्धार एवं 700 दानशालाएँ आदि निर्माण कार्य करवाए।

वर्तमान में भरत क्षेत्र में साक्षात् जिनेश्वर परमात्मा (भाव निक्षेप) का अभाव है, अतः जिनप्रतिमा (स्थापना निक्षेप) का आलम्बन लेकर के क्रोड़ों भव्य आत्माएँ सम्यग्दर्शन को प्राप्त करती हैं एवं सम्यग्दर्शन अर्थात् मोक्ष में जाने का रिजर्वेशन टिकट। यदि हम जिनालय या जिनप्रतिमा बनाने में सक्षम नहीं हैं किन्तु आज तक जिनकी मदद से जगततारक जिनालय एवं जिन प्रतिमा सुरक्षित हैं ऐसे देव द्रव्य का संरक्षण, संवर्धन और उचित उपयोग करके जगत के सर्व जीवों का कल्याण कर सकते हैं। इसलिए संबोधसत्तरि ग्रंथ में कहा है-

'रक्खंतो जिणदव्वं तित्थयरत्तं लहई जीवो' अर्थात् देवद्रव्य का रक्षण करने वाला जीव तीर्थंकर पणे को प्राप्त होता है, भविष्य में तीर्थंकर बनता है। इसके विपरीत देवद्रव्य का भक्षण करता है तो कहा है -

''जिणणवयण वुड्ढिकरं, पभावगं नाणदंसणगुणाणं,

भक्खंतो जिणदव्वं, अणंत संसारिओ होई''।

अर्थात- जैन शासन की वृद्धि करने वाला ज्ञान दर्शन और चारित्र रूप गुणों की प्रभावना करने वाला ऐसा जीव भी यदि देवद्रव्य का भक्षण करता है तो अनंतकाल संसार के दुःखों से पीड़ाता है। अतः देव- द्रव्य रक्षण हमारा परम कर्तव्य है।

परमात्मा की भक्ति से प्रेरित होकर प्रतिष्ठा- पर्युषण आदि में लाखों करोड़ों की बोलियाँ लगती हैं यह बहुत आनंद की बात है परन्तु विशिष्ठ बात यह है कि बोली बोलने के बाद राशि शीघ्रातिशीघ्र जमा हो जानी चाहिए।

रुपए भरने में जितना लेट होते हैं, उतनी देवद्रव्य की संपत्ति स्वयं के घर में रखने का दोष लगता है और देव द्रव्य भक्षण कितना बड़ा दोष है, पाप है यह संबोधसत्तरि ग्रंथ की गाथा से पता चलता है-

''चेइयदव्वविणासे रिसिघाए पवयणस्स उड्डहो,

संजई चउत्थभंगे, मूलग्गी बोहिलाभस्स ।। ''

इसमें चार महादोष बताए हैं - 1. देवद्रव्य का विनाश, 2. मुनि की हत्या , 3. उन्मार्ग की प्ररूपणा 4. साध्वी का शीलभंग इनमें से कोई भी एक दोष सेवन करने वाला जीव समकित लाभ के मूल में अंगारे रखता है। अर्थात् संसार के दुखों से उसको मुक्ति नहीं मिलती है।

उपदेश प्रसाद ग्रंथ में देवद्रव्य का भक्षण करने वाले को जो दुःख भोगने पड़ते हैं उसका वर्णन करते हुए दृष्यंत दिया है-

सागर श्रेष्ठि ने साढ़े बारह रुपये का देव द्रव्य का भक्षण किया, जिससे वे अंडगोलिक मनुष्य बने तीसरी नरक में गए, मछली बने, चौथी नरक में गए, सातवीं नरक में दो बार गये, फिर 1-1 हजार भव कुत्ते के, सुवर, बकरा, गाडर, हिरण, खरगोश, साबर, शियाल, बिल्ली चूहे, गिलहरी, उल्लु एवं साँप को हुए फिर हजारों भव विकलेन्द्रिय के हुए इस प्रकार लाखों भव संसार में परिभ्रमण किया। फिर मनुष्य भव में गर्भ में थे तो पिता की सम्पत्ति लुटा गई, जन्मते पिता की मृत्यु हो गई। जहाँ जाते वहाँ आश्रयदाता को नुकसान होता इस प्रकार 999 बार हुआ।

इस दृष्टांत को पढ़कर सुनकर श्रावक को इतना हो ही जाता है कि जिन्दगी में कभी देवद्रव्य भक्षण का पाप नहीं करना।

चढ़ावे बोलने के बाद रकम भरने में देर करते हैं, आयु का कोई भरोसा नहीं और इस बीच यदि मृत्यु हो जाए एवं पुत्रादि अन्य कोई रुपए भरे नहीं तो सिर पर देना रह जाता है तो इसका फल पूर्व में बताए दृष्टांत जैसा ही भोगना पड़ता है।

देव द्रव्य की व्याख्या क्या ?

जिनेश्वरों की भक्ति, पूजा, बहुमान के लिए, आराधना के लिए, शरीर के अंग-उपांग की रचना के लिए एकत्रित कराता द्रव्य वह देवद्रव्य है। (सिद्धचक्र 17/11/33 पृ. 92) प्रभु की अंजनशलाका के मूर्ति भरवाने के, रथयात्रा में प्रभु को लेकर बैठने के, अष्टप्रकारी पूजा के, ध्वजा दंड भरवाने के, महोत्सव में पूजा आंगी एवं आरती के चढ़ावे देव द्रव्य में जाते हैं।

स्वप्न एवं उपधानमाल के चढ़ावे साधारण खाते में जाते हैं। विशेष स्पष्टीकरण के लिए अपने आचार्य भगवन्त से पूछें।

देवद्रव्य के विनाश से कैसे बचें ?

जिस प्रकार चढ़ावे बोलने वाले को रुपये समय से भरना चाहिए। उसी प्रकार संघ के व्यवस्थापकों, ट्रस्टियों को समय से योग्य प्रकार से वापरना भी चाहिये। जीर्णोद्धार में विशेष उपयोग करना चाहिए।

जिन मंदिर के परिसर या देवद्रव्य से लायी गई जैन मंदिर की वस्तुओं का उपयोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपने या संघ के दूसरे कार्यों में नहीं करना चाहिए।

देवद्रव्य की बकाया राशी की वसूली में प्रमाद नहीं करना चाहिए या उसकी उपेक्षा नहीं करना चाहिए।

देव द्रव्य यह भगवान को अर्पण किया गया द्रव्य है । जिस पर केवल जिनेश्वर भगवंत का अधिकार है, इसलिए देवद्रव्य का उपयोग अन्य 6 क्षेत्र में नहीं कर सकते। अतः दैनिक या सामाजिक कर्त्तव्यों में, जीवदया, अनुकंपा, स्कूल, हास्पिटल आदि कोई भी कार्य में नहीं कर सकते हैं।

◆◆◆

प्रवचनकार

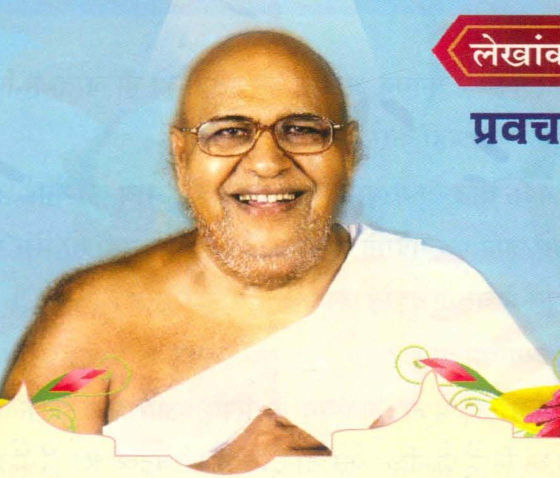

गणधरवाद

(स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

सुधर्मा- स्वभाव मूर्तनहीं, किन्तु अमूर्त है।

महावीर- स्वभाव यदि अमूर्त हो, तो उपकरण रहित होने से उसका शरीर आदि कार्यों का उत्पादक बनना सम्भव नहीं है। जैसे कुम्हार दंड आदि उपकरण के बिना घट का निर्माण नहीं कर सकता, वैसे ही स्वभाव भी उपकरण के बिना शरीरादि का निर्माण नहीं कर सकता। अथवा अमूर्त होने से आकाश की तरह वह कुछ भी नहीं कर सकता।

सौम्य ! दूसरी बात यह भी समझ लो कि शरीरादि कार्य मूर्त है, अतः अमूर्त स्वभाव द्वारा उसका निष्पादन घटित नहीं होता, वैसे ही जैसे अमूर्त आकाश से मूर्त कार्य नहीं होता तथा मूर्त कर्म माने बिना सुख संवेदन आदि भी घटित नहीं होता। इसलिए स्वभाव को अमूर्त भी नहीं माना जा सकता।

सुधर्मा- तो फिर स्वभाव याने निष्कारणता यह दूसरा विकल्प ही उचित प्रतीत होता है ।

महावीर- स्वभाव अर्थात् निष्कारणता मानो, तो भी परभव में सादृश्य कैसे

घटित करोगे ? और यदि सादृश्य में कुछ भी कारण न हो, तो फिर वैसा दृश्य में भी कारण क्यों मानना चाहिए ? अर्थात् सादृश्य की तरह वैसा दृश्य भी निष्कारण हो जाएगा तथा भव का विच्छेद भी बिना कारण क्यों न होगा ? अर्थात् मोक्ष को भी निष्कारण ही मानना चाहिए और यदि कारण के बिना ही शरीरादि की उत्पत्ति हो, तो खर-विषाण की भी उत्पत्ति क्यों नहीं हो जाती ? तथा शरीर आदि का कोई कारण ही न हो, तो उसका प्रतिनियत आकार कैसे होगा ? बादलों की तरह अनियत आकार वाला शरीर उत्पन्न क्यों नहीं होता? इन सभी प्रश्नों का स्पष्टीकरण, समाधान यदि स्वभाव याने अकारणता मानो, तो नहीं हो सकता। इसलिए अकारणता को स्वभाव नहीं माना जा सकता।

सुधर्मा- आर्य ! तब तो वस्तु धर्म को स्वभाव मानना चाहिए ?

महावीर- यदि स्वभाव वस्तु धर्म हो, तो वह सदा एक जैसा नहीं रह सकता। अतः वह सदैव शरीरादि की सदृशता कैसे उत्पन्न कर सकता है ?

सुधर्मा- वस्तु धर्म रूप स्वभाव सदैव सदृश क्यों नहीं कर सकता ?

महावीर- उसका कारण यह है कि वस्तु की पर्यायें उत्पाद स्थिति- भंग रूप विचित्र होती है, इसलिए वे सदा सदृश ही नहीं रह सकतीं। क्योंकि वस्तु के नीलादि धर्मों में प्रत्यक्ष से ही अन्य रूप परिणमन सिद्ध है तथा स्वभाव को वस्तु का धर्म तो तुम कहते हो, किन्तु यह तो बताओ कि वह आत्मा का धर्म है या पुद्गल का ? यदि वह आत्मा धर्म हो, तो आकाश की तरह अमूर्त होने से शरीरादि का कारण नहीं बन सकता और यदि वह पुद्गल धर्म हो, तो कर्म का ही दूसरा नाम स्वभाव हुआ, क्योंकि हम तो कर्म का पुद्गलास्तिकाय में समावेश करते हैं।

इसलिए यदि तुम यह मानते हो कि स्वभाव याने पुद्गलमय कमरूप वस्तु का परिणाम अर्थात् धर्म हो और यदि वही इस जगत वैचित्र्य का कारण है, तो इसमें कुछ दोष भी नहीं है, किन्तु यह नहीं मानना चाहिए

कि वह सदा सदृश ही है, लेकिन बजाय इसके यह मानना चाहिए कि मिथ्यात्व आदि हेतुओं से कर्म परिणाम विचित्र बनता है और उसी के फल स्वरूप उसका कार्य भी विचित्र होता है। अर्थात् उसी से परभव में एकान्त सादृश्य ही नहीं, किन्तु वैसा दृश्य को भी सम्भव मानना चाहिए।

वस्तु समान और असमान है

अथवा जब वस्तु का स्वभाव ही ऐसा है कि प्रत्येक क्षण उसमें कितनी ही समान और कितनी ही असमान पर्यायों की उत्पत्ति और विनाश होते रहते हैं और उसका द्रव्यांश तदवस्थ- एक रूप रहता है। इससे वस्तु स्वयं दूसरे क्षण में वैसी ही नहीं रहती, तब क्या एक परभव की बात करते हो अर्थात् पूर्वकाल में वस्तु जिस रूप में होती है, उससे विलक्षण उत्तर काल में बन जाती है। इस प्रकार जब स्वयं की ही समानता नहीं टिकती, तब दूसरे पदार्थों के साथ ही समानता कैसे बनी रह सकती है ? फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि संसार के समस्त पदार्थ सर्वथा असमान नहीं हैं, क्योंकि अस्तित्व आदि कितने ही समान धर्मों के कारण जब संसार की समस्त वस्तुओं के साथ उसका साम्य है, तो अपनी पूर्वकालिक अवस्था के साथ उन समान धर्मों के कारण साम्य होगा ही और विशेष धर्मों के कारण साम्य नहीं होगा इसमें कोई संदेश नहीं है।

◆◆◆

धर्म आत्मा का स्वभाव

महावीर ने धर्म को आत्मा का स्वभाव कहा है। क्षमा, विनय, सरलता और संतोष को धर्म का लक्षण बताया। धर्ममय होने के लिए, दिनचर्या का विधान किया। दिन के चार प्रहर में साधक प्रथम प्रहर में स्वाध्याय, दूसरे में ध्यान करे, फिर एक प्रहर में भिक्षाचार्य और अंतिम प्रहर में स्वाध्याय करे। रात्रि के चार प्रहर में प्रथम प्रहर में स्वाध्याय, दूसरे में ध्यान, फिर एक प्रहर में निद्रा और अंतिम प्रहर में स्वाध्याय करे। इस प्रकार एक दिन - रात के आठ प्रहरों में चार प्रहर स्वाध्याय, दो प्रहर ध्यान और एक प्रहर भोजन और एक प्रहर निद्रा। तब कहीं जीवन धर्ममय हो पाता है।

चिन्तन का चित्रांकण

सर्वत्र जहर फैलाता है-अहंकार

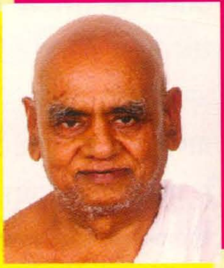

गच्छाधिपति जैनाचार्य
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 14.02.2017

जमाना कहाँ बदलता है ? न बदला है न बदलता है। इंसान अपनी इंसानियत को खो देता है, संस्कार से भटक जाता है, संस्कृति को भूलते जा रहे हैं, पाश्चात्य देश की नकल कर रहे, स्वयं की अकल का अभाव और उन्मत्त नकल करके आजादी का घर जमा रहे, और आचार संहिता कुल की, जाति की, धर्म की संस्कृति से विपरीत गति कर अपन स्वयं को मर्यादा, विनय, विवेक से हटाते जा रहे हैं और जमाना बदल गया ऐसी व्यर्थ बात क्यों करना। सोचें, स्वयं को स्वयं का विचार करें, कौन बदला है।

दिनांक 15.02.2017

व्यसन बड़ा, फैशन बड़ी, इन दोनों ने मार्ग से भटकाये।भटकने के बाद पुनः लाइन पर आना मुश्किल हो रहा। मुश्किल क्यूं ? सब सरल हो सकता है, बस इन दो की जीवन की हर श्वांस से विदाई कर दो, इन दो के जिस दिन देश निकाला हो जाएगा उस दिन से आत्म प्रदेश में परम शान्ति की वर्षा हो जायेगी, हर कदम हर कार्य सरल और सीधा हो जायेगा कोई मुश्किल होगी ही नहीं ।

दिनांक 16.02.2017

मसाला माल का स्वाद बढ़ाता है, मसाले बिना का दूध, साग, सब्जी सब स्वाद में फीके पड़ते हैं, खाने वाले को मजा नहीं आता। स्वाद के पीछे आहार फीका लगता है तो, जीवन में आराधना बिन आनन्द का स्वाद कैसे आयेगा। सोचें, थोड़ा चिन्तन करें आहार स्वाद क्षणिक है, खाने के बाद अल्प समय का स्वाद है इसके पीछे के पीछे जीवन का अमूल्य समय नष्ट कर रहे हैं, अध्यात्म भाव के साथ जीवनोत्थान की सम्यग् आराधना का सच्चा स्वादानुभव करें फिर जीवन का आनन्द पायें।

दिनांक 17.02.2017

विपुल सम्पत्ति विपुल परिवार मिल जाये परन्तु इन सब से हटकर

आत्मा सम्पत्ति का वैभव नहीं पाया तो ये सब शून्य है। दुनिया वाह - वाह करके ऊपर उठा लेगी परन्तु इस दुनिया को प्राणी कब धोखा दे देगा पता नहीं चलेगा। रे पुण्यवान ! जरा सोच ! जीवन को जीवन्त ही बनाना है तो महामंत्र नवकार, अरिहंत परमात्मा और सन्मार्ग दाता सद्गुरु की श्रद्धा में अटल रहना आत्म धन की सर्व विपुलता पा जायेगा।

दिनांक 18.02.2017

इगो ने संघ, समाज, घर-घर में, परिवार में जहर ही जहर पैदा कर दिया। घर - घर में बिखराव हो गया इस अज्ञान रूपी इगो ने धर्म स्थलों की हानि ही हानि करने का पाप बढ़ा दिया।

समाज के इन कर्णधारों ठेकेदारों को अब भी समझना चाहिये। धर्म लज्जित हो रहा, तीर्थ आशातना, वीतराग परमात्मा की भयंकर आशातना के पाप में समाज के आगेवान, कर्णधार, पदाधिकारीगण क्या इसी तरह क्षति पहुंचाने का ही काम करते रहेंगे। पराये घर पर धावा बोलकर कौनसा यहाँ पा लेंगे। सोचें वीतराग वाणी का अनुसरण करें।

दिनांक 19.02.2017

बुद्धिहीन, अज्ञानी, जीव पूर्वा पर का कभी सोचता ही नहीं मर्यादा क्या है ? विनय क्या है ? विवेक क्या है ? ये ज्ञान इन बुद्धि विहीन व्यक्ति में होता ही नहीं। ये बोली में, काम करने में उन्मत्त, उलंट होते हैं। कहाँ क्या बोलना, कब क्या बोलना, कैसे बोलना, किसके सामने बोलना आदि का उपयोग होता ही नहीं। व्यर्थ की बकवास करके आपस में विष उबलाने का काम करते हैं ये बुद्धि के अभाव में ऐसे व्यक्ति से दूर रहना ही जीवन का श्रेय है।

जैन शब्दावली

निर्जीव	-	जीवन के बिना जड़
आराध्य	-	आराधना करने योग्य
शासन	-	भगवान की आज्ञा, धर्म, चतुर्विध श्रीसंघ
गुरु वंदनीय है	-	धर्म समझाने वाले गुरु वन्दन करने योग्य हैं।
अध्यात्मी	-	आत्मचिंतन करने वाले, संसार पर वैराग्य वाले।
योगी	-	आत्मा को जिससे मोक्ष मिले ऐसी दशा में रहने वाले।
यति धर्मों में	-	साधु के पालने के धर्मों में

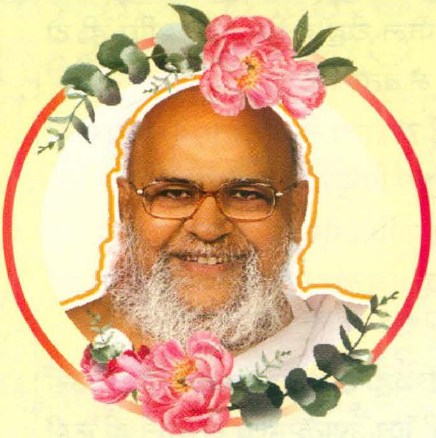

(लेखांक-4)

धारावाहिक उपन्यास

किस्मत की बात

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

'आज आपको कष्ट देने का कारण रानी का स्वप्न है। रानी ने रात्रि के अंतिम प्रहर में एक विचित्र स्वप्न देखा है। हम उसका फल जानने के लिए बेचैन है।' राजा वीरधवल ने बताया। इसी समय रानी पद्मावती ने कक्ष में प्रवेश किया और निमितज्ञ को सादर अभिवादन कर राजा के समीप वाले आसन पर बैठ गई।

'सौभाग्यवती भव ! पुत्रवती भव !' आशीर्वाद देकर निमितज्ञ ने पूछा - 'रानीजी ! बताइए कि आपने स्वप्न में क्या-क्या देखा ?'

रानी पद्मावती ने स्वप्न में जैसा देखा था वैसा ही बता दिया। स्वप्न दर्शन के पश्चात् की अपनी मनोदशा को भी उसने स्पष्ट कर दिया।

'दो- दो चन्द्र ! कुछ आश्चर्य की बात है। देखता हूँ कि इस स्वप्न का फल क्या है ।' निमितज्ञ ने कहा और अपनी पोथी खोलकर कुछ गणना में लीन हो गया। राजा-रानी उसकी ओर औत्सुक्य से देखते रहे।

'राजन ! स्वप्न बहुत शुभ है। बधाई स्वीकार करें।' निमितज्ञ ने कहा और राजा की ओर देखने लगा। शुभ है। बधाई दे रहे हैं किन्तु फल क्या है, बधाई किस बात की ? यह तो बताइए। ' राजा ने अपनी उत्सुकता प्रकट करते हुए कहा।

पंड़ितजी ! कृपया साफ-साफ कहे। विलम्ब करके हमारे धैर्य की परीक्षा न ले।' रानी ने कहा।

'बता रहा हूँ भाग्यवान ! आपने स्वप्न में दो-दो चन्द्रमा मुस्कराकर अपनी ओर आते हुए उन्हें अपनी गोद में समाते देखा।

आपने उन्हें दुलार भी किया। इस स्वप्न का फल यह है कि आप शीघ्र ही दो सुन्दर सलौने पुत्रों की माता बनेगी।' निमितज्ञ ने बताया।

'सच ! पंडितजी ! क्या आप सच कह रहे हैं?' राजा ने प्रसन्नता से पूछा। रानी पद्मावती भी अपने स्वप्न का परिणाम जानकर हर्ष विभोर हो गई थीं।

'राजन् ! यह मैं नहीं कह रहा हूँ। ग्रहों की गति और स्वप्न शास्त्र बता रहा है। मैं तो मात्र मध्यस्थ हूँ। आपने बताया उसके अनुसार गणना करके फल की जानकारी आपको दी।' निमितज्ञ ने कहा।

राजा वीरधवल ने निमितज्ञ को आशा से भी कहीं अधिक पुरस्कार देकर उसे ससम्मान विदा किया। रानी तो इतनी प्रसन्न थी कि उसके मुख से बोल ही नहीं निकल पा रहे थे। राजा वीरधवल अपनी रानी को लेकर उसके कक्ष में आया।

'प्रिये ! हमारी वर्षों की चाह अब पूरी होती लग रही है। अब आज से तुम्हारा राज्य में इधर -उधर भ्रमण करना बंद । अब तुम्हारा यही कर्तव्य है कि तुम कनकपुर की धरोहर की सावधानी से पालना करो।' राजा वीरधवल ने कुछ मुस्कुराते हुए कहा।

'जैसी आपकी आज्ञा।' रानी पद्मावती ने कहा और अपने पर्यंक पर बैठ गई। राजा वीरधवल भी उसके समीप ही बैठ गया। दोनों में इसी विषय पर कुछ देर तक बातचीत होती रही। फिर राजा उठकर राजसभा में चला गया।

दो - तीन माह बीते कि गर्भ के लक्षण प्रकट हो गए। दोहद भी उत्पन्न होने लगे। जिन्हें राजा पूरा करता रहा। एक समय एक दोहद उत्पन्न हुआ कि नदी में तैर-तैर कर काफी समय तक स्नान करूँ। राजा ने रानी को उसकी सेविकाओं के साथ नदी पर पहुंचा दिया। सेविकाओं को सावधान रहने के लिए कह भी दिया। जिस समय रानी पद्मावती ने नदी में स्नानार्थ प्रवेश किया उस समय उसका हृदय प्रसन्न से बल्लियों उछल रहा था। वह तैरना जानती थी फिर भी उसके आसपास सेविकाओं का समूह विद्यमान था और सतर्क भी। रानी पानी में काफी देर तक किलौल करती रही। दोपहर हो गई किन्तु रानी पानी में से निकलने का नाम ही नहीं ले रही थी। तभी एक सेविका ने आकर जोर से कहा- 'स्वामिनी ! यदि आपका स्नान हो गया हो तो महल में पधारिये। महाराज भोजन के लिये आपकी प्रतीक्षा कर रहे है।' (क्रमशः)

तीर्थंकर-तारेश (36)

महाराजा श्रेणिक

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

चेलणा का अपहरण करके श्रेणिक ने अत्यन्त शीघ्र गति से वैशाली की सीमा पार कर दी। रथ में बैठी चेलना बड़ी चिंतित हो रही थी। एक ओर तो श्रेणिक को प्राप्त करने का आनन्द, तो दूसरी ओर बड़ी बहन के साथ एक प्रकार का धोखा करना और अपने माता-पिता की अनुमति के बिना यों किसी भी पुरुष के साथ भाग आना उसे बहुत बुरा लग रहा था, वह अन्दर-ही - अन्दर बहुत दुःखी हो रही थी। वह अपनी भूल पर पछताने लगी और बहन एवं माता-पिता की याद कर जोर-जोर से रोने लगी। श्रेणिक ने इस प्रकार चेलणा को उदासीन देखा, तो बड़े स्नेह के साथ कहा- 'सुन्दरी सुज्येष्ठा ! तुम्हारा मनोइच्छित कार्य पूर्ण हो गया है, फिर आप इतनी उदासीन क्यों हो रही हो ? क्यों रो रही हो?'

यह सुनकर चेलणा को एक झटका और लगा, महाराज श्रेणिक तो मुझे सुज्येष्ठा के भ्रम से ले आये हैं। हाय ! इनको भी धोखा हुआ। चेलणा संभलकर बोली- 'आर्यपुत्र ! लगता है आपके साथ भी धोखा हो गया। मैं सुज्येष्ठा नहीं, बल्कि उसकी छोटी बहन चेलणा हूँ।' श्रेणिक ने चेलणा की अद्‌भुत रूप श्री, उसके मुख को गहराई से देखा और फिर हँसकर बोले- 'देवी ! कभी-कभी ठोकर लगने से भी निदान निकल आते हैं, अगर मेरे साथ यह धोखा भी हुआ तो भी अच्छा ही हुआ जो सुज्येष्ठा से भी अधिक लावण्यमयी रूप लक्ष्मीयुक्त देवी चेलणा की प्राप्ति हुई। लगता है, नियति ने तुम्हारे लिए ही मुझे यहाँ भेजा, सुज्येष्ठा तो सिर्फ एक माध्यम बनने वाली थी। इस प्रकार हास-परिहास करते हुए श्रेणिक ने चेलणा की उदासीनता तोड़ी। कुशलपूर्वक दोनों राजगृह की सीमा में प्रविष्ट हुए। अयकुमार ने पहले ही स्वागत की सब तैयारी कर रखी थी।

नवदम्पती का धूमधाम से नगर में प्रवेश हुआ। राजगृह में खूब उत्सव मनाया गया, पूरे नगर में चेलणा का धूमधाम से स्वागत हुआ और श्रेणिक ने गांधर्व विवाह कर विधिवत् चेलणा का पाणिग्रहण किया।

नाग रथिक एवं सुलसा को जब एक साथ बत्तीस पुत्रों की मृत्यु का

समाचार मिला तो दोनों ही भयंकर विलाप करने लगे। यद्यपि सुलसा तत्त्वज्ञ श्राविका थी, किन्तु पुत्र-मोह के कारण यह विव्हल हो गई। ह्रदय हाथ में नहीं रहा वह फूट-फूट कर रोने लगी एक साथ ही बत्तीस पुत्रों की मृत्यु । कितना दारूण ! कितना भयंकर संवाद ! इस प्रकार सुलसा पर दुखोः का पहाड़ टूट पड़ा। माँ के ह्रदय की उस दयनीय स्थिति का चित्रण कौन कर सकता है। उसके रुदन-क्रन्दन और विलाप से आसपास का वातावरण शोकमय हो गया। राजा श्रेणिक को इधर चेलणा मिलन की खुशी थी। उधर माता सुलसा को बत्तीस पुत्रों का ह्रदयविदारक वियोग। कैसा सुख एवं दुखमय है ये संसार । कैसी है नियति की विडम्बना। इस प्रकार महाराज श्रेणिक को अपने अंगरक्षकों की एक साथ मृत्यु का गहरा आघात लगा। (क्रमशः)

◆◆◆

नम्रता की जीत अभिमान पर

एक विद्वान पंडित महा अभिमानी था। वह प्रत्येक गांव में जाता, वहां विद्वान पंडितों को चर्चा के लिये बुलाता। चर्चा में विजयी बनकर पारितोषिक लेकर जाता। अधिकतर वह सामने वालों को पूर्वपक्ष स्थापन करने का कहता और तर्क वितर्क आदि के द्वारा पूर्वपक्ष का खंडन कर विजय माला प्राप्त कर लेता था। एक बार एक नगर में एक नम्र, सरल, अनुभवी और कुशाग्र बुद्धि के धनी संत ठहरे हुए थे। वह अभिमानी पंडित उस नगर में गया, उसने राज दरबार में सभी पंडितों को जीत लिये। तब उसके गर्व को देखकर एक साधारण व्यक्ति ने कहा- आप हमारे नगर में विराजित संत पुरुष को वाद में जीतें तो हम आपको पंडित, विद्वान मानें। उसने गर्व में आकर बोला कहा है वह संत ? चलो अभी उसे हरा देता हूँ। वे वहाँ गये। वाद का निमंत्रण दिया। संत ने कहा- भाई ! वाद करना संतों का काम नहीं। संतों का काम उपदेश देना, विरागी बनाना । तब उसने कहा- देखा मुझे देखकर डर गया। अब बहाने बनाता है। संत ने कहा- बहाने नहीं बनाता हूँ। तेरी दया खाता हूं। तू हार जायेगा। तेरी कीर्ति नष्ट हो जायेगी। इसलिये मना करता हूँ। फिर भी वह न माना तब राजसभा में संत आये और उसने संत को पूर्व पक्ष सुनाने को कहा। आपके पूर्व पक्ष का मैं अवश्य खंडन करूंगा। संत ने पूर्व पक्ष को स्थापते हुए कहा- सुना है आप महान हो, पुण्यशाली हो, विद्वान हो, सरल हो, आपके माता-पिता सदाचारी हैं, धनवान हैं, आपके स्वजन सज्जन हैं, आपकी माता सती है, आप आपके माता-पिता की ही संतान हैं। इत्यादि पूर्वपक्ष का स्थापन किया। अब वह इन बातों का खंडन कैसे करे ? चुप रहा। संत के पैरों में गिरकर क्षमा मांगकर बोला- मेरी विद्वत्ता आपकी सरलता, नम्रता के आगे हार गयी। मैं भविष्य में कभी गर्व नहीं करूंगा ।

याद रहे मुक्ति की दूनि है श्री जिनभक्ति

(पं. श्री गुणसुंदरविजयजी गणी)

विजयदेव ने देवलोक में एक काषायिक वस्त्र से 108 जिनप्रतिमाजी का अंगलुंछण किया (जीवाजीवाभिगम सूत्र)

– श्री विजय देवता ने सुधर्मा सभा में प्रवेश किया। वहाँ श्री जिनेश्वरदेव की दाढाओं को वंदन किया। दाढाओं का डाबडा खोलकर मोरपींछी से प्रमार्जना की। सुगंधी जल से 21 बार प्रक्षालन- अभिषेक किया .... चंदन से लेप किया। सुगंधी वाले पुष्पों से पूजा की। (जीवाजीवाभिगम सूत्र)

– सती दमयंती ने अपने पति नल के विरह में वनवास दरम्यान माटी स्वरूप द्रव्य में से श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमाजी का निर्माण किया। वर्षों तक इस प्रतिमाजी की पुष्पों-धूप-दीप से पूजा की। (कुमारपाल प्रतिबोध)

– भगवतीजी सूत्र (पंचमांग) बताता है कि तुंगिया नगरी के श्रावक लोग अपने गृह के दरवाजे बंद नहीं करते थे। जो भिक्षुक आवे उन सबको दान देते थे। जिनप्रवचन सुनने तक की चूकते नहीं थे। देवता लोग भी इनको धर्म से चलायमान नहीं कर सकते थे। इनके रोम-रोम में जिनभक्ति का वास था। वे लोग पर्व तिथि पर पौषध करते थे। (भगवतीजी)

– जिनवर की प्रतिमा के पूजन से चतुर्गतिरूप और विषय-कषायरूप संसार का क्षय होता है। (आवश्यक सूत्र)

– जिनेश्वर प्रतिमा के पूजन से कर्मक्षय- कषायक्षय स्वरूप मोक्ष की प्राप्ति होती है। (रायपसेणीय सूत्र)

– चंडप्रद्योतन राजा ने भ्राजिल श्रावक के नाम से शहर बसाया था और इसकी व्यवस्था के लिए 1200 गाँवों भेंट में दिये थे। वो ही गाँव जीवितस्वामी तीर्थ से प्रसिद्ध हुआ। यहाँ आर्य महागिरीजी और आर्य सुहस्थिगिरिजी आचार्य महाराजजी अनेक बार आये थे। (ओघनिर्युक्ति शास्त्र)

अपने चचेरे भाई श्रीकृष्ण की मृत्यु हुआ, इससे पाँच पांडवों को संसार से विरक्ति हुई। इन्होंने सुस्थित गुरुवर के पास में सर्व विरति संयम का

स्वीकार किया। वे ग्यारह अंगों के अभ्यास कर रहे हैं। इनमें से सबसे बड़े भाई युधिष्ठिर एक पूर्व के ज्ञानवाले बने हैं। ये पाँचों पांडव तीर्थाधिराज- तरणतारण जहाजश्री सिद्धक्षेत्र - शत्रुंजय - विमलाचल पर बीस करोड़ मुनिवरों के साथ आसो पूर्णिमा के दिन सर्वकर्म- सर्वकषाय से मुक्त बनें- सिद्ध बनें- अणाहारी बनें- अशरीरी बने । निरंजन - निराकार- ज्योति स्वरूप बनें। (मरण विभक्ति)

- मुगलों के साथ युद्ध में पराजय पाने के बाद महाराणा प्रताप निराशावाले बने थे। आचार्यश्री लक्ष्मीसागर सू. जी म. की प्रेरणा से इन्होंने भाव-श्रद्धा- भक्तिपूर्वक श्री पार्श्वनाथ भगवान के ध्यान की साधना की। फलतः इनको वीर भामाशाह के पास से बहोत धन की प्राप्ति हुई। राणा ने 52 कीलों और उदयपुर पर जीत प्राप्त की। बाद में श्रद्धालु- जिनभक्त राजा ने मेवाड़ की सरहद में डुंगर के बीच श्री नागफणा पार्श्वनाथ प्रभु के जिनालय का निर्माण किया। (भारतीय तीर्थ इतिहास)

◆◆◆

इंसान की पहचान

एक गुरु अपने शिष्य के लिए औषधि खोजने जंगल में गए। एक शिकारी भी शिकार के लिए वहाँ गया और एक सैनिक भी जंगल का रास्ता भटक गया। तीनों को प्यास लगी। दूर कहीं झोपड़ी दिखाई दी, जिसमें एक दृष्टिहीन व्यक्ति बैठा था। शिकारी वहाँ पहुंचा और बोला 'ए अंधे! मुझे पानी पिला दे, वरना तीर से तेरा जलपात्र फोड़ दूंगा ।

दृष्टिहीन व्यक्ति ने कहा, 'चल भाग शिकारी कहीं का, नहीं दूंगा पानी ।' उसी के पीछे सैनिक आया और बोला, 'अंधे, पानी पिलाकर मेरी प्यास बुझा । चाहे तो धन और वस्त्र ले ले।' उस व्यक्ति ने चिढ़कर कहा, 'राजा का सैनिक है, मुझे लोभ दिखाता है, जा नहीं मिलेगा पानी ।' तब तक गुरुजी भी वहां पहुंच गए थे । उन्होंने कहा, 'सूरदासजी, थोड़ा-सा जल प्रदान करें, बड़ी कृपा होगी।' दृष्टिहीन व्यक्ति बोला, गुरुदेव, मेरा सौभाग्य है कि आप मेरी कुटिया में पधारे।' उसने गुरुजी को पानी पिलाया। पानी पीकर गुरुजी ने कहा, आप देख नहीं सकते, फिर यह कैसे जान गए कि पहले आया व्यक्ति शिकारी, दूसरा सैनिक और तीसरा मैं, एक अध्यापक हूँ ? वह बोला, 'गुरुजी, बोलचाल से ही इंसान की पहचान हो जाती है। यह सुनकर गुरुजी ने उससे विनती की कि वह शिकारी और सैनिक को भी पानी पिला दे ताकि इनके मन की आँखे भी खुल जाएं ।

गतांक के आगे

धर्म का मूल क्या है ?

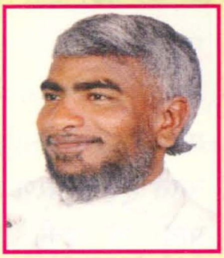

संशोधक- मुनि श्री चारित्र रत्नविजयजी म.सा.

अतः हे देवानुप्रिये ! इस शाश्वत सत्य को ध्यान में रखते हुए तुम लोग मनुष्य भव संबंधी काम भोगों में मत फँसो, सांसारिक कामभोगों में अनुराग आसक्ति, तृष्णा, लोलुपता, गृद्धि और विमुग्धता मत रखो।

याद करो देवानुप्रियों ! हम सातों अपने इस मानव भव से पूर्व के तीसरे भव में, महाविदेह क्षेत्र के सलिलावती विजय की राजधानी वीतशोका नगरी में सात समवयस्क बालसखा, अनन्य मित्र राजपुत्र थे, हम सातों साथ ही जन्में थे, साथ-साथ ही बढ़े हुए, साथ-साथ ही बाल-क्रीड़ा में निरत रहे, साथ-साथ ही हमने अध्ययन किया, साथ-साथ ही राज्योपभोग सांसारिक सुखोपभोग आदि क्रिया और निमित्त पाकर हम सातों ही अनन्य मित्रों ने एक साथ श्रमण धर्म की दीक्षा ग्रहण की थी। हम सातों ही मित्र मुनियों ने साथ-साथ समान तप करने का निश्चय किया था।

मैंने इस कारण स्त्री नामकर्म का बन्ध किया कि तुम छहों साथी मुनि यदि दो उपवासों की तपस्या का प्रत्याख्यान करते हो तो मैं तीन उपवासों की तपस्या कर लेता, तुम छहों यदि तीन उपवासों की तपस्या करते तो मैं चार उपवासों की तपस्या कर लेता। इस प्रकार मुनि जीवन की अपनी प्रारम्भिक साधना में, मैं तुम छहों साथी मुनियों से किसी न किसी बहाने विशिष्ट तप करता रहा। इस कारण मैंने स्त्री नाम कर्म का बन्ध कर लिया। किन्तु अपने प्रारम्भिक साधना-जीवन के पश्चात् हम सबने विशुद्ध भाव से एक समान दुष्कर तपश्चरण किया।

मैंने तीर्थंकर नाम - गोत्र-कर्म की महान् पुण्य प्रकृति का उपार्जन कराने वाले अर्हशक्ति आदि बीसों ही स्थानों की पुनः पुनः उत्कट भावना से आराधना की। उस कारण मैंने तीर्थंकर नाम-गोत्र-कर्म का उपार्जन किया। हम सातों ने घोर तपश्चर्या के द्वारा अपनी देहयष्टियों

को केवल चर्म से आवृत अस्थिपंजरावशिष्ट बना दिया और अन्त में हमने देखा कि हमने धर्माराधना के साधन अपने-अपने शरीर से पूरा सार ग्रहण कर लिया है, अब उसमें तपश्चरण करते हुए विचरण करने की शक्ति समाप्त प्रायः हो चुकी है, तो हम सातों ही मुनियों ने चारू पर्वत पर जाकर संलेखनापूर्वक साथ-साथ ही पादपोपगमन संथारा किया और समाधिपूर्वक आयु पूर्ण कर हम सातों ही जयन्त नामक अनुत्तर विमान में अहमिन्द्र हुए। हम सातों ने ही जयन्त विमान में अपने देवभव के दिव्य भोगों का उपयोग किया। तुम छहों की जयन्त विमान के देवभव की आयु 32 साल से कुछ कम थी अतः तुम छहों मुझ से पूर्व ही जयन्त विमान से च्यवन कर अपने इस वर्तमान भव में इन छह जनपदों के अधिपति बने हो।

◆◆◆

आत्म चेतना जगायें

साधनों की होड़ में, जिन्दगी की दौड़ में
मानवता खो गई है, आत्मचेतना सो गई है।
स्नेह, सौहार्द आज अजनबी है, अपने-अपने स्वार्थ में कहीं है।
दूसरों के दर्द को देखकर नहीं आती आँखों में नमी है।
क्योंकि परोपकार की भावना में कमी है।
संस्कार ढूँढ रहे है आशियाना, अमन को नहीं मिल रहा है ठिकाना।
आधुनिकता की आँधी में आस्था के दीप बुझने लगे हैं।
द्वेष की धूप में स्नेह के फूल मुरझाने लगे हैं।
जब भौतिकता का भ्रम टूटेगा, आकांक्षाओं का तूफान थमेगा।
जब जीवन के तृष्णा से तपते मरुस्थल में आयेगी संतोष की शीतल फुहार।
तब उठेंगे इंसानियत की ओर कदम गिरेगी नफरत की दीवार।
जब महसूस करेंगे किसी की तकलीफ, होगा किसी के दर्द का एहसास।
तब जीवित हो जायेगी मानवता की सीख, फिर सद्भावना की हवायें चलेगी।
करुणा के सागर की लहरें उठेंगी, फिर अमन को जगह मिलेगी।
संस्कारों को पनाह मिलेगी।

- जयन्त सकलेचा, नीमच

(संयोजक)
शांतिलाल रामानी

मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी
महाराज

विराट व्यक्तित्व

(प्रस्तोता-मुनिराज प्रशमसेनविजयजी म.सा.)

धरू परिवार की पृष्ठ भूमि मारवाड़ से गुजरात तक

धरू वंशीय पूज्य गुरुदेवश्री जयन्त सेनसूरीश्वरजी का पारिवारिक इतिहास मारवाड़ के भीनमाल (राज.) से गुजरात की थराद भूमि तक संचित है। दो हजार वर्ष प्राचीन जैन भूमि थराद (स्थापना संवत् 101) आज भी जैन संस्कृति का गौरवशाली वह स्थल है जिसे देवभूमि के रूप में अंकित करना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं है। दो हजार वर्षों का इसका जैन इतिहास ऐतिहासिक घटनाओं से परिपूर्ण है। इन घटनाओं के माध्यम से थराद ने न केवल समग्र जैन संस्कृति को दिशा दी, परिवेश दिया, अर्थ सम्पन्न किया बल्कि युगान्तरकारी परिवर्तन करने में भी सफलता प्राप्त की। धर्म की आराधना यहाँ के निवासियों के लिये अपने जीवन व्यवहारों का पर्यायवाची बना। दिव्य विशेषता इस नगर की यह रही कि चाहे इसका नाम थिरपुर से क्रमशः थाराप्रद, थिराप्रद, स्थिराप्रद, थिराद्र तथा थराद बदलता रहा हो लेकिन दो हजार वर्षों के अंतराल में यह कभी भी सम्पूर्ण नष्ट नहीं हुआ, न ही इसके स्थान परिवर्तन में किलोमीटरों की दूरी बनी। यह नगर निरंतर बना रहा तथा अपनी श्री तथा समृद्धि को अभिवृद्ध करता रहा। वैसे किसी युग में भीनमाल वर्तमान में राजस्थान का तहसील मुख्यालय तथा मारवाड़ अथवा मरूधर का अंग गुजरात की राजधानी था। उस समय गुजरात वीरान एवं मरूस्थल का रूप लिये हुआ था। छुटपुट बस्तियां थीं जहाँ भावनाशील लोगों का निवास था।

संवत् 101 (ईस्वी सन् 43) में चौहान राजपूत थिरपाल ने भीनमाल से निष्क्रमण किया। इसकी दो अनुश्रूतियां प्रचलित हैं। फिर भी देवी शक्ति की प्रेरणा ने इस नगर स्थापना की

पृष्ठभूमि को तैयार किया। थरादवासियों की असीम श्रृद्धा आज भी आशापुरी माताजी के प्रति है। उनका मंदिर भी स्थित है तथा इनकी कृपा थराद नगर की स्थापना में निर्विवाद रही। थिरपाल के साथ पूरा कारवां चला। ससला को कुत्ते के पीछे दौड़ते हुए दृश्य को देखकर उनने इसी स्थल पर नया नगर बसाने हेतु माताजी की आज्ञा मानी। माताजी की मूर्ति यहीं मेहमान रूप में बिराजमान कर दी गई, माताजी को नाणदेवीमाता के रूप में पहचाना गया। थिरपाल, वीरवाडिया तथा मोहनदास बैरागी आगे बढ़े।

भूमि के वीरता वाली होने का संकेत प्राप्त होने पर चैत्र शुक्ला 14 संवत् 101 को शुभ मुहूर्त्त में तोरण बांधकर ग्राम बसाया। उसी दिन श्री थिरपाल धरू गादीनशीन हुए, वीरवाडिया को मंत्री बनाया तथा मोहनदास के माताजी की सेवापूजा का कार्य सौंपा गया। शहर का नाम थिरपाल धरू के नाम पर थिरपुर रखा गया। साथ आये समूह में से एक अग्रज परिवार ने तोरण बांधकर नगर बसाहट की शुरुआत की अतएव इन्हें 'झांपलिया शेठ' परिवार के रूप में जाना गया। थिरपाल चौहान राजपूत थे वे बीसा श्रीमाल गौत्रीय जैन धर्मी थे। उनके वंशज ध्रुव कहलाये जो बाद में धरू हो गया। इतिहास ने थिरपाल को भी धरू उपनाम से ही अंकित किया। शहर का शुभ मुहूर्त ऐसा हुआ कि कुछ समय में ही वह आबाद हो गया। नाणदेवी को राजदेवी के रूप में पूजा जाने लगा।

थिरपाल धरू जैन धर्म के अनुयायी थे। उनके साथ आये परिवार भी जैनधर्मी थे अतएव थराद अपनी स्थापना से ही जैन आबादी रहा। यों जैनों के साथ अन्य धर्मी परिवार भी यहां बसे। जैन आबादी का वर्चस्व रहा। इस कारण जैन आचार्यों, मुनियों, यतियों का यह कर्मक्षेत्र रहा। थराद में हारिलसूरि गच्छ के चन्द्रकुल के प्रसिद्ध आचार्य वटेश्वर सूरि ने नवमी शताब्दी में थिरपुर नाम पर थाराप्रदीय गच्छ की स्थापना की।

हरिभद्र सूरि को इस गच्छ का प्रथम आचार्य बनाया गया। इस गच्छ में क्रमशः देवगुप्तसूरि, शिवचन्द्र गणि तथा यक्षदत्त गणि पट्टधर बने। थिरपाल के गढसिंह नामक पुत्र तथा जसुबाई व तालबाई नामक दो पुत्रियां थीं। उनकी बहिन हरकुंवरबा थी। थिरपाल के पश्चात् गढसिंह ही गादीपति हुए।

(क्रमशः)

◆◆◆

प्रासङ्गिकम्

(त्रिस्तुतिक संघ का स्वर्णिम काल)

आचार्यपद के 34 वर्ष

(पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री के शिष्य मुनिश्री निपुणरत्न विजयजी)

भाण्डवपुर से भाण्डवपुर

वि.सं. 2040, महा सुदि 13

राजस्थान प्रांते, जालोर जिल्ले, भांडवपुर तीर्थ की पावन धरा...

यह दिन त्रिस्तुतिक संघ के लिये मानों एक सौभाग्य लेकर आया था...

त्रिस्तुतिक समुदाय को एक समर्थ एवं सफल 'संघनायक' की प्राप्ति हुई।

- जिनका नामकरण हुआ- प.पू. त्रिस्तुतिक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. आचार्य पद आसीन होते हुए ही पू. आचार्य के सानिध्य में शासन प्रभावना का अद्भूत अस्खलित् प्रवाह प्रारंभ हुआ।
- सर्वप्रथम चौराऊ नगर में 300 जिनबिम्बों की अंजनशलाका आपके द्वारा भव्य रूप से सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् समय-समय पर अनेक श्रीसंघों में, तीर्थों में अंजनशलाका आयोजन सम्पन्न हुए। जिसमें महाविदेह धाम-चेन्नई में 109'' के सीमंधर स्वामी की अंजनशलाका अपने आपमें अतिभव्य रही। 34 वर्ष के आचार्यपद पर्याय में 10000 से अधिक जिनबिम्बों की अंजनशलाका हुई। पूना में मात्र 1 प्रतिमा की अंजनशलाका भी आपके द्वारा की गई।
- **प्रतिष्ठा शिरोमणी** के रूप में आपके द्वारा भारत भर के अनेक प्रांतों में 240 से अधिक जिनमंदिर एवं गुरुमंदिरों की प्रतिष्ठा हुई। कई स्थानों पर भव्यातिभव्य महामहोत्सवों के साथ प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ, जिनका इतिहास स्वर्णाक्षरों से लिखा गया। छोटा श्रीसंघ हो या बड़ा श्रीसंघ, सभी की विनंति स्वीकार कर श्रीसंघों में प्रतिष्ठा के कार्य सम्पन्न करवाये।
- **'तीर्थ प्रभावक'** के रूप में आपकी प्रेरणा से भारत भर में 15 से अधिक नूतन तीर्थों का निर्माण हुआ। साथ ही प्राचीन तीर्थों का जिर्णोद्धार भी हुआ। इन तीर्थ स्थानों में समय-समय पर अनेक धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन चल रहे हैं। ट्रस्ट मंडलों द्वारा

तीर्थों का सुंदर संचालन भी हो रहा है। वर्तमान में 68 तीर्थ का निमाण गतिमान है ।

◈ **'संयम दानेश्वरी'** के रूप में आपके हस्तकमलों द्वारा 200 से अधिक मुमुक्षु आत्माओं ने रजोहरण ग्रहण कर सुंदर संयम साधना कर रहे हैं। अनेक बार सामूहिक दीक्षा का आयोजन हुआ, जिसमें थराद नगर में 25 दीक्षाओं का आयोजन 'आत्मोद्धार' के नामकरण के साथ हुआ ।

◈ **'युग प्रभावक'** के रूप में आपके द्वारा अनेक प्रभावशाली कार्य सम्पन्न हुए। तीर्थ, जिनमंदिर, गुरुमंदिर, ज्ञानमंदिर आदि के निर्माण के साथ आपकी प्रेरणा से कई स्थानों पर स्कूल, चिकित्सालय, गौशाला आदि का भी निर्माण हुआ। अनेक बार भुकम्प, बाढ़ आदि विपदाओं में सहायता हेतु बड़ी राशिदान एवं खाद्य सामग्री अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार एवं गुरुभक्तों द्वारा वितरित की गई। जीवदया के क्षेत्र में भी अनुमोदनीय कार्य हुए, जिसमें देवनार कत्लखाने की एक बड़ी फाइल निरस्त हुई, जिससे प्रतिदिन के 5000 पशुओं को अभयदान प्राप्त हुआ।

◈ **'संघ एकता शिल्पी'** के रूप में आपके कुशल मार्गदर्शन द्वारा कई संघों में वर्षों से चल रहे विवादों का सुखद समाधान हुआ और आपस में मैत्री भाव स्थापित हुआ। आपकी वाणी एवं प्रज्ञा का यह बल था कि जो कार्य वर्षों से अनेक प्रयासों द्वारा नहीं हुए, वो यश आपको प्राप्त हुआ। आप हमेशा 'संघ एकता' के ही पक्षधर एवं प्रयत्नशील रहे।

◈ **'साहित्य मनीषी'** के रूप में आपके द्वारा 200 से अधिक पुस्तकों का लेखन, संपादन, संयोजन हुआ। जिसमें प्रवचन, काव्य, चिन्तन, पूजा आदि अनेक विषय शामिल है। अभिधान राजेन्द्र कोश का 3 बार प्रकाशन हो गया है। 20,000 गाथा प्रमाण काव्य रचना हुई जिसमें चैत्यवंदन, स्तुति, स्तवन, सज्झाय, पूजा एवं 2100 प्रेरणात्मक दोहे की रचना शामिल है। चैतन्य काश्यप फाउन्डेशन - रतलाम द्वारा पू. गुरुदेव श्री के सम्पूर्ण साहित्य का संकलन 'जैनाचार्य जयन्तसेन वाङ्मय' के रूप में हो गया है।

◈ **'उग्रविहारी'** के रूप में आपके द्वारा भारतभर के 19 प्रांतों में 1.50 लाख कि.मी. का विहार किया गया। जिसमें 3 बार दक्षिण भारत की स्पर्शना की गई। प्रतिवर्ष 3-4 प्रांतों की स्पर्शना के साथ 2000 कि.मी. का विहार आप करते थे, जिसमें मार्गवर्ती श्री संघों को प्रेरणा-उपदेश भी प्रदान करते थे। आपकी विहार यात्रा के दौरान अनेक जैनेत्तर भक्तों ने भी सेवा की एवं धर्म का महत्व समझा।

- राष्ट्रसंत के रूप में आपके द्वारा समय -समय पर जनहित एवं देशहित के लिये प्रेरक कार्य हुए। राजनेताओं के दर्शनार्थ आने पर उन्हें राजनीति में धर्म नीति कैसे रखना, यह समझाकर देशसेवा के लिये प्रेरित किया। बकरीईद और महावीर जयंति एक ही दिन होने पर बोहरा-मुसिलम समाज को उस दिन हिंसा न करने का संकल्प करवाया। 15 अगस्त एवं 26 जनवरी को प्रवचन में व्यसन-फैशन रूपी कुसंस्कारों के बंधनों से स्वतंत्र होने का मार्मिक उपदेश भी दिया। कई बार सार्वजनिक स्थानों पर प्रवचन दिये, जिसमें गीता मंदिर, राम मंदिर, माहेश्वरी भवन आदि शामिल है।
- शाश्वतधर्म (मासिक) का कुशल मार्गदर्शन ।
- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् परिवार का सफल संचालन ।
- 55 वर्षों से नवकार महामंत्र की आराधना का अखण्ड आयोजन ।
- बाग नगर में 1 माह की तप-जप युक्त मौन साधना ।
- नव्वाणु यात्रा, उपधान तप, छःरीपालक संघ ज्ञानायतन आदि आयोजन ।
- श्री राजेन्द्रसूरि शोध संस्थान- उज्जैन, जयन्तसेन म्युजियम- मोहनखेड़ा तीर्थ, गुरु जन्मभूमि भरतपुर महातीर्थ की प्रेरणा इसके अलावा भी अनेक प्रभावशाली कार्य आपकी प्रेरणा, मार्गदर्शन, आशीर्वाद से हुए । जिसने जिनशासन एवं त्रिस्तुतिक गच्छ की महीमा एवं जाहोजलाली में अभिवृद्धि की।

पेपराल में जन्म एवं सियाणा में संयमी बनकर भांडवपुर तीर्थ में संघनायक के रूप में प्रारंभ होने वाली अजोड़ अविस्मरणीय शासन प्रभावना ने पुनः भांडवपुर में ही विश्राम लिया। आपके वियोग से सकल श्रीसंघ एवं लाखों गुरुभक्तों ने मानों अपने जीवन में सब कुछ खो दिया हो,ऐसा सूनापन महसूस कर रहे है। आपके अनंत उपकारों का स्मरण बार-बार आँखों से आंसू बनकर बह जाता है। आपने जो दिया, उसका ऋण चुकाना संभव नहीं है। आपके 34 वर्ष के आचार्यपद पर्याय में त्रिस्तुतिक संघ ने नित नई ऊँचाईयां प्राप्त की है। आपके प्रभावक जीवन एवं पुण्य साम्राज्य को देखकर भांडवपुर तीर्थ में वैशाखवदि 7 को अग्नि संस्कार पश्चात् आयोजित श्रद्धांजलि सभा में अ.भा. श्री सौधर्मबृहत्तपागच्छीय जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ ने आपको **'पुण्य सम्राट'** की पदवी प्रदान की जिसका उपस्थित गुरुभक्तों ने हृदय से अनुमोदन किया। आपका पुण्य प्रभावक साम्राज्य सदा-सदा जीवंत-जयवंत रहे, यही अभिलाषा।

◆◆◆

पुण्य सम्राट् के 63 चातुर्मास की सुवास

(पुण्य सम्राट् ज्ञानाञ्जनम् पर्व-पाटण)

मध्यप्रदेश	गुजरात	राजस्थान	दक्षिण भारत	महाराष्ट्र
राजगढ़	अहमदाबाद	आहोर	चेन्नई	मुंबई
खाचरौद	अहमदाबाद	निम्बाहेड़ा	बेंगलोर	मुंबई
राणापुर	अहमदाबाद	बागरा	विजयवाड़ा	2
जावरा	थराद	भीनमाल	नेल्लौर	
राजगढ़	थराद	सियाणा	चेन्नई	
राजगढ़	नेनावा	कोशेलाव	बीजापुर	
राणापुर	धानेरा	जोधपुर	बेंगलोर	
उज्जैन	अहमदाबाद	रेवतड़ा	गंटूर	
रिंगनोद	नेनावा	सियाणा	चेन्नई	
रतलाम	थराद	खिमेल	विजयवाड़ा	
पारा	अहमदाबाद	भीनमाल	बीजापुर	
खाचरौद	सूरत	चौराऊ	11	
जावरा	थराद	सायला		
कुक्षी	नेनावा	13		
राजगढ़	पालीताणा			
इन्दौर	थराद			
बाग	पेपराल तीर्थ			
मोहनखेड़ा तीर्थ	17			
बड़नगर				
रतलाम				
20				

* मुनिपद → 30 चातुर्मास

* आचार्यपद → 33 चातुर्मास

प्रथम स्वतंत्र चातुर्मास → राजगढ़ (म.प्र.)

पुण्यसम्राट् श्री के 55 वर्ष पूर्व आलेखित चिन्तन

'मधुकर मंथन'

◈ 'प्रकृष्ट – उत्कृष्ट उन्माद को प्रमाद कहते हैं। प्रगाढ़ अंधकार का उत्पादक यही है, हर बात में कमजोरी का कारण भी यही है। मानसिक शिथिलता या शारीरिक अस्वस्थता का प्रादुर्भाव इसी के प्रभाव से प्रायः होता है। किन्तु इसके विपरीत जो आलस्य का सर्प कंचुकीवत् परित्याग कर किसी भी प्रकार से किन्हीं कार्यों में शुद्ध लक्ष्य पूर्वक चल देते हैं, वे उद्यमी परिश्रमी सफलता के श्रृंग पर आसीन हो जाते हैं। प्रमाद से निवृत्ति और प्रमोद में प्रवृत्ति श्रेयस्कर हो जाती है।

◈ व्यक्ति को स्वयं का विशुद्ध लक्ष्य बना लेना परमावश्यक है। तत्पश्चात् किन्हीं परिस्थितियों में उसे विचलित होने का अवसर नहीं आवेगा। शर्त यह है कि उसे अपने आप को धीर बनाना होगा, गंभीरता के साथ निश्चछल व निश्छल भी बनना होगा। सहनशील बन कर कर्त्तव्य पथ की ओर बढ़ना होगा। प्रत्येक कार्य की सिद्धि इन्हीं में निहित है।

◈ त्याग और भोग, दो शब्दों के विश्लेषण पर प्राणीमात्र का जीवन संसार बना हुआ है। इन्हीं को सुख-दुःख की उपमा भी दी जा सकती है। ये ही दिन, रात कहे जा सकते हैं और खेद, प्रसन्नता कहे या हर्ष, विषाद ये ही हैं।

त्याग से ही सुख के दिन देखे जाते हैं और हर्ष व प्रसन्नता इनसे प्राप्त होती है। भोग से रोग और परिणामतः अंधेरी घटाएँ और फिर खेद और विषाद का विषाक्त वातावरण बन जाता है।

◆◆◆

सात अजूबों से कम नहीं श्री देलवाड़ा (आबू) तीर्थ जैन मंदिर

(जैन जयराजदेवड़ा धोका)

राजस्थान के इकलौते हिल स्टेशन माउंट आबू स्थित श्री देलवाड़ा तीर्थ जैन शास्त्रानुसार एक अत्यन्त प्राचीन और महत्वपूर्ण तीर्थ है। समुद्र की सपाटी से करीब 1220 मीटर की ऊँचाई पर आबू पर्वत की गोद में बसा हुआ देलवाड़ातीर्थ ने सिर्फ भारत में ही नहीं, मगर पूरे विश्व में अद्‌भुत दर्शनीय तीर्थों में अपना स्थान बनाया है। यहाँ के देवालयों में नक्काशी की गई शिल्पकला देश के और विदेश के सभी लोगों को एक समान आकर्षित और मोहित करती है। शिल्पकला की इतनी बारीक कारीगरी जो विमल बस ही मंदिर में की गई है अन्यत्र भारत के किसी अन्य देवालयों या मंदिर में देखने को नहीं मिलती है। वाकई हस्तशिल्प का खजाना है ये मंदिर। कलाकृति और शिल्प का ये बेजोड़ नमूना है। मंदिर की एक-एक दीवारें आज अपनी कहानी बयां करती हैं- मंदिर का कोई भी ऐसा कोना नहीं है जो शिल्प से नहलाया नहीं गया हो- वास्तव में ऐसा नायाब नमूना है जिसे देख आँखे चौधिया जाती हैं ऐसा लगता है- पाषाण अभी बोल उठेगा। जिसका दीदार हर कोई करना चाहता है ऐसा है यह भव्य जैन तीर्थ। इन देवालयों के निर्माण के साथ तीन प्रभावी जैन ज्योतिर्धर संलग्न हैं और वे विमल शाह, वस्तुपाल और तेजपाल, गुजरात के राजवी भीमदेव के मंत्री श्री विमल शाह ने वि.सं. 1088 में 185300000 रुपये खर्च करके मंदिरों का निर्माण करवाया था तद्‌उपरांत विमलवसहि के नाम से यह जगविख्यात मंदिरों का जीर्णोद्धार भी होता रहा। यहाँ पर पाँच मंदिरों का ये समूह है, मंदिरों की छतों, गुंबदों, दरवाजों, स्तंभों, तोरणों (मुख्य द्वारों) और दीवालों के नेत्र दीपक और ऐश्वर्य युक्त नक्काशी की कोमलता और बारीकियों का वर्णन जो शब्दों में किया नहीं जा सकता है। इन मंदिरों के सामने ही वि.सं. 1287 के फागुणवदी तृतीया के दिन वस्तुपाल तेजपाल ने 13 करोड़ 55 लाख रुपये खर्च करके लावण्यवसही नाम से पहचाने जाते मंदिरों की श्री विजयसेनसूरीश्वरजी म.सा. के

कर कमलों से प्रतिष्ठा करवाई। दानवीर वस्तुपाल- तेज पाल दोनों भाई वीर और उदार थे। वस्तुपाल स्वयं कवि थे। यह लावण्यवसही की रचना उसकी महान नक्काशी और शिल्प में से नितरता लावण्य अद्‌भुत है। भगवान श्री कृष्ण का जीवन, नर्तकियों और गायिकाओं का समूह और देराणी - जेठानी के ताकको आकृतियाँ यहाँ की विशिष्ठता है। इसके सिवा यहाँ का पित लहर मंदिर, श्री महावीर भगवान का देवालय और खरतरवसहिं मंदिर भी अत्यन्त दर्शनीय है।

श्री देलवाड़ा मंदिर से जुड़ी कई किवदंतियां - कहानियाँ मान्यताएँ भी प्रचलित हैं। जिसमें भगवान विष्णु के अवतार बालमरसिया- और मंदिर निर्माण हेतु वस्तुपाल की पुत्री की शादी उनके साथ करने की- फिर शादी न करने से भगवान विष्णु का क्रोधित होना यह जगह कुंवारी कन्या के रूप में मशहूर होना महिलाओं द्वारा यहाँ चूड़िया चढ़ाना आदि मुख्य बाते हैं। इन मंदिरों के निर्माण में 1500 कारीगरों ने करीब 14 वर्ष तक अथक परिश्रम किया तब कहीं जा कर ऐसा विश्व का बेजोड़ दर्शनीय तीर्थ स्थल की रचना हुई। जीवन का उद्धार और भवसागर पार कराने वाले ऐसे तीर्थ को विश्व के सात आश्चर्यों में अवश्य स्थान प्राप्त होना चाहिये।

◆◆◆

ध्यान दीजिये

शाश्वत धर्म का प्रकाशन मास की 3 तारीख को होता है। दिनांक 10 तक आपको अंक प्राप्त न होने पर दोप 2.30 से 5 के मध्य कार्यालय पर टेलीफोन नं. (07422) 231614 से सम्पर्क करें। प्रकाशनार्थ लेख, रचनाएं प्रत्येक मास की 2 तारीख तक मंदसौर कार्यालय पर प्राप्त हो जाना आवश्यक है। प्रकाशनार्थ समाचार एवं चित्र उस मास की दिनांक 15 तक मंदसौर प्राप्त होने पर ही उनको उस मास के अंक में सम्मिलित किया जाना संभव है। कम्प्यूटर पर टाइप करवाकर भेजे। पते पर परिवर्तन या नए ग्राहक की सूचना शाश्वत धर्म के मेल mail- IDshaswatdharmajain@yahoo.in पर दी जा सकती है। डाक से लिखित भिजवाने की भी सुविधा है। शाश्वत धर्म के नए ग्राहक बनने व सहायता राशि भिजवाने हेतु शाश्वत धर्म के करंट आकउंट नं. 63035775492 स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मुखर्जी चौक, मंदसौर में जमा कर रसीद की फोटोकॉपी कार्यालय पर भिजवाएं।

श्री राजेन्द्र जैन पर्व दिवस केलेण्डर

कार्तिक सुदी 1 - नववर्ष श्री गौतम गणधर केवल ज्ञान
कार्तिक सुदी 2 - भाई बीज, आचार्य श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की जन्मतिथि
कार्तिक सुदी 5 - ज्ञान पंचमी पाठशाला में कार्यक्रम
कार्तिक सुदी 7 - चौमासी अठ्ठाई प्रारम्भ
कार्तिक सुदी 15 - चातुर्मास समाप्त श्री सिद्धाचलजी की यात्रा- अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद स्थापना दिवस
अगहन विदी 10 - भगवान महावीरस्वामी दीक्षा कल्याणक
अगहन विदी 13 - प.पू. गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का 'जन्मोत्सव' परिषद द्वारा स्वास्थ्य दिवस
अगहन सुदी 11 - मौन एकादशी
पोष विदी 10 - भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक (पौषदशमी)
पोष सुदी 3 - श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का स्वर्गारोहण दिवस- गुरुजाप
पोष सुदी 4 - उपाध्याय श्री मोहनविजयजी म.सा. का स्वर्गारोहण दिवस
पोष सुदी 7 - दादा गुरुदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का जन्म व निर्वाण दिवस (गुरु सप्तमी)- परिषद द्वारा गुरुजाप
माह विदी 13 - भगवान आदिनाथ मोक्ष कल्याणक (मैरू तेरस)
माह सुदी 4 - प.पू. गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का 'संयम उत्सव दिवस'- स्नात्र पूजन
माह सुदी 7 - आचार्य श्री भूपेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की स्वर्गारोहण तिथि
माह सुदी 13 - प.पू. गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का 'आचार्य पद पाटोत्सव दिवस' सा. सामायिक
फाल्गुन सुदी 7 - चौमासी अठ्ठाई प्रारंभ
फाल्गुन सुदी 14 - होली चातुर्मास प्रारंभ
चैत्र विदी 8 - वर्षीतप - प्रारंभ भगवान आदिनाथ दीक्षा कल्याणक
चैत्र सुदी 1 - नूतन चैत्री नववर्ष प्रारंभ
चैत्र सुदी 7 - नवपद ओली प्रारंभ
चैत्र सुदी 13 - महावीर स्वामी जन्म कल्याणक
चैत्र सुदी 15 - नवपद ओली समाप्त, श्री सिद्धाचलजी की यात्रा एवं पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधरों के मुखारविंद से अज्ञानुवर्ती मुनी भगवंत-साध्वी भगवंत के आगामी वर्ष के चातुर्मास की उद्घोषणा का पर्व

वैशाख सुदी 3	–	अक्षय तृतीया (वर्षीतप पारणा)
वैशाख सुदी 10	–	भगवान महावीर स्वामी केवल ज्ञान कल्याणक
वैशाख सुदी11	–	भगवान महावीर स्वामी के शासन में चतुर्विद श्रीसंघ का स्थापना दिवस
वैशाख विदी 7	–	पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का स्वर्गारोहण दिवस
वैशाख विदी 7	–	गच्छाधिपति श्रीमद् विजय श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. का पाटोत्सव दिवस
आषाढ़ सुदी 7	–	चौमासी अठ्ठाई प्रारम्भ श्रीमद् विजयविद्याचन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. की स्वर्गारोहण तिथि
आषाढ़ सुदी 14	–	चातुर्मास प्रारंभ
श्रावण सुदी 5	–	मासीधर तप (मासक्षमण)
श्रावण सुदी 7	–	श्री नमस्कार महामंत्र आराधना पर्व प्रारम्भ
श्रावण सुदी 15	–	श्री नमस्कार महामंत्र आराधना पर्व समाप्त, रक्षाबंधन
भादवा विदी 5	–	पक्खीधर
भादवा विदी 12	–	पर्वाधिराज पर्युषण प्रारम्भ
भादवा विदी 30	–	बड़ा कल्पसूत्र वाचन
भादवा सुदी 1	–	भगवान महावीर स्वामी जन्म वाचन महोत्सव
भादवा सुदी 1	–	श्रीमद् विजयधनचन्द सूरिश्वरजी म.सा. की स्वर्गारोहण तिथि
भादवा सुदी 2	–	तेलाधर
भादवा सुदी 4	–	संवत्सरी क्षमापना महापर्व
कुवार सुदी 7	–	नवपदजी ओली प्रारंभ
कुवार सुदी 15	–	नवपदजी ओली समापन
कार्तिक विदी 13	–	धनतेरस
कार्तिक विदी 14	–	रूपकाली चौदस
कार्तिक विदी 30	–	दीपावली, महावीर स्वामी निर्वाण कल्याणक (दीपावली महापर्व पर पटाखे छोड़ने का त्याग करने वालों से संकल्प पत्र भरवाना व सम्मान करना)

पुण्य सम्राट युग प्रभावकाचार्य, राष्ट्रसंत, गुरुदेव के दिव्य मंगल आशीष से राजेन्द्र जैन पर्व दिवस कैलेण्डर में पर्व तिथियों पर संघ समाज व परिषद् परिवार द्वारा विभिन्न प्रकार के जप-तप, सामाजिक रचनात्मक आदि धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए मार्गदर्शिका पर्व दिवस कैलेण्डर के रूप में प्रस्तुत है।

विशेष : पर्व तिथि दो आने पर दूसरी पर्व तिथि मान्य होती है तिथि क्षय होने पर पूर्व तिथि मान्य होगी। अधिक मास होने पर द्वितीय अधिक मास में पर्व तिथि के कार्यक्रम करें, मान्य होगा।

संकलन संयोजक-नरेन्द्र कुमार मोतीलाल धाड़ीवाल महिदपुर (म.प्र.) मो. 9926764241

◆◆◆

प्रकृति का अनमोल उपहार - धूप

(श्री अचलचन्द जैन, सायला)

प्रकृति ने हमें अनेकों अनमोल उपहार दिये हैं। जीवन दायिनी धूप उनमें से एक है। धूप इसलिये जीवन दायिनी है, क्योंकि यह अंधकार को दूर कर प्रकाश फैलाती है, ऊर्जा देती है, अन्न को पकाती है एवं चर्म रोगों तथा अन्य भीषण रोगों से बचाती है। इतना ही नहीं धूप हड्डियों एवं मांस पेशियों को भी मजबूत बनाती है। केवल 20-25 मिनिट तक धूप का सेवन करने से शरीर में विटामिन 'डी' की आवश्यक प्राप्ति हो जाती है और इसका कोई साईड इफेक्ट नहीं होता है।

धूप विटामिन 'डी' का प्रमुख स्रोत है। विटामिन 'डी' की कमी को पूरा करने का निःशुल्क, आसान, असरदार और सुरक्षित तरीका सूर्य की धूप का सेवन है प्राणी मात्र को 90% विटामिन 'डी' की पूर्ति सूर्य से मिलने वाली धूप से होती है। सूर्य ऊर्जा का अक्षय भण्डार एवं शक्तिशाली स्रोत है। सोलर की सहायता से सूर्य की किरणों से बिजली उत्पन्न कर उपयोग में ली जाती है।

सूर्य की प्रातः काल की किरणों से हमें जो ऊर्जा मिलती है, वह हमारे शरीर के विकास के लिये अत्यन्त लाभदायक है। बुजर्गों एवं नवजात शिशुओं के लिये प्रातः काल की धूप का सेवन अनेक दृष्टियों से लाभदायक है। सुबह की धूप का सेवन करने से रात को नींद अच्छी आती है और व्यक्ति दिनभर तरोताजा महसूस करता है। इसलिये प्रातः काल की धूप का सेवन अवश्य करना चाहिये। इससे हृदयघात, कैंसर और डायबिटिज का खतरा कम होता है। इसके अलावा पाचन प्रणाली को सक्रिय रखने में भी सूर्य की किरणें बहुत उपयोगी हैं।

सर्दियों में खिली हुई धूप सबको अच्छी लगती है। धूप सेवन से खून का प्रवाह तेज होता है। एक शोध से यह सिद्ध हुआ है कि जिन क्षेत्रों में सूर्य की धूप बहुत कम पहुँचती है, वहाँ मृत्यु दर अधिक होती है। सूर्य की किरणें त्वचा में गहराई तक प्रवेश कर रक्तवाहिनियों को साफ करती है एवं रक्त को शुद्ध करती है, इसलिये धूप के सेवन से व्यक्ति स्वस्थ रहता है। सूर्य की धूप से ऊर्जा प्राप्त होने के कारण हमारी संस्कृति में सूर्य का इतना अधिक महत्व है कि प्रातः काल का स्नान करते समय सूर्य के सामने देखकर उसे नल का अर्ध्य देकर उसकी पूजा अर्चना की

जाती है।

सूर्य की धूप का एक और अद्‌भुत लाभ यह है कि यह वजन कम करने में मदद करता है। सूर्य की धूप का सेवन करने से शरीर की अतिरिक्त वसा कम होती है, जिससे वजन घटता है।

छोटे बच्चों के लिये नियमित धूप का सेवन उनकी शारीरिक वृद्धि के लिये आवश्यक है। धूप के सम्पर्क में रहने से बच्चों की लम्बाई बढ़ती है। गर्भवती महिलाओं को अपने आपको और होने वाले बच्चे को स्वस्थ रखने एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिये धूप का सेवन करना चाहिये।

जोड़ों के दर्द में सर्दी की धूप से आराम मिलता है। धूप में बैठकर यदि नारियल के तेल की मालिश की जाय तो इतना आराम मिलता है कि यदि इसे सोने में सुगन्ध कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

नियमित रूप से 4 सप्ताह तक धूप का सेवन करने से 80% तक मुंहासे एवं त्वचा के रोगों से राहत मिलती है। फंगल संक्रमण भी सूरज की रोशनी से ठीक होता है। इसके अलावा सूर्य का प्रकाश बालों को बढ़ाने एवं मजबूत बनाने में मदद करता है और बालों को झड़ने से बचाता है।

प्रकृति का यह अनमोल उपहार समस्त जीव-जन्तुओं के जीवनयापन के लिये आवश्यक है। वनस्पति से लेकर छोटे बड़े सभी जीवों को धूप से ऊर्जा मिलती है. धूप मनुष्य को स्वस्थ, निरोगी एवं दीर्घायु बनाती है। इस तरह धूप समस्त विश्व की प्राणदाता है। हकीकत में धूप हमारे लिये किसी वरदान से कम नहीं है।

◆◆◆

यह भी हो जाए

* अपने विचारों पर ध्यान दें, वे आपके शब्द बन जाते हैं। अपने शब्दों पर ध्यान दें, वे आपकी क्रियाएं बन जाती हैं। अपनी क्रियाओं पर ध्यान दें, वे आपकी आदतें बन जाती हैं। अपनी आदतों पर ध्यान दें, वे आपका चरित्र बन जाती हैं।

* जो व्यक्ति कदम दर कदम चल कर चोटी पर पहुंचता है वह उस व्यक्ति से कहीं ज्यादा सम्मान पाता है जो चोटी पर हेलीकॉप्टर से पहुंचता है।

* अपने मित्र से तीन वर्ष तक प्रतिदिन एक घंटे तक बातचीत करने की अपेक्षा, किसी वाहन में तीन दिन का साथ आपको एक-दूसरे को जानने में अधिक सहायक होगा।

माँ

(श्री अरविन्द सी मोदी, जालोर)

माँ मेरे दिल की धड़कन है। माँ वात्सल्यता की मूर्ति है। माँ मेरे जीवन का आचार है। माँ मेरी गुरु है। माँ से बड़ा इस दुनिया में कोई नहीं है माँ जन्नत है। माँ मेरी परमेश्वर है। करुणा का सागर है। माँ है तो छाया है। माँ जगत की जननी है। माँ मेरी साक्षात देवी का रूप है। माँ में परमात्मा का रूप दिखाई देता है।

माँ का वचन सिद्ध है। माँ के कई रूप है माँ गुरु भी है। माँ सुख हो या दुख साथ पूरा निभाती है। कष्ट सहन करके भी अपने पुत्रों पर छत्र-छाया करती है मुझे मेरी माँ की सूरत में ममता, करुणा, दया, वात्सल्यता की झलक दिखाई देती है। माँ मेरा प्राण है। माँ के आशीर्वाद से जीवन में खुशीयां ही खुशीयां मिलती हैं वह जीवन में उनके आशीर्वाद से आगे बढ़ता है।

अपना नाम परिवार का नाम, अपने कुल का नाम रोशन करता है। माताएँ जीवन में जो आशीर्वाद देती हैं फलता-फूलता है। माँ में मिठास है। माँ अपने को नौ महिने पेट में रखती है। हम लातें मारते भी हैं तो माँ उसे सहन करती है। माँ का उपकार हम कभी नहीं भूलेंगे उनका कर्ज भी हम नहीं चुका सकते मगर माँ को खुश रख सकते हैं।

माँ का प्यार, माँ का आशीर्वाद सदा बरसता रहेगा, माँ के आशीर्वाद से परलोक भी सुधर जाता है। जीवन भी मंगलमय हो जाता है। माँ की सेवा भाग्यशाली पुत्र ही कर सकते हैं।

माँ का अगर दूध से पक्षालन करके उसको अगर सिर पर लगायें या पीयें तो भी हम उनके उपकार का कर्ज नहीं उतार सकते। विशेष मातृ दिवस पर मेरा संदेश आप सभी पाठकों के पास भिजवा रहा हूँ कि जो भी तन-मन से माता-पिता की सेवा करेगा, जिसने अपने जीवन में माँ का आशीर्वाद प्राप्त कर लिया तो जीवन में कभी भी दुखी नहीं होगा। सब कुछ भूल जाना मगर जन्म देने वाली माँ को मत भूलना। माँ के चरणों के हम फूल हैं। उनको ही समर्पित हो ग्रेट माई मदर, ममता मयी मेरी माँ।

ગુર્જર જૈન જ્યોત

(શાશ્વત ધર્મ ગુજરાતી આવૃત્તિ)

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી

ફ્લેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,

ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૭૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

અનિદાનતા

"સબ્વત્થ ભગવયા અનિયાણયા પસત્થા ।"

(ભગવાને સર્વત્ર અનિદાનતા (નિષ્કામપણા)ની પ્રશંસા કરી છે.)

કાર્યની શુદ્ધિને માટે નિઃસ્વાર્થપણું અત્યંત આવશ્યક છે. સ્વાર્થ અથવા ફળની ઈચ્છા જ કાર્યને બગાડે છે. ફળ તો મળશે જ, પરંતુ આપણે ફળની આશા રાખીને કાર્ય ન કરવું જોઈએ.

આ વાત એટલા માટે જરૂરી છે કે કોઈ કોઈ વાર ફળ બહુ મોડેથી મળે છે અને કોઈ કોઈ વાર મરણ પછી પરલોકમાં પણ મળે છે. આ પ્રમાણે સારાં કામોનું ફળ તુરત અથવા આ જ ભવમાં ન મળવાથી લોકો નિરાશ થઈ જાય છે અને કર્તવ્યથી મોઢું ફેરવી લે છે. નિષ્કામ વ્યક્તિને ફળની આતુરતા નથી હોતી, તેથી તે બરાબર પોતાના કાર્યમાં લાગેલો રહે છે.

બીજી વાત એ છે કે દાનથી પરોપકાર થાય છે અને યશ પણ મળે છે, પરંતુ જે દાતાની દૃષ્ટિ યશ ઉપર જ હશે, તે જ્યાં વધારે કીર્તિની આશા હશે ત્યાં જ દાન કરશે - ભલે ઉપકાર ઓછો થાય. આ પ્રમાણે ફળની આશા કાર્યની દિશા બદલીને તેને વ્યર્થ પણ બનાવી શકે છે.

ભગવાને અનિદાનતા (નિષ્કામપણા)ની પ્રશંસા આ જ કારણે કરી છે.

- સ્થાનાંગ સૂત્ર, ૬/૧

છેલ્લા ત્રણ વર્ષથી ધાર્મિકતાની છોળો ઉડાડવા સાથે દીક્ષાની દિવ્ય દુદુંભી વગડાવનાર ચાર છ:રી પાલક યાત્રા સંઘના સંઘપતિ પરિવારોને સૌભાગ્યનું તિલક ધારણ કરાવતા યુગનાયક ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.

ભરતક્ષેત્રે ભારતવર્ષમાં શ્રી શત્રુંજ્ય અને શ્રી ગિરનાર તીર્થ ગરવી ગુજરાત રાજ્યની ધન્યધરાને અનેરૂં ગૌરવ બક્ષી રહ્યાં છે. સાથે સાથે અનેક તીર્થોથી ગુજરાત, મારવાડ અને માળવા આ ત્રણેય પ્રદેશોની ધરતી ધાર્મિક્તા અને દાનવીરતાના વારસાથી ધબકી રહી છે અને ધાર્મિક્તાની છોળો અવિરત ઉડતી રહે છે. આદિકાળથી આ ત્રણેય પ્રદેશોની ભૂમિએ પોતાની આગવી ઓળખ જાળવી રાખી છે. પૂર્વકાળના પરાક્રમી વડવાઓ અને દાનવીરોની જન્મદાત્રી તેમજ ધાર્મિકક્ષેત્રે ઝળકેલી અનેક પ્રતિભાઓને જન્મ આપનાર આ ત્રણેય પ્રદેશોની ધરાની ગૌરવગાથાના ઐતિહાસિક પૃષ્ઠો સોનેરી અક્ષરોએ લખાયેલા છે. તીર્થંકર પરમાત્માઓ ઘણુ કરીને બિહારમાં મોક્ષે પધાર્યા પણ તેમનો મહિમા વરસીતપ, માસક્ષમણ સહિત અનેક કઠોર તપની આરાધના દ્વારા આ ત્રણેય પ્રદેશોમાં વધારાઈ રહ્યો છે. વર્તમાનકાળમાં પણ આ ત્રણેય પ્રદેશોની પ્રજાનો પરમાત્માએ પ્રબોધેલ સંસ્કાર વારસો, ધર્મપ્રિયતા, દાનપ્રિયતા, અનુકંપા, પુણ્યતા, વૈરાગ્યતા, ત્યાગતા, ગુરૂમયતા સમર્પણતા અને શૌર્યતા હજુય અકબંધ જળવાઈ રહેલ છે.

શ્રી શત્રુંજ્ય તીર્થથી શ્રી ગિરનાર તીર્થના છ:રી પાલક સંઘનો સંઘમાળા રોપણ સાથે કાર્યક્રમ સંપન્ન

અમદાવાદ, ઉજ્જૈન અને પિપલોદા ચાતુર્માસ દરમ્યાન ધર્મભક્તિના ઘોડાપુર ઉમટાવનાર છેલ્લા ત્રણ વર્ષથી ધાર્મિક્તાની છોળો ઉડાડવા સાથે દીક્ષાની દિવ્ય દુદુંભી વગડાવનાર યુગનાયક, ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્ વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.એ ખરા અર્થમાં પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.નું સ્વરૂપ ધારણ કરી સંઘપતિ પરિવારોને સૌભાગ્ય તિલક ધારણ કરાવી અનંત પુણ્ય ઉપાર્જન કરાવ્યું છે.

પૂજ્યશ્રીના વરદ્‌હસ્તે પાલિતાણા ખાતે દીક્ષા અંગિકાર કરતા ૨ મુમુક્ષુરત્નો

(૧) સૌભાગ્ય તિલક ધારણ કરનાર સાયલા નિવાસી શા. છોગાલાલજી વરદાજી ફોલામુથા પરિવાર દ્વારા આયોજિત વલ્લભીપુરથી શ્રી શત્રુંજ્ય તીર્થના છ:રી

પાલક સંઘે તા. ૧૧-૧૨-૨૦૧૯ના રોજથી વલ્લભીપુરથી પ્રસ્થાન કરી તા. ૧૪-૧૨-૨૦૧૯ના રોજ શ્રી શત્રુંજય તીર્થ ખાતે પ્રવેશ કર્યો હતો. તા. ૧૫-૧૨-૨૦૧૯ના રોજ સંઘ માળારોપણ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

(૨) રાની સ્ટેશન નિવાસી મુંબઇ સ્થિત શ્રીમતી લીલાદેવી વિમલચંદજી છોગમલજી ચૌહાન પરિવાર દ્વારા આયોજિત શ્રી શત્રુંજય તીર્થથી તા. ૨૧-૧૨-૨૦૧૯ના મંગલમય દિવસે છ:રી પાલક સંઘે પ્રસ્થાન કરી તા. ૪-૧-૨૦૨૦ના રોજ શ્રી ગિરનાર તીર્થમાં વાજતે-ગાજતે પ્રવેશ કર્યો હતો. તા. ૫-૧-૨૦૨૦ના રોજ પહાડ યાત્રા અને તા. ૬-૧-૨૦૨૦ના રોજ સંઘમાળા રોપણ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

સંઘ માળા અવસરે પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ આચાર્યશ્રી એ તેમના પ્રવચનમાં ફરમાવ્યું હતું કે, પુણ્યશાળી આત્મા જ સંઘનું આયોજન કરી સ્વયં અને અન્યોને યાત્રા કરાવવાનું પુણ્ય ઉપાર્જન કરે છે. શ્રી સિદ્ધક્ષેત્રની યાત્રા કરવાથી અનેક જન્મોના પાપ કર્મો કપાઇ જાય છે. જીવનમાં સહુએ આ તીર્થોની ભાવપૂર્વક યાત્રા અવશ્ય કરવી જોઇએ. કેમ કે કહેવાયું છે કે, સોરઠ દેશમાં સંચર્યો ન ચઢ્યો ગઢ ગિરનાર, શત્રુંજય નદી નાહ્યો નહી તેનો એળે ગયો અવતાર. આ મનુષ્ય જન્મને સફળ કરવો હોય તો આ તીર્થોની યાત્રા જીવનમાં એકવાર અવશ્ય કરવી જોઇએ.

શ્રી ગિરનાર તીર્થમાં પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ આચાર્યશ્રી સપરિવારની નિશ્રામાં ૨૦ સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોને તા. ૬-૧-૨૦૨૦ના રોજ વિધિ સહિત વડી દીક્ષા પ્રદાન કરાઈ હતી.

(૩) પારાનિવાસી શ્રી પ્રકાશચંદ્રજી કેસરીમલજી છાજેડ પરિવાર દ્વારા આયોજિત શ્રી અયોધ્યાપુરમ તીર્થથી તા. ૧૫-૧-૨૦૨૦ના મંગલમય દિવસે છ:રી પાલક સંઘે પ્રસ્થાન કરી તા. ૧૮-૧-૨૦૨૦ના રોજ શ્રી શત્રુંજય તીર્થમાં વાજતે-ગાજતે પ્રવેશ કર્યો હતો. તા. ૧૯-૧-૨૦૨૦ના રોજ સંઘમાળા રોપણ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

તા. ૧૯-૧-૨૦૨૦ના રોજ પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ આચાર્યશ્રીના વરદ્હસ્તે મુમુક્ષુરત્ન શ્રી કલ્પકુમાર દોશી અને મુમુક્ષુરત્ના નિર્મળાબેનને વિધિસહિત દીક્ષા પ્રદાન કરાઇ હતી અને નૂતન સાધુ-સાધ્વીજીના નામની ઘોષણા કરાઇ હતી જે નામ અત્રે પ્રસ્તુત છે. શ્રી કલ્પકુમારનું દિક્ષિત નામ મુનિરાજશ્રી રાજયોગવિજયજી મ.સા. તેમજ નિર્મળાબેનનું દિક્ષિત નામ સા. શ્રી તીર્થેશયશાશ્રીજી મ.સા. ઘોષિત કરાયું હતું.

(૪) ઇન્દોર નિવાસી શ્રી મનોહરલાલજી પિપાડા પરિવાર દ્વારા આયોજિત શ્રી અયોધ્યાપુરમ તીર્થથી તા. ૨૫-૧-૨૦૨૦ના મંગલમય દિવસે છ:રી પાલક સંઘે પ્રસ્થાન કરી તા. ૨૮-૧-૨૦૨૦ના રોજ શ્રી શત્રુંજય તીર્થમાં વાજતે-ગાજતે પ્રવેશ કર્યો હતો. તા. ૨૯-૧-૨૦૨૦ના રોજ સંઘમાળા રોપણ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

ઉક્ત છ:રી પાલક સંઘો સંપન્ન કરાવી શ્રી શત્રુંજય તીર્થ ખાતેથી યુગનાયક, ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્ વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારે ડીસા તરફ વિહાર કર્યો હતો.

શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ દર્શન
રાજરાજેન્દ્ર જયંતસેન વિહારધામ ડીસા ખાતે
પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં તા. ૧૩-૨-૨૦૨૦ના રોજ
અંજનશલાકા - પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થનાર છે.

વિશેષ : નેનાવાનગરમાં પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ગુરુમંદિરનું નિર્માણ કરાયું છે. જેની પ્રતિષ્ઠા હેતુ નેનાવાશ્રી સંઘ યુગનાયક ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. પાસે પહોંચ્યો હતો અને ગુરૂમંદિર પ્રતિષ્ઠા હેતુ અને નિશ્રા પ્રદાન કરવા હેતુ આગ્રહ ભરી વિનંતી કરી હતી. નેનાવા શ્રી સંઘની વિનંતીનો સ્વીકાર કરી પૂજ્યશ્રીએ ગુરૂમંદિર પ્રતિષ્ઠા માટે સંવત ૨૦૭૬ના ફાગણ સુદ ૩ ને બુધવાર તા. ૨૬-૨-૨૦૨૦ના રોજ પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન કરાવવા મુહૂર્ત પ્રદાન કર્યું હતું.

શ્રી રાજેન્દ્ર - શાંતિવિહાર મોટેરા (અમદાવાદ) ખાતે યતિન્દ્રવાણી પાક્ષિક વિમોચન સમારોહ સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક સંઘ એક્તા શિલ્પી આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિઠાણાએ ગત તા. ૨૭-૧૨-૨૦૧૯ના રોજ (થરાદ) દુધવાનગરે પધરામણી કરી પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય વિદ્યાચંદ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા સંયમ સ્થવીર યોગિરાજ શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ની પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન કરાવી શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થ ખાતે પધરામણી કરી હતી. શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થમાં ભવ્યાતિભવ્ય ગુરૂ સપ્તમીની ઉજવણી તેમજ તેઓશ્રીના ૪૬ વર્ષ સંયમ પર્યાય નિમિત્તે યોજાયેલ કાર્યક્રમોમાં નિશ્રા પ્રદાન કરી અમદાવાદ મોટેરા ખાતે પધરામણી કરી હતી. શ્રી શાંતિદૂત જૈનોદય ટ્રસ્ટ શ્રી રાજેન્દ્ર શાંતિવિહાર મોટેરા દ્વારા યતિન્દ્રવાણી પાક્ષિક વિમોચન સમારોહનું તા. ૧૯-૧-૨૦૨૦ના રોજ આયોજન કરાયું હતું. શ્રી ભાંડવપુર તીર્થના મુખપત્ર યતિન્દ્રવાણી (પાક્ષિક)ને આધુનિક તકનીકયુક્ત પરિવર્તિત રૂપમાં શ્રી ભાંડવપુર તીર્થ વિકાસ વિશ્વમાં વિસ્તારીત કરવા હેતુ, શ્રી ભાંડવપુર તીર્થમાં સંપન્ન થતાં પ્રત્યેક સામાજિક, ધાર્મિક અને વિકાસોન્મુખી કાર્યોને જન જન સુધી પહોંચાડવા હેતુ, શ્રી ભાંડવપુર તીર્થમાં આયોજિત સંપન્ન થવાવાળી પ્રતિષ્ઠા સંબંધિત આમંત્રણ - નિમંત્રણ આપવા તથા સહુની સહભાગીતા જોડવા હેતુ, સંપૂર્ણ જાલોર જિલ્લા જૈન સંઘ અને શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક ગુજરાત અને માળવા જૈન સંઘોથી સીધો સંપર્ક સ્થાપિત કરવા હેતુ નવી ઉપલબ્ધિની સાથે પ્રસાર સંખ્યામાં અભિવૃદ્ધિ કરવા માટે

૨૫૦૦૦ હજાર પ્રકાશિત કરાઈ હતી.

પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ અને આ સમારોહના મુખ્ય અતિથિ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા તેમજ સમાજના અગ્રણીઓ અને ગુરૂભક્તોની હોંશિલી હાજરી વચ્ચે તા. ૧૯-૧-૨૦૨૦ના રોજ યતિન્દ્રવાણી પાક્ષિક વિમોચન સમારોહ સાનંદ સંપન્ન થયો હતો. તા. ૨૦-૧-૨૦૨૦ના રોજ ગુજરાત રાજ્યના માનનીય મુખ્યમંત્રી શ્રી વિજયભાઈ રૂપાણીના વરદ્ હસ્તે યતિન્દ્રવાણી પાક્ષિક અખબારનું વિમોચન કરાયું હતું.

આ પ્રસંગે સંઘ અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા તથા સમાજના વક્તાઓએ પ્રાસંગિક ઉદ્દ્બોધન કર્યું હતું અને પૂજ્યશ્રીએ પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. નાસ્તા-ભોજનની સુંદર વ્યવસ્થા કરાઈ હતી.

(અમદાવાદ) રાજનગરે વિશેષરૂપથી ગુરૂસપ્તમીની ભવ્ય ઉજવણી

શ્રી સૌધર્મ બૃહતતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક શ્રી સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના આયોજન દ્વારા શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાન મંદિર હાથીખાના, રતનપોળ અમદાવાદ ખાતે સંવત ૨૦૭૬ના પોષ સુદ ૭ ને ગુરૂવાર તા. ૨-૧-૨૦૨૦ના રોજ તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય કલિકાલ કલ્પતરૂ વિશ્વપૂજ્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ની ૧૯૩મી જન્મ જયંતિ અને ૧૧૩મી સ્વર્ગારોહણ તિથિ નિમિત્તે વિશેષ રૂપથી ગુરૂસપ્તમીની ભવ્યાતિભવ્ય ઉજવણી કરાઈ હતી.

આ અવસરે ૭-૩૦ કલાકથી ૯-૩૦ કલાક દરમ્યાન ગુરૂદેવોની પક્ષાલ પૂજા અને કેસર પૂજા કરવાનું આયોજન કરાયું હતું. પૂજા કરવાવાળા ભાગ્યશાળી ગુરૂભક્તોનું ચાંદીની ગીનીથી બહુમાન કરાયું હતું. સવારથી રાત્રિ સુધીના કાર્યક્રમમાં નવકાર મહામંત્રના જાપ, ગુરૂદેવની પ્રતિમાને ભવ્ય આંગી, શ્રી ગુરૂ મહારાજ રચિત સ્નાત્ર પૂજા, આયંબિલ તપ, રાત્રિભક્તિ ભાવનાના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. બપોરે સરદાર પટેલ સેવા સમાજ હોલ, મીઠાખળી ખાતે શ્રી સંઘ સ્વામીવાત્સલ્યનું આયોજન કરાયું હતું જેનો લાભ શ્રી ગુરૂ ભક્ત પરિવાર અમદાવાદે લીધો હતો. શ્રી નવકાર મંત્રના જાપ કરવાવાળા આરાધકોના બહુમાનનો લાભ વોરા મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ પરિવારે લીધો હતો. આયંબિલ આરાધનાનો લાભ વોરા શાંતિલાલ દીપચંદભાઈ પરિવારે લીધો હતો. આયંબિલ તપના આરાધકોના બહુમાનનો લાભ અદાણી ચંચળબેન છોટાલાલ વીરચંદભાઈ પરિવારે લીધો હતો. શ્રી ગુરૂદેવની પ્રતિમાની આંગી રચનાનો લાભ વીરવાડીયા શાંતાબેન બાબુલાલ વીરચંદભાઈ પરિવારે લીધો હતો. શ્રી ગુરૂદેવ રચિત સ્નાત્ર પૂજાનો લાભ સંઘવી નરપતલાલ વીરચંદભાઈ

પરિવારે લીધો હતો. શ્રી પૂજામાં પ્રભાવનાનો લાભ સંઘવી ભીખાલાલ સ્વરૂપચંદભાઈ પરિવારે લીધો હતો. શ્રી ગુરૂમંદિર સુશોભનનો લાભ દેસાઈ છોટાલાલ અમુલખભાઈ પરિવારે લીધો હતો. શ્રી ગુરૂમંદિર લાઈટ - ડેકોરેશનનો લાભ વોરા હીરાલાલ શામજીભાઈ (સુવાસ) પરિવારે લીધો હતો. રંગમંડપનો લાભ આસોપાલવ પરિવારે લીધો હતો. રાત્રિ ભક્તિ ભાવનાનો લાભ દોશી વીજુબેન બબલદાસ ઓતમચંદ પરિવારે લીધો હતો. રાત્રિભક્તિ ભાવનામાં ૯-૩૦ કલાક સુધી આવનાર ગુરૂભક્તને વ્યક્તિ દીઠ ૧ લકી ડ્રોની કુપન અપાઈ હતી. અને લકી ડ્રોમાં વિજેતાઓને રૂા. ૧૦૦૦થી બહુમાન કરાયું હતું. ઉમટી પડેલ શ્રદ્ધાવંત ગુરૂભક્તોએ આ પ્રસંગને દીપાવી દીધો હતો. મોટી સંખ્યામાં આયંબિલની તપશ્ચર્યા થઈ હતી.

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ અમદાવાદની નેત્રદિપક કામગીરી

સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની વૈયાવચ્ચ ભક્તિ માટે હરતું ફરતું સરનામું શ્રી ભરતભાઈ વોરા (લાડુ)

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ અમદાવાદની નેત્રદિપક કામગીરીની પ્રખ્યાતિ પ્રથમથી જ રહેલી છે. અમદાવાદના દેરાસરમાં કેસર, સુખડ મોકલાવવું, સાધર્મિક ભક્તિ, જીવદયા, ધાર્મિક કાર્યક્રમો વિગેરે આયોજનને ચાર ચાંદ લગાવવાની અમદાવાદ પરિષદની ભાવનાને સાકાર કરવા અને અદ્‌ભુત સફળતા અપાવવા પરિષદની સ્થાપના સમયથી સુકાન સંભાળતા પ્રમુખ, પદાધિકારીઓ અને કર્તવ્યનિષ્ઠ કાર્યકરોએ ભારે જહેમત ઉઠાવી ખરા અર્થમાં પરિષદ અમદાવાદની નેત્રદિપક કામગીરીને બુલંદ બનાવી છે. વર્તમાન સમયમાં ગુજરાત - રાજસ્થાન - માળવા - દક્ષિણ ભારત ઉત્તર ભારત સમસ્ત શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં વૈયાવચ્ચ ભક્તિ માટે અનુમોદનીય પ્રશંસા થઈ રહી છે. વર્તમાન પરિષદ અમદાવાદ પ્રમુખ વૈયાવચ્ચ સેવા પુરુષ શ્રી ભરતભાઈ હીરાલાલ વોરા (લાડુ) સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની વૈયાવચ્ચ ભક્તિ માટે હરતું ફરતું સરનામું બની ગયું છે. કારણ કે કોઈપણ સમુદાયના સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોને શારીરિક સેવાની જરૂર હોય ત્યારે શ્રી ભરતભાઈ લાડુને જાણ કરે છે અને લાડુ એક મિનીટનો પણ વિલંબ કર્યા વિના તેમની સેવામાં હાજર થઈ જાય છે.

આચાર્ય ભગવંત શ્રી નરરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સમુદાયના ૮૨ વર્ષની ઉંમરના ૬૫ વર્ષના દીક્ષા પર્યાયી સાધ્વીજીશ્રી ગુણોદયાશ્રીજી મ.સા.ને કેન્સરનો જીવલેણ રોગ લાગુ પડતાં નિષ્ણાંત તબીબોની સલાહ મુજબ ઓપરેશન કરવું પડે તેવી પરિસ્થિતિ સર્જાઈ હતી, પરંતુ સાધ્વીજી મ.સા.એ ઓપરેશન કરાવવાની ના પાડી દેતાં

શ્રી ભરતભાઈ લાડુને જાણ થઈ કે કેન્સર માટે મધ્યપ્રદેશના છેવાડે આવેલ છીંદવાડામાં દવા મળે છે તે માટે પરિષદ અધ્યક્ષશ્રી રમેશભાઈ ધરૂ અને પરિષદ પૂર્વ મહામંત્રીશ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલનો મોબાઈલ દ્વારા સંપર્ક કર્યો હતો અને શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલે નાગપુર સ્થિત શ્રી નલીનજી સંઘવીનો મોબાઈલથી સંપર્ક કરાવ્યો હતો. શ્રી ભરતભાઈ લાડુ એક કલાકનો વિલંબ કર્યા વિના ફ્લાઈટ દ્વારા નાગપુર પહોંચી ગયા હતા જ્યાં શ્રી નલીનભાઈ સંઘવીએ ભાવુક હૃદયે શ્રી ભરતભાઈ લાડુનો આદર સત્કાર કર્યો હતો અને શ્રી નલીનભાઈ સંઘવી અને શ્રી ભરતભાઈ લાડુ તેમની કાર લઈને છીંદવાડા પહોંચી ગયા હતા. છીંદવાડાના વૈદરાજ શ્રી નવિનભાઈ અને આયુર્વેદિક દવાવાળા શ્રી અશોકભાઈએ મીઠા આવકાર સાથે દવા આપી હતી અને દવાના રૂપિયા લેવાનો ઈન્કાર કર્યો હતો. ત્યારબાદ શ્રી નલીનભાઈના આગ્રહભર્યા આવકારને વશ થઈ શ્રી ભરતભાઈ લાડુએ નાગપુર શ્રી નલીનભાઈના નિવાસ સ્થાને રાત્રિ રોકાણ કરી સવારની નવકારશીનો લાભ આપી શ્રી ભરતભાઈ લાડુ ફ્લાઈટ દ્વારા અમદાવાદ પરત ફરી સાધ્વીજી ભગવંતને દવા લેવાનું શરૂ કરાવી દીધેલ હતો. અને અત્યારે સવાર-સાંજ સાધ્વીજી મ.સા. તબિયતના સમાચાર પૂછવા જવાનું ભુલતા નથી. જ્યારે શ્રી નેમિસૂરિ સમુદાયના ૮૦ વર્ષીય ૬૨ વર્ષના દીક્ષા પર્યાયી આચાર્ય ભગવંત શ્રી શ્રેયાંસચંદ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા.નું સ્વાસ્થ્ય કથળતાં તા. ૧૩-૧૨-૨૦૧૯ના રોજ એચ.સી.જી. હોસ્પિટલમાં દાખલ કરાયા હતા. ચાર દિવસની સારવાર બાદ શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ આરાધના ભવનમાં સ્થિરતા કરાવેલ છે અને સંપૂર્ણ ટ્રીટમેન્ટ પૂર્ણ ન થાય ત્યાં સુધી શ્રી ભરતભાઈ લાડુ અને પરિષદ સાથીદારો પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંતની વૈયાવચ્ચ સેવામાં ખડે પગે ઉભા રહે છે.

શ્રી નેમિસૂરિ સમુદાયના ૭૫ વર્ષીય ૨૩ વર્ષ દીક્ષા પર્યાયી મુનિરાજશ્રી વજ્રયશવિજયજી મ.સા.એ પણ શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ આરાધના ભવન, સુંદરવન ફ્લેટ સામે મીઠાખળી અમદાવાદ ખાતે સ્થિરતા કરી હતી. અને તા. ૪-૧-૨૦૨૦ના રોજ દેવલોકગમન કરી ગયા હતા. જેના ચઢાવા અને પાલખીયાત્રા અને અગ્નિસંસ્કારની તમામ જવાબદારી અમદાવાદ પરિષદે ઉઠાવી હતી. અમદાવાદ પરિષદના પ્રમુખ શ્રી ભરતભાઈ લાડુની અનુમોદનીય વૈયાવચ્ચ સેવાપુરુષની પદવીથી અલંકૃત કરી અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી તરીકેની વરણી કરી મનોનયન પત્ર અર્પણ કરી અધિવેશન દરમ્યાન બહુમાન કરાયું હતું.

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન તરૂણ પરિષદ મોટેરા કાર્યકરણની રચના

અધ્યક્ષ : જૈનમ (પિંટુ) પ્રકાશભાઈ વોહેરા, ઉપાધ્યક્ષ : વર્ષિલ શૈલેષભાઈ અદાણી, મહામંત્રી : યશ દિનેશભાઈ મોરખીયા, ખજાનચી : જેવિલ વિજયભાઈ વોહેરા, સહમંત્રી : વિરાજ મનીષભાઈ દોશી, પ્રચાર મંત્રી : પક્ષાલ મહેન્દ્રભાઈ અદાણી

નવયુવક પરિષદ - તરૂણ પરિષદ અમદાવાદ દ્વારા જેલના કેદીઓને ધાબળાનું વિતરણ

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ અને તરૂણ પરિષદ અમદાવાદ દ્વારા અમદાવાદની સાબરમતી મધ્યસ્થ સેન્ટ્રલ જેલના કેદી ભાઈ-બહેનોને ૧૧૦૦ ધાબળાનું વિતરણ કરાયું હતું અને ૧૦૦૦ નોટબુક તથા ૧૦૦૦ પેનનું પણ વિતરણ કરાયું હતું. કેદી ભાઈ-બહેનોમાં ધર્મભાવના જાગૃત થાય તેવા શુભ આશયથી સંધ્યાભક્તિ કરવા માટે સાઉન્ડ સિસ્ટમ માઈક્રોફોન સ્પીકર આપવામાં આવ્યું હતું. અમદાવાદ પરિષદ દ્વારા વૈયાવચ્ચ સેવા પુરૂષ પ્રમુખશ્રી ભરતભાઈ લાડુ, શ્રી પેલેસભાઈ મોરખીયા, શ્રી બિરેનભાઈ મોરખીયા (લાખણી), શ્રી રીંકિનભાઈ અદાણી, શ્રી શૈલેષભાઈ સંઘવી પરિષદના વરિષ્ઠ શ્રી અરવિંદભાઈ વોરા (ગાંધીધામ), શ્રી ચંદ્રકાન્તભાઈ વોહેરા (અનુપમ), તરૂણ પરિષદના કર્તવ્યનિષ્ઠ કાર્યકરો અને આરમોર ફાઉન્ડેશનનો વિશેષ સહયોગ રહ્યો હતો.

સેન્ટ્રલ જેલ પ્રશાસન દ્વારા વિશેષ સમારોહનું આયોજન કરાયું હતું. જેમાં ગુજરાત ડાયરેક્ટર ઓફ જનરલ શ્રી રાવ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. જેલ સુપ્રિટેન્ડેન્ટ ડો. શ્રી મહેશભાઈ નાયકે જણાવ્યું હતું કે, છેલ્લા બે વર્ષથી શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ અને અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ અમદાવાદ દ્વારા પર્વાધિરાજ પર્યુષણ પર્વ દરમ્યાન બંદીવાન ભાઈ-બહેનો માટે ભક્તિનો માહોલ બની ગયો છે. બંદીવાન ભાઈ-બહેનોમાં ઘણો સુધારો આવી ગયો છે. આવી રીતે અમને જૈન સમાજનો સહકાર મળતો રહે તેવી શુભેચ્છા.

પાટણ નગરે મુનિરાજશ્રીના દર્શનાર્થે પધાર્યા હાઈકોર્ટના ન્યાયાધિશ

ગુજરાતના પાટણ નગરમાં પંચાસરા જિનાલય નજીક સ્થિત ત્રિસ્તુતિક જૈન ઉપાશ્રયમાં બિરાજમાન મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. આદિઠાણાના દર્શનાર્થે છત્તીસગઢ હાઈકોર્ટના ન્યાયાધિશ ગૌતમજી ચોરડીયા પધાર્યા હતા. આ પ્રસંગે મુનિરાજશ્રી અને ન્યાયાધિશ વચ્ચે અનેક વિષયો પર ધાર્મિક ચર્ચા થઈ હતી. મુનિરાજશ્રીએ આશીર્વાદ પ્રદાન કરતાં કહ્યું કે, ન્યાયાધિશ પદ પર રહો ત્યાં સુધી કોઈ નિર્દોષ વ્યક્તિને અન્યાય ન થાય એ વાતનું ખાસ ધ્યાન રાખજો. મુનિરાજશ્રીએ ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મહારાજા દ્વારા લિખીત ''મનવા પલ પલ બીતી જાય'' અને મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મહારાજ સંકલિત ''ગુરૂ'' સાહિત્ય અર્પણ કર્યા હતા.

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ અમદાવાદ

કાર્યકરણી કમિટિ

પરિષદ સંસ્થાપક	:	શ્રી ચંપકલાલ બબલદાસ વોરા
સલાહકાર સમિતિ	:	શ્રી ચંપકલાલ બી. વોરા મો. ૯૩૭૬૧ ૮૬૪૯૭
,,		શ્રી અરવિંદભાઇ સી. દેસાઇ
,,		શ્રી હીરાભાઇ એલ. ભણસાળી
,,		શ્રી પંકજભાઇ બી. વીરવાડીયા
,,		શ્રી અરવિંદભાઇ એમ. ધરૂ
,,		શ્રી ભરતભાઇ બી. વોહેરા
,,		શ્રી મહેન્દ્રભાઇ સી. વોહેરા
,,		શ્રી ધીરૂભાઇ બી. પરીખ
,,		શ્રી હસમુખભાઇ એસ. ભણસાળી
,,		શ્રી ચંદ્રકાન્તભાઇ એ. વોહેરા
,,		શ્રી અરવિંદભાઇ કે. વોહેરા
,,		શ્રી ભરતભાઇ જે. સંઘવી
,,		શ્રી સુરેશભાઇ જે. દેસાઇ
,,		શ્રી ચીનુભાઇ બી. મોરખીયા
,,		શ્રી દિલીપભાઇ એમ. સંઘવી
અધ્યક્ષ	:	શ્રી ભરતભાઇ એચ. વોહેરા (લાડુ) મો. ૯૯૯૮૧ ૫૩૦૪૯ (રાષ્ટ્રીય પરિષદ મહામંત્રી, વૈયાવચ્ચ સેવાપુરુષ)
ઉપાધ્યક્ષ	:	શ્રી સંજયભાઇ કે. અદાણી
મંત્રી	:	શ્રી ભરતભાઇ (અશ્વમેઘ)
સહમંત્રી	:	શ્રી પેલેસભાઇ સી. મોરખીયા
સહમંત્રી	:	શ્રી કેયુરભાઇ દોશી
ખજાનચી	:	શ્રી મહેન્દ્રભાઇ વોહેરા
ખજાનચી	:	શ્રી હસમુખભાઇ એ. વોહેરા (મંગલસૂત્ર)
સંગઠન મંત્રી	:	શ્રી હસમુખભાઇ સી. અદાણી
સંગઠન મંત્રી	:	શ્રી રોહિતભાઇ બી. સંઘવી
શિક્ષણ મંત્રી	:	શ્રી રાહુલભાઇ બી. પરીખ
શિક્ષણ મંત્રી	:	શ્રી ચિંતનભાઇ કે. વોરા
શિક્ષણ મંત્રી	:	શ્રી બિરેન પી. મોરખીયા
પ્રચાર મંત્રી	:	શ્રી રસિકભાઇ વી. પરીખ (વીરક્ષેત્રની વાણી)
પ્રચાર મંત્રી	:	શ્રી રાજેન્દ્રભાઇ

શ્રી શત્રુંજયથી ગિરનાર તીર્થ છ:રી પાલક સંઘ પ્રસંગે...

શાશ્વત સંઘોત્સવ - અનુમોદના ગીત

રચના : પુણ્ય સમ્રાટ શ્રીમદ્વિજય જયન્તસેન સૂરીશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્ય
પૂ. મુનિ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા.

એક ગઢે આદિનાથ, એક ગઢે નેમિનાથ
શોભે છે સોરઠ દેશે, સૃષ્ટિના શણગાર
ચાલો રે જઈએ, ગઢ ગિરનાર,
નયણે નિરખીએ, નેમિ નિર્વિકાર
શત્રુંજય તીરથ, તારણહાર...
અંતરમાં વસિયા આદિ અવિકાર...
ઋષભ જિણંદા પ્યારા, પૂર્વ નવ્વાણું વારા, પાવન કર્યો ગિરિરાજ... હોડડડ
મહીમા સીમંધર ગાવે, કોઈ ના તોલે આવે, સર્વ તીર્થોમાં અધિરાજ... હોડડડ
હોંશે-હોંશે જે ચડતા, ભવ કૂપે ના પડતાં...
દાદાને ભેટતા હૈયે, આનંદ અપરંપાર....
સિદ્ધાચલ તીરથ તારણહાર, અંતરમાં વસિયા આદિ અવિકાર...
ચાલો રે જઈએ રે ગઢ ગિરનાર, નયણે નીરખીએ નેમિ નિર્વિકાર... ૦૧
શ્યામ સલૂણા સ્વામી, આતમ કલ્યાણના કામી, રાજુલ રમણીના હતા પ્રાણ... હોડડડ
ગરવો ગિરનાર ગાજે, કલ્યાણકભૂમિ છાજે, દીક્ષા-કેવલ-નિર્વાણ... હોડડડ
સુંદર સહસાવન સોહે, પરમશાંતિ મન મોહે
આગામી ચોવીસીની મોક્ષભૂમિ મનોહાર...
ચાલો રે ચાલો ગઢ ગિરનાર, નયણે નિરખીશું નેમિ નિર્વિકાર
વિમલાચલ તીરથ તારણહાર, અંતરમાં વસિયા આદિ અવિકાર... ૦૨
કૃપા રાજેન્દ્ર વરસે, ગુરૂજયન્ત હરશે, નિત્યસેનસૂરિ ઉપકાર... હોડડડ
શાશ્વત સંઘોત્સવ પ્યારો, વિમલ લીલા પરિવારો, ભરિયો પુણ્ય ભંડાર... હોડડડ
જયન્તગિરિથી આવે, નિપુણ વાણીથી ગાવે...
શાશ્વત ગિરિનો મહિમા, ગાતા ન આવે પાર...
ચાલો રે ચાલો ગઢ ગિરનાર, સંયમના શમણા થશે સાકાર....
આવ્યા રે આવ્યા ગઢ ગિરનાર, શોભે છે સુંદર નેમ દરબાર
થયો છે જાણે ધન્ય અવતાર, બન્યો છે આજે ધન્ય અવતાર... ૦૩

સદ્ગુરૂ સમર્પણમ્

મારા ગુરૂ મહાન છે...

(ગતાંકથી ચાલું...)

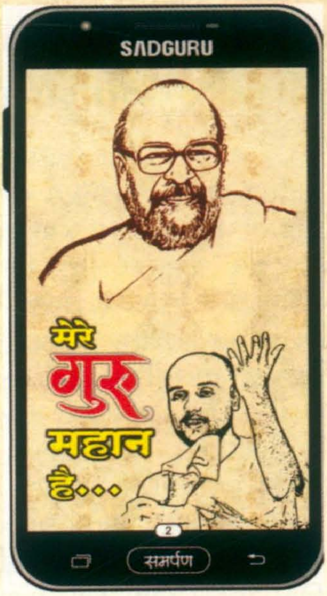

(૧૧૫) ગુરૂનું વિસ્મરણ પણ ગુરૂવિયોગ જ છે.

(૧૧૬) ગુરૂની દૃષ્ટિમાં રહેવાવાળાની સૃષ્ટિ બદલાઇ જાય છે.

(૧૧૭) ગુરૂ પૃથ્વી ઉપર સાક્ષાત પરમાત્માનું અવતરણ છે.

(૧૧૮) ગુરૂના પ્રતિ હંમેશા વિનમ્રભાવ રાખવાવાળા અંહથી મુક્ત થઇ શકે છે.

(૧૧૯) ગુરૂ રાખે છે એના પર હક, જે નથી કરતો ગુરૂ પર શક.

(૧૨૦) ગુરૂ જેના દિલમાં છે તે ક્યારે એકલો નથી હોતો.

- પૂર્ણ

સુવાક્ય

- ઘર મંદિર અને ઘર સભા એ શ્રાવકના ઘરની શોભા છે.
- પ્રભુની આજ્ઞા વિરુદ્ધની પ્રવૃત્તિ એટલે કેસરના ચાંલ્લા પર કોલસાની ભૂકી
- જીવનમાં મેળવો નીતિથી.. ભોગવો રીતિથી અને આપો પ્રીતિથી
- આંસુ જીવનનું પાસું પલ્ટી શકે છે પણ એ આંસુ મગરના નહીં જીગરના જોઇએ
- લાકડાની હોળીને પાણી ઠારે, કાળજાની હોળીને જિનવાણી ઠારે.
- હાડકા વગરની જીભે ઘણાના હાડકાં ભાગ્યા છે.
- કરેલા કામ અને દીધેલા દાન કદી નિષ્ફળ જતાં નથી.
- પૈસાના અભાવે ૧% દુઃખી છે પણ સમજના અભાવે ૯૯% દુઃખી છે.
- કોઈની ટીકા કરવા કરતાં વખાણ કરો, કારણ કે સારા શબ્દોની કિંમત અમૂલ્ય છે.
- એવો ધંધો કદી ન કરશો કે કુટુંબની શાંતિ હણાઇ જાય.
- બીજાનું હિત કરવા સમાન કોઇ શ્રેષ્ઠ ધર્મ નથી અને બીજાને પીડા આપવા સમાન કોઇ અધર્મ નથી.
- ઈર્ષા કરનારને સૌથી પહેલા સગા માનજો.
- દરેક પ્રત્યે આદરભાવ રાખો તો તમને સદ્ભાવ મળશે.
- નીતિથી જે મેળવીશ તે ફળશે, પ્રપંચથી જે મેળવીશ તે ફુટી નીકળશે.
- વિવેક વગરનું જીવન બ્રેક વગરના વાહન જેવું છે.

શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમ મોહનખેડા ખાતે

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ સંચાલિત શ્રુત જ્ઞાનાર્જન યોજનાનો શુભારંભ

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ અને વર્તમાનાચાર્ય ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પાવન પ્રેરણાથી શ્રુત જ્ઞાનાર્જન યોજનાનો શુભારંભ પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી પુણ્યદર્શનાશ્રીજી મ.સા., પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી દર્શિતકલાશ્રીજી મ.સા., પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી અનેકાંતલતાશ્રીજી મ.સા., પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાના પાવનકારી સાનિધ્યમાં પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઈ ધરૂ, યોજનાના લાભાર્થીશ્રી રમેશભાઈ વોરા (નડીઆદ)ના કરકમલોથી સંપન્ન થયો હતો. સાધ્વીજી ભગવંતોના મંગલાચરણ બાદ શ્રી રમેશભાઈ ધરૂ, શ્રી રમેશભાઈ વોરા (નડીઆદ), શ્રી મનોહરલાલજી પુરાણિક, પરિષદ રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી શ્રી સુધિરજી લોઢા, કોષાધ્યક્ષ શ્રી ધરમચંદજી બોહરા, શિક્ષામંત્રી શ્રી ભરતભાઈ વોરા, પ્રાંતિય અધ્યક્ષ શ્રી રાજેન્દ્રજી દંગવાડાવાળા, રાષ્ટ્રીય મહિલા પરિષદ અધ્યક્ષ આશાજી કટારીયા, પ્રાંતિય અધ્યક્ષ નિશાજી બનવટ વિગેરે દ્વારા દીપ પ્રજ્જવલન વિધિ સંપન્ન કરાઈ હતી. પૂ.સા. શ્રી પુણ્યદર્શનાશ્રીજી મ.સા.એ તેમના આશીર્વચનમાં પરિષદના માધ્યમથી માનવસેવા અને પરમાર્થના કાર્યો દ્વારા પરિષદનું ગૌરવ વધારવા માટે જોર આપ્યું હતું. પૂ. સા. શ્રી દર્શિતકલાશ્રીજી મ.સા.એ સંઘ-સમાજ માટે સમયનું અમૂલ્ય યોગદાન દેવા સાથે તેની પ્રગતિ માટે પોતાના દાયિત્વને નિભાવવાની પ્રેરણા આપી હતી. પૂ. સા. શ્રી અનેકાંતલતાશ્રીજી મ.સા.એ સ્વાધ્યાય પર જોર આપતાં કહ્યું હતું કે, પશ્ચિમ સંસ્કૃતિને છોડી અધ્યાત્મના માર્ગે ચાલવાની પ્રેરણા આપી હતી. પૂ. સા. શ્રી અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા.એ જ્ઞાનને જીવનની અક્ષય સંપત્તિ બતાવી જીવનમાં એની મહત્તાને પ્રતિપાદન કર્યું હતું. યોજનાના લાભાર્થીશ્રી રમેશભાઈ વોરા (નડીયાદ)નું સ્વાગત કરાયું હતું. રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી શ્રી સુધિરજી લોઢાએ તેમના પ્રવચનમાં અજ્ઞાનતાના ચાલતા આત્મામાં રહેલા વિકારોને જ્ઞાનાર્જનના માધ્યમથી દૂર કરી જીવનને જ્યોતિર્મય બનાવવાની વાત કરી હતી.

શ્રુત જ્ઞાનાર્જન યોજનામાં પ્રયુક્ત સમસ્ત સામગ્રીઓનું વિમોચન અતિથિઓ દ્વારા કરાયું હતું. શ્રુત જ્ઞાનાર્જન યોજનાના બારામાં વિસ્તૃત જાણકારી આપતા શ્રી રમેશભાઈ ધરૂએ બતાવ્યું કે, યોજનાને એવી રીતે તૈયાર કરવામાં આવેલ છે કે, ચરણબદ્ધ રૂપથી બાળકોને ગુરૂવંદન, સામાયિક, ચૈત્યવંદનવિધિ, દેવદર્શનવિધિ, બે પ્રતિક્રમણ અને પાંચ પ્રતિક્રમણ વિગેરે કંઠસ્થ થઈ જાય અને તે સંઘમાં વિભિન્ન અવસરો પર વિભિન્ન ધાર્મિક ક્રિયાઓ પ્રતિક્રમણ વિગેરે કરાવી શકે. જિનશાસન સદા જયવંત રહે. કાર્યક્રમનું સંચાલન રાષ્ટ્રીય મંત્રી શ્રી શાંતિલાલજી ગોખરૂએ અને આભારવિધિ રાષ્ટ્રીય સંગઠન મંત્રી શ્રી રાજેશજી બાગરેચાએ કર્યું હતું.

પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી પૂર્ણકિરણાશ્રીજી મ.સા.નું પાલડી અમદાવાદ ખાતે દેવલોક ગમન

માનવ કિડીયારાથી ઉભરાતી આ વિશાળ દુનિયા પર પ્રતિક્ષણ માનવ જન્મ ધારણ કરે છે અને અસંખ્ય લોકો મૃત્યુને ભેટે છે જેની કોઈ ખાસ નોંધ પણ લેવાતી નથી. પરંતુ જ્યારે કોઈ મહામાનવ અને તેમાંય આત્માના કલ્યાણ માટે સંસારની માયાને ત્યાગી સાધ્વીજીની પદવી ધારણ કરેલ કોઈ સંત કે સાધ્વીજી ભગવંત આ દુનિયાને આખરી અલવિદા કરી દે છે ત્યારે હજ્જારો આંખો આંસુઓ વહાવવા માંડે છે. આવા જગદંબા સ્વરૂપ મહાસતીઓની વિદાય ઘણી વસમી હોય છે. કંઈક આવો જ શોક તેમની સુશિષ્યાઓ, અમદાવાદના શ્રદ્ધાવંત ગુરૂભક્તો સહિત સમસ્ત શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના ભક્તોને વેઠવાનો કપરો દુ:ખદ દિવસ તા. ૧૧-૧-૨૦૨૦ના રોજ આવ્યો હતો.

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર યુગનાયક ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીની ૫૮ વર્ષનો દીક્ષા પર્યાય ધરાવતા પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી પૂર્ણકિરણાશ્રીજી મ.સા.એ તા. ૧૧-૧-૨૨૦ના રોજ સવારે ૬ કલાકે સમાધિપૂર્વકની અવસ્થામાં આંખો બંધ કરી દઈ આ દુનિયાને આખરી અલવિદા કરી દેતાં સમસ્ત ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના ભક્તોના દિલમાં આઘાત પહોંચ્યો હતો. સ્વ. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંત સન ૨૦૧૯ના વર્ષનું ચાતુર્માસ સંપન્ન કરી તેમની સુશિષ્યાઓ સાથે શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ આરાધના ભવન પાલડી અમદાવાદ ખાતે સ્થિરતા કરી રહ્યા હતા. ઘણા સમયથી નાદુરસ્ત સ્વાસ્થ્ય સામે ઝઝુમી તા. ૧૧-૧-૨૦૨૦ની વહેલી સવારે આરાધના ભવન અમદાવાદ ખાતે અંતિમ શ્વાસ લીધો હતો અને સમાધિપૂર્વક દેવલોકગમન કરી ગયા હતા. સ્વર્ગસ્થ સાધ્વીજી ભગવંતના અંતિમ દર્શન માટે અમદાવાદના ટ્રસ્ટી મંડળ સહિત ભક્તોની ભીડ જામી હતી.

તા. ૧૧-૧-૨૦૨૦ના રોજ બપોરે ૩-૪૫ કલાકે સ્વ. સાધ્વીજી શ્રી પૂર્ણાકિરણાશ્રીજી મ.સા.ની અંતિમયાત્રા (પાલખી) બેન્ડવાજાની સુરાવલીઓ વચ્ચે નીકળી હતી. જે અંતિમ યાત્રામાં જનમેદની ઉભરાઈ ગઈ હતી. સ્વ. સાધ્વીજી ભગવંતની અંતિમ યાત્રા (પાલખી) પાલડીના ઉપાશ્રયે થઈ મુખ્ય માર્ગો પર ફરી વી.એસ. હોસ્પિટલ નજીક મુક્તિધામ ખાતે પહોંચી હતી. ત્યાં અગ્નિદાહના લાભાર્થીવોરા બબીબેન રાજમલભાઈ બાદરમલભાઈ પરિવાર દ્વારા સકળ સંઘની ઉપસ્થિતિમાં સન્માનપૂર્વક અગ્નિ સંસ્કાર કરાયા હતા.

શ્રી ભરતપુર તીર્થ ખાતે ગુરૂ સપ્તમીની ઉજવણી અને પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ સંપન્ન

જે ધન્ય ધરા પર તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.એ જન્મ ધારણ કર્યો હતો અને દીક્ષા પૂર્વે પ્રતિ રોજ જ્યાં પૂજા કરતા હતા તે જિનાલયનો જિર્ણોદ્ધાર પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી થયો છે એવા પ્રાચીન પ્રકટ પ્રભાવી શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ ભગવાન જિનાલયનો પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ સંપન્ન થયો હતો.

શ્રી સૌધર્મ બૃહતતપોગચ્છીય જૈન શ્વે. શ્રી સંઘ ભરતપુર (રાજ.)ના તત્વાધાનમાં પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર યુગનાયક, ધર્મ દિવાકર, ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીપૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી સંયમરત્નવિજયજી મ.સા., પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી ભુવનરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણાની નિશ્રામાં તા. ૨-૧-૨૦૨૦ના રોજ ભવ્યાતિભવ્ય રૂપે ગુરૂ સપ્તમીની ઉજવણી કરાઈ હતી. ત્યારબાદ તા. ૫-૨-૨૦૨૦ થી તા. ૭-૨-૨૦૨૦ દરમ્યાન ત્રિદિવસીય ભવ્ય મહોત્સવ સહિત સંવત ૨૦૭૬ના મહાસુદ ૧૩ ને શુક્રવાર તા. ૭-૨-૨૦૨૦ના મંગલમય દિવસે પ્રાચીન પ્રકટ પ્રભાવી શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ ભગવાનની વાજતે-ગાજતે ઉમંગી ઉત્સાહ સાથે પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થઈ હતી.

ભાવભીની હાર્દિક શ્રદ્ધાંજલિ

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સુરતના પૂર્વ પ્રમુખ

શ્રી મફતલાલ મંચ્છાચંદભાઇ સંઘવીનું

(૯૦ વર્ષીય) તા. ૩-૧-૨૦૨૦ના રોજ સુરત ખાતે દુઃખદ અવસાન થયેલ છે. જે સદ્‌ગત આત્માને પ્રભુ ચિર શાંતિ અર્પે એજ અભ્યર્થના સહ...

સંઘવી મફતલાલ મંચ્છાચંદભાઇને

શાશ્વત ધર્મ - ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર - સુરેશ સંઘવી અંતકરણપૂર્વક ભાવભીની હાર્દિક શ્રદ્ધાંજલિ પાઠવે છે.

અ.ભા. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ તથા અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ પરિવારનો આભાર

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર યુગનાયક ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની પાવનકારી નિશ્રામાં તા. ૯/૧૦ નવેમ્બર ૨૦૧૯ દરમ્યાન પિપલોદા નગરે ચારેય પરિષદનો હિરક જયંતિ રાષ્ટ્રીય અધિવેશનનો કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. દેવાધિદેવ શ્રી મહાવીર સ્વામી ભગવાનની અસીમ કૃપા, દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મહારાજા, પરિષદ સંસ્થાપક આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા., પરિષદ પ્રણેતા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ અને વર્તમાન ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - આચાર્યદેવ શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી શ્રી ચેતનજી કાશ્યપ, શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા, શ્રી શાંતિલાલજી રામાણી, શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢા, શ્રી જે.કે. સંઘવીના માર્ગદર્શન, પ્રકાશક શ્રી રમેશજી ધરૂ, પ્રકાશ સમિતિ શ્રી બ્રજેશજી બોહરા- શ્રી રાજેશજી બાગરેચા અને શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલ દ્વારા સંપાદિત અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ દ્વારા વર્ષ ૨૦૧૩ થી ૨૦૧૯ના વર્ષ સુધીની પરિષદ ગૌરવગાથા નામક આકર્ષક ફોર કલર દળદાર પુસ્તક પ્રકાશિત કરાઈ છે, જેમાં પરિષદ સ્થાપનાથી આજ સુધીની અક્ષરસ માહિતી અપાઈ છે જે અનુમોદનીય છે. ઉલ્લેખનીય છે કે આ બુકમાં ''ગુર્જર જૈન જ્યોત''ની લેખિતમાં તસ્વીર સાથે કદર કરી અમારો ઉત્સાહ વધાર્યો છે અને બહુમાનરૂપી સિલ્ડ અર્પણ કરેલ છે તે બદલ શ્રી સંઘ અને પરિષદ પરિવારનો અંતઃકરણપૂર્વક આભાર વ્યક્ત કરતાં આનંદ અનુભવીએ છીએ.

– ગુર્જર જૈન જ્યોત, સંપાદક : સુરેશ સંઘવી

ગુર્જર જૈન જયોતને નથી સૂરજ બનવું કે નથી ચાંદ-સિતારા બનવું એને તો ફક્ત શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાય અને પરિષદને સાંપડેલ અદ્‌ભુત સિદ્ધિમાં નાનો દીવડો પ્રગટાવવાનું સૌભાગ્ય પ્રાપ્ત કરવું છે

શાશ્વત ધર્મ તો અસલી સોના હૈ, ઢુંઢો ન બાજાર મેં પઢના હૈ અગર ઈસકો તો પતા લિખકર લવાજમ ભર દો મંદસોર કાર્યાલય પે....

સામાજિક ગતિવિધિઓના પ્રચાર - પ્રસારમાં બ્રજેશજી બોહરા દ્વારા સોશ્યલ મીડિયાની ઠોસ ભૂમિકા

વર્તમાન કોમ્પ્યુટર અને ઈલેક્ટ્રોનિક યુગમાં સોશ્યલ મીડિયા જન જન માટે ઉપયોગી થઈ સમાજમાં એક્તા, અખંડતા અને જાગૃતિનો સચાર કરી રહેલ છે. ગુરૂદેવના દર્શન, વંદન, સાનિધ્ય અને એમની સુખ-શાતાના સમાચારની ચાહનાથી નાગદારત્ન શ્રી બ્રજેશજી બોહરાને અહેસાસ થયો કે, અગર ગુરૂદેવ સંબંધિત જાણકારી મીડિયા દ્વારા ભક્તોને આપવામાં આવે તો...? તે પણ નયનવશુ અને જ્ઞાન પિપાસાને સંતૃપ્ત કરી ધન્ય બનશે. આ ઉદ્દેશ્યથી એક નાનો પ્રયાસ ફેસબુકના માધ્યમથી ચાલુ કર્યો હતો. અને જ્યારે રાષ્ટ્ર સંત આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સાયલાના ચાતુર્માસ બાદ થરાદ કંકુ ચિમનતીર્થ ખાતે પધરામણી થઈ ત્યારે શ્રી બ્રજેશજી દર્શન-વંદન હેતુએ ત્યાં પહોંચ્યા હતા. ત્યારે મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા.એ સોશ્યલ મીડિયા પર આચાર્યશ્રીના વિહાર સંબંધી જાણકારી ગુરૂભક્તો સુધી શ્રી બ્રજેશજી દ્વારા પહોંચાડવાની વાત આચાર્યશ્રીને જણાવી ત્યારે આચાર્યશ્રીએ શ્રી બ્રજેશજીને સોશ્યલ મીડિયા પર વિહાર સૂચના હેતુ આજ્ઞા પ્રદાન કરી હતી. બડનગર ચાતુર્માસમાં પરિષદ અધિવેશનમાં આચાર્યશ્રીએ શ્રી બ્રજેશજીની પરિષદના રાષ્ટ્રીય પદાધિકારી તરીકે વરણી કરી હતી. શ્રી બ્રજેશજીએ તેમની જવાબદારી અને સમાજની આશા - અપેક્ષાઓનું ધ્યાન રાખી વોટ્સઅપ પર સહુને જોડતા ગયા. ૫૦ ગુરૂભક્તોથી શરૂ થયેલ છોડ વટવૃક્ષનું રૂપ ધારણ કરેલ છે.

પૂનામાં પૂજ્ય આચાર્યદેવશ્રીની નિશ્રામાં અ.ભા. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરાએ શ્રી બ્રજેશજી બોહરાને શ્રીસંઘના પ્રચારકની પદવી પ્રદાન કરી ગૌરવાવિંત કરેલ હતા. શ્રી બ્રજેશજી બોહરાના કાર્યથી નિષ્ઠા, ધર્મનિષ્ઠા, ગુરૂ નિષ્ઠાની ત્રિવેણી નાવ વહેતી ચાલી છે. સમાજના કોઈ કાર્યક્રમ અને સૂચના એવી હોય છે જેને બધા સુધી પહોંચાડવાથી પ્રેરણા મળે છે અને સામાજિક કલ્યાણ થાય છે. ગુરૂકૃપા અને ગુરૂ આજ્ઞાથી શ્રી બ્રજેશજીને મીડિયા પ્રભારીનું જે દાયિત્વ સોંપવામાં આવ્યું હતું તેને પૂર્ણ નિષ્ઠા સાથે નિભાવી શ્રી બ્રજેશજીએ દૈનિક જીવનનું અભિન્ન અંગ બનાવી લીધું છે. જે રીતે છોડ સૂરજની ઊર્જા વિના વિકસીત નથી થતો તે રીતે ગુરૂ આશિષ વિના આ બધું સંભવ નથી. સ્નેહીજનોના સ્નેહ સમાજના વરિષ્ઠ મહાનુભાવોના આશિર્વાદના સિંચનથી શ્રી બ્રજેશજી આ કાર્યના માધ્યમથી આ વટવૃક્ષને પલ્લવિત કરી શકેલ છે. શ્રી બ્રજેશજીનું કહેવું છે કે મને ગર્વ છે કે પિતાશ્રી બાબુલાલજી બોહરાએ ગુરૂભક્તિનું બીજ મારામાં રોપણ કર્યું છે, તેનું ફળ અત્યારે સમાજને મળી રહ્યું છે. હું ધન્ય છું કે મને આ કાર્યરૂપમાં ગુરૂપ્રસાદ મળ્યો છે. એમ જ ગુરૂકૃપારૂપી અમી અવિરત વરસતી રહે અને આપણે સહુ ભાવોથી તરબોળ બની અમૃતપાન કરતા રહીએ, એવી શ્રી બ્રજેશજીએ મંગલ ભાવના પાઠવી છે.

લગાતાર ઘણા વર્ષોથી સોશ્યલ મીડિયા પ્રભારી દ્વારા ગુરૂગચ્છની પળ-પળની ખબરો રાષ્ટ્રીય મીડિયા પ્રભારી શ્રી બ્રજેશજી બોહરા દ્વારા સંઘ - સમાજમાં પ્રસારિત કરાઈ રહી છે, એમની આ અહર્નિસ સેવા વાસ્તવમાં સરાહનીય, પ્રશંસનીય અને સ્તુતિ યોગ્ય છે. ચતુર્વિધ સંઘની આવી સેવા માત્રા ગુરૂકૃપાથી જ સંભવ છે.

- ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર, સંપાદક : સુરેશ સંઘવી

कुमकुम सने पगलिये

सिद्धाचलजी पर दीक्षा महोत्सव सम्पन्न

पालीताना। यहाँ विगत 19 जनवरी को भव्य समारोह में गच्छाधिपति जैनाचार्य धर्मदिवाकर श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म. के सान्निध्य में उंदराणा (थराद) निवासी मुमुक्षु रत्न श्री कल्प कुमारजी ने संयम ग्रहण किया।

आपको संयम जीवन का उपदेश श्रुत प्रभावक मुनिराज श्री वैभवरत्नविजयजी म.सा. से प्राप्त हुआ तथा उनके पास ही ज्ञानाभ्यास करते हुए आपने अपने माता-पिता से प्रवज्या ग्रहण करने की आज्ञा प्राप्त कर जीवन परिवर्तन किया। आप दोशी जयंतिभाई राजमलभाई परिवार उदराणा (अहमदाबाद) के सदस्य थे।

आपके दीक्षोत्सव पर अहमदाबाद नगर में 16 जनवरी को रत्नत्रयी महोत्सव हुआ। दिनांक 16 जनवरी से श्री शत्रुंजय महातीर्थ पर श्री यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला में त्रिदिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिनांक 18 जनवरी को वर्षीदान समारोह हुआ तथा रात्रि मुमुक्षु को अंतिम विदाई गृहस्थाश्रम से दी गई। 19 जनवरी को प्रातः 5 बजे रजोहरण प्रदान कर दीक्षा दी गई। इस अवसर पर गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म. तथा मुनिमंडल एवं साध्वी समुदाय ने सान्निध्य प्रदान किया।

◆ सियाणा में गुरु सप्तमी के अवसर पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ प्रतिदिन जीवदया के कार्यक्रम, पूजन तथा अल्पाहार सुबह शाम को स्वधर्मी वात्सल्य हुआ। सप्तमी को जीवदया कार्यक्रम के पश्चात् वरघोड़ा निकला। सामूहिक आयंबिल भी हुए। श्री राजेन्द्रसूरि अष्ट प्रकारी पूजन पढ़ाई गई। रात्रि को गुरु भक्ति हुई।

यतीन्द्रवाणी प्रकाशन समारोह सम्पन्न

श्री राजेन्द्र शान्ति विहार- मोटेरा, अहमदाबाद में यतीन्द्रवाणी प्रकाशन समारोह आयोजित हुआ। भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. की शुभ निश्रा में राजेन्द्र शान्ति विहार मोटेरा में उपरोक्त आयोजन हुआ।

श्री शांतिदूत जैनोदय ट्रस्ट- यतीन्द्रवाणी प्रकाशन के तत्त्वाधान में आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य

अतिथि श्री वाघजीभाई वोरा अध्यक्ष अ.भा. श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ थे। इस कार्यक्रम में गुजरात एवं राजस्थान प्रवासी गुरुभक्तों की विशेष उपस्थिति रही। सभा को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि भाण्डवपुर तीर्थ की प्राचीनता विकास एवं विस्तार जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से यतीन्द्रवाणी हिन्दी पाक्षिक को भाण्डवपुर तीर्थ का मुख्य पत्र घोषित किया जाता है। इसके माध्यम से गुरुगच्छीय क्रियाकलापों की आवश्यक उपयोगी विधिसूत्र एवं मानव जीवन व्यवहार का ज्ञान गुंफित रहेगा। भाण्डवपुर तीर्थ में होने वाले सभी आयोजनों की पूर्ण जानकारी समय-समय जन-जन तक पहुंचाई जाएगी। सोशल मीडिया पर भी यतीन्द्रवाणी विस्तारित की जावेगी।

संघ अध्यक्ष वाघजीभाई वोरा ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि ज्ञान के विकास-विस्तार हेतु यतीन्द्रवाणी प्रकाशन का शुभारंभ होगा। प्रसन्नता की बात है। श्री धानसा जैन संघ को विशेष सहयोग देने हेतु धन्यवाद देते हुए मंगलकामना व्यक्त की। संपूर्ण आयोजन का लाभ मेंगलवा निवासी शा. प्रकाशकुमार मांगीलालजी सकलेचा परिवार ने लिया। पिपलौदा निवासी मुमुक्षु आजादकुमार जैन का बहुमान भी किया गया।

◆ श्री भाण्डवपुर तीर्थ में निर्माण कार्य पूर्ण सुचारू रूप से निरन्तर शुरू है। श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर, पुण्यसम्राट श्री जयन्तसेनसूरि समाधि मंदिर, योगिराज श्री शान्तिविजय समाधि मंदिर के मूल गर्भगृह (गंभारा) ढँकने का मुहूर्त (पदम शिला) रखने का मुहूर्त किया गया।

पुण्यसम्राट श्री के पट्टधरद्वय के आज्ञानुवर्ती मुनिराज श्री आनन्द विजयजी, जिनरत्न विजयजी एवं साध्वीजी श्री सूर्याकिरणाश्रीजी की शुभ निश्रा में यात्रार्थ पधारे शा. अंकुशकुमार कान्तिलाल संघवी दाधाल एवं श्रीमती पूजादेवी के हाथों विधिपूर्वक पदमशिला का कुंकुम से स्वस्तिक कर फल-फूल एवं नैवेद्य चढ़ाकर सीमेंट भरने की विधि की गई ।

अंत में गुड़ धनिया एवं तिल लड्डू की प्रभावना वितरित की गई। श्रीफल बाँधकर पूजा पूर्ण की गई।

स्कूल बेगों का वितरण

भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचर्यदेव श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के 46 वें दीक्षा दिवस शुभारंभ एवं विदुषी साध्वीजी सूर्यकिरणाश्रीजी के 50 वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष में मेंगलवा निवासी संघवी मोहनदेवी साँवलचन्दजी बालगोता- मेंगलवा दिल्ली के द्वारा स्कूली बेगों का वितरण किया गया।

सूर्य संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष में छात्र-छात्राओं के शरीर लाभ हेतु तिल एवं गुड़ के लड्डू बाँटे गए। सरकारी एवं निजी स्कूलों में लड्डू वितरण करवाए गए। समीपवर्ती गौशालाओं में गायों को भी तिल के लड्डू खिलाए गए।

जैनमुनि आनन्दविजयजी एवं जैन साध्वी सूर्यकिरणाश्रीजी आदि की उपस्थिति में बेग एवं लड्डू वितरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कुल 800 छात्र-छात्राएँ लाभान्वित हुए। जैन मुनि ने आशीर्वाद देते हुए कहाकि अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होकर विद्यालय का गौरव बढ़ाएं, उपस्थित प्रधानाचार्य ने सरकार की ओर से भामाशाह एवं जैन तीर्थ पेढ़ी का धन्यवाद पूर्वक आभार प्रकट किया।

◆ उम्मेदाबाद (गोल)। मुनिराजश्री आनंदविजयजी म., मुनिराजश्री जिनरत्न विजयजी म.सा. एवं विदुषी साध्वीजी श्री सूर्यकिरणाश्रीजी आदि ठाणा तथा मुनिराज श्री पुण्यशेखर विजयजी एवं साध्वीजी श्री आनंदश्रीजी आदि ठाणा का प्रातः पंचायत भवन से भव्य सामैयापूर्वक नगर प्रवेश कराया गया। जीवित महोत्सव आयोजक श्रीमती बादामीदेवी जीतमलजी तलावत परिवार के सदस्यगण पूर्ण उत्साह से आगवानी कर रहे थे। जिन मंदिर दर्शन कर भंसाली भवन पहुंचने पर सभा में परिवर्तित हो गया। समीपवर्ती ग्रामों से भारी संख्या में भक्तजन पहुंचे थे। मुनिराज श्री आनंदविजयजी म.सा. ने प्रवचन में कहा कि सभ्यता संस्कृति का संवाहक विवेक होता है, अंतः सामाजिक धार्मिक एवं पारिवारिक आदि आयोजनों में पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण पर दुःख जताते हुए भारतीय संस्कृति अपनाने पर बल दिया। जीवित महोत्सव के आयोजन पर भी प्रकाश डाला व अंत में तलावत परिवार की ओर से गुरु पूजन एवं कामली अर्पण की गई। दोपहर में श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा पढ़ाई गई व साधर्मिक वात्सल्य भी किया गया।

यह जीवित महोत्सव 21 दिसंबर को पूरा होगा।

शंखेश्वर तीर्थ के लिए यात्रा का प्रस्थान

उम्मेदाबाद (गोल)। बादामीदेवी जीतमलजी तलावट के निवास से ठीक प्रातः 9.30 बजे मुनिराज श्री आनन्द विजयजी एवं साध्वीजीश्री सूर्य किरणाश्रीजी आदि ठाणा की पावनतम निश्रा में मंगल पाठ श्रवण कर ढोल-बैंड-शहनाई आदि मधुर वाद्य ध्वनि के साथ घर से प्रस्थान कर आदिनाथ मंदिर, मणिभद्र मंदिर एवं पार्श्वनाथ मंदिर में दर्शन करने के पश्चात् श्री शंखेश्वर यात्रा के लिए प्रस्थान हुआ। गोल जैन संघ की ओर से साफा, माला, श्रीफल एवं कुंकुम तिलक लगाकर संघवी परिवार का बहुमान किया गया। चतुर्विध संघ के साथ मुख्य चोहटा मेन बाजार होते हुए दादावाड़ी एवं राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर पहुंचे। जहाँ गुरुवंदन एवं आरती कर मांगलिक श्रवण कर सभी यात्रियों सहित संघवी परिवार ने प्रस्थान किया।

◆ **भरतपुर।** मुनि श्री संयमरत्न विजयजी मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी का प्रथम बार मंगल प्रवेश हुआ। आचार्यश्री यतीन्द्रसूरिजी की 60 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ जिसमें आचार्यश्री को भावपूर्वक श्रद्धाजंलि अर्पित की गई। मुनिश्री के भरतपुर में पधारने पर श्रीसंघ में हर्षोल्लास का माहौल छा गया। मथुरा में आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी के सुशिष्य मुनिश्री संयमरत्नविजयजी, मुनिश्री भुवनरत्नविजय के दर्शन-वंदन हेतु रतलाम (म.प्र.) जिले में स्थित सरसी ग्राम से गुरु भक्तों का समूह पहुँचा और सरसी पधारने की विनती की।

◆ **भरतपुर।** गुरुदेव आचार्यश्री राजेन्द्रसूरिजी की जन्मभूमि भरतपुर स्थित श्री राजेन्द्रसूरि जैन कीर्ति मंदिर तीर्थ में गुरु सप्तमी का वरघोड़ा मुनिश्री संयमरत्न विजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी के सान्निध्य में पहुंचा।

नववर्ष 2020 का मांगलिक प्रवचन देते हुए मुनिश्री ने कहा कि 2020 का प्रथम 2 कहता है राग-द्वेष से मुक्त बनो और दूसरा कहता है देव-गुरु पर श्रद्धा रखो तथा दोनों 22 मिलकर कहते हैं- ''आर्त ध्यान, रोद्र ध्यान' इन 2 को छोड़कर 'धर्म ध्यान - शुक्ल ध्यान' इन 2 शुभ ध्यान में मन लगाकर दान, शील, तप, भाव इन 4 धर्मों का पालन करते हुए 4 कषाय- क्रोध, मान, माया, लोभ 4 संज्ञा-आहार, भय, मैथुन, परिग्रहः, 4 विकथाएँ व 4 गति के चक्र से मुक्त होकर सिद्धशिला की ओर बढ़ो। 2020 का डबल 2 कहता है दो-दो याने

देना सीखो, जो देता है वो देवता होता है।

मुनिश्री संयमरत्न विजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी ने गुरु गुणानुवाद करते हुए कहाकि हमें गुरुदेव की याद आयी इसका मतलब यह नहीं कि हम गुरु को याद कर रहे हैं, बल्कि गुरुदेव ने हमें याद किया इसलिए हमें उनकी याद आई है।

गुरु राजेन्द्रसूरिजी का ऐसा प्रभाव था कि हिंसक भी अहिंसक बन जाते थे। गुरुदेव श्री के जन्मोत्सव का पारणा ऋषभ-केशरी स्मृति मंदिर में ले जाने का लाभ भरतपुर के ट्रस्टी सतीशजी जैन ने लिया। बागरा श्रीसंघ द्वारा निर्मित केशर रूम का उद्घाटन करने के पश्चात् मदुरै के प्रकाशजी सदाणी परिवार द्वारा गुरुदेव श्री को डायमंड आंगी समर्पित की गयी। गुरुपद महापूजन में गुरु भक्तों ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

◆ **भरतपुर।** नगरी के अनाह गेट, बजरिया स्थित श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय की पावनकारी प्रतिष्ठा की आमंत्रण पत्रिका का मंगलमय लेखन कार्य मुनि श्री संयमरत्न विजयजी, मुनि श्री भुवनरत्न विजयजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

मुनिश्री ने कहा कि सांसारिक कार्यों के लिए हमने अनेकों निमंत्रण दिये हैं, लेकिन संसार को घटाने व दिल में प्रभु को बिठाने हेतु यह आमंत्रण पत्रिका है। हे प्रभु ! आप वीतरागी.. मैं रागी, आप अधिकारी... मैं विकारी, आप सद्गुणी... मैं अवगुणी, आप निर्मोही.. मैं मोही हूँ, इस अंतर व भेद को मिटाने हेतु ही हम परमात्मा की प्रतिष्ठा करते हैं। साथ ही 25 व 26 जनवरी को प्रातः 9 बजे से सायं 4 बजे तक श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मंदिर तीर्थ, भरतपुर में मुनिद्वय श्री के सान्निध्य में 13 से 25 वर्ष की अविवाहित बेटियों के लिए 2 दिवसीय 'स्मार्ट गर्ल' शिविर का आयोजन किया गया।

श्री संघ सौरभ

गुरु सप्तमी पर गुरुभक्तों का हिमालयी उत्साह

महिदपुर। गुरुसप्तमी महापर्व गुरुभक्तों द्वारा राजेन्द्रसूरी ज्ञान मंदिर में महोत्सव पूर्वक उत्साह के साथ मनाया गया। ज्ञान मंदिर की विशेष साज-सज्जा की गई। सुबह 7 बजे गुरु मंदिर में पक्षाल व केसरपूजन हुई। गुरुभक्तों ने श्रद्धा के साथ जयकारे लगाकर नतमस्तक होकर सिर झुकाए व गुरु प्रतिमा के दर्शन वंदन कर धन्य हुए।

गुरु मंदिर में प्रथम बार अखण्ड ज्योति प्रज्ज्वलित की गई। 12 माह तक अखण्ड ज्योत प्रज्ज्वलन का लाभ राजमल बांठिया परिवार ने लिया। नेमीचंद लुणावत परिवार ने गुरुप्रतिमा पर मोतियों का हार अर्पित किया। आदिनाथ स्नात्र मण्डल, राजेन्द्र महिला मण्डल व बहू मण्डल के तत्वावधान में स्नात्र महोत्सव पूजन व राजेन्द्रसूरी अष्टप्रकारी पूजन पढ़ाई गई। बहू मण्डल ने आकर्षक रांगोली बनाई व प्रथम बार गुरु प्रतिमा का स्वर्ण वरक से आकर्षक आंगी बनाकर श्रृंगार किया गया।

इस अवसर पर शाम को जैन धर्मशाला में माणकलाल छाजेड़ परिवा की ओर से निरंतर 13 वां सहभोज का आयोजन आगंतुक अतिथियों व समाज प्रमुखों की उपस्थिति में हुआ एवं गुरुदेव के चित्र पट्ट पर जयकारों के साथ धूपदीप प्रज्ज्वलित कर माल्यार्पण किया।

रात्रि में राजेन्द्रसूरी महिला मण्डल व विश्व तारक राजेन्द्रसूरी पाठशाला के बच्चों द्वारा एक शाम गुरुदेव के नाम भक्ति संध्या का आयोजन किया गया व गुरु गुण इक्कीसा का पाठ कर नवकार मंत्र के जाप किए गए। गुरुदेव की महाआरती उतारी गई। आरती पश्चात प्रभावना वितरित की गई। श्री राजेन्द्रसूरी महिला मण्डल द्वारा गरीब बस्ती में जाकर ऊनी वस्त्र, कम्बल, स्वेटर, टोपे, मोजे आदि का वितरण किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या समाजजनों ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम में भाग लिया।

– नरेन्द्र धाड़ीवाल

◆ अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक एवं महिला परिषद् मैसूर द्वारा गुरु सातम के पावन प्रसंग के उपलक्ष्य में दिव्याधर्मा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में सुमतिनाथ ट्रस्ट एवं सुविधिनाथ ट्रस्ट के तत्वावधान में सामूहिक आयम्बिल का आयोजन प्रभावना सहित हुआ जिसमें 150 अयाम्बिल हुए एवं गुरुदेव का वरघोड़ा में गुरुदेव के जीवन पर सुंदर झांकी का आयोजन रखा गया।

◆ **मंदसौर।** गुरु सप्तमी के अवसर पर राजेन्द्र विलास में श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ के तत्वावधान में पाँच दिवसीय महोत्सव श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद द्वारा श्री पद्मावती पार्श्वनाथ जैन मंदिर में श्री देवेन्द्र चपरोत परिवार द्वारा प्रभुजी के अठारह अभिषेक हुए। साथ ही स्वास्थ्य एवं रक्तदान शिविर, जिला चिकित्सालय में फल वितरण श्री कन्हैलाल सालेचा परिवार की ओर से, राजेन्द्र-जयंत जीवदया समिति की ओर से गौशाला में गुड़ लाप्सी लड्डू, हरा चारा आहार कराया गया। वृद्धाश्रम में सभी को भोजन श्री सौभागमल बाफना परिवार द्वारा करवाया गया। तरुण परिषद् द्वारा जरूरतमंदों को स्वेटर व कम्बल वितरण किया गया। गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी की प्रतिमा पर महामत्स्तकाभिषेक हुआ। दिनभर 24 घंटे के गुरुमंत्र के जाप हुए. सर्वाधिक जाप करने वाली 3 श्राविकाओं का श्री राजमल सुरेन्द्र लोढ़ा परिवार द्वारा बहुमान किया गया। रात्रि में धार्मिक प्रतियोगिताएँ, महिला व बालिका परिषद् द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये। गुरु सप्तमी को प्रातः गुरुदेव के दर्शन वंदन, पूजा, अंगरचना, प्रभातफेरी, गुरूदेव के जय-जयकार के नारों के साथ नगर में निकाली गई। गुरु गुणानुवाद सभा, दोपहर गुरु महापद पूजा श्री जिनेन्द्र कुमार मोहनलाल डोसी परिवार द्वारा

संगीत वाद्य यंत्रों के साथ पढ़ाई गई व रात्रि को महाआरती की गई। श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद ने जरूरतमंद असहाय लोगों को मिष्ठान भोजन पैकेट वितरित किये गये। गुरुदेव के जीवन पर निबंध प्रतियोगिता हुई जिसके प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। दोपहर गुरुदेव महापूजा का विधान व रात्रि गुरु भक्ति, आरती का संगीत कार्यक्रम श्री ललित जैन पार्टी मोहनखेड़ा ने किया। तरुण परिषद् अध्यक्ष श्री आयुष विरेन्द्र डोसी ने महोत्सव में सहयोग पर सभी का आभार माना।

◆ **खाचरौद।** श्री राज राजेन्द्र जयंतसेन विद्यापीठ खाचरौद के विद्यार्थियों ने नागदा में अटल स्पोर्ट्स क्लब द्वारा कबड्डी प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 38 टीमों ने भाग लिया था। विद्यालय के खिलाड़ियों ने इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं ट्राफी जीती।

◆ **थाने।** श्री के.के. संघवी के संयोजन में थाने तीर्थ से शान्तिधाम पदयात्री तीर्थ मानपाड़ा की 261 पदयात्रा करने वालों को राजस्थान के 21 तीर्थों की यात्रा करवायी जायेगी।

◆ **थाने।** निकटस्थ मानपाड़ा स्थित श्री शांतिधाम पदयात्री तीर्थ में गुरु सप्तमी को मुनि श्री निर्भय रत्न विजयजी की निश्रा में हर्षोल्लास पूर्वक मनाई गई। प्रातः थाने तीर्थ से शांति धाम 5 कि.मी. भव्य रथ यात्रा आयोजित की गई। गुरु गुणानुवाद एवं मेला आयोजक मातुश्री भूरीबेन अचलचंदजी पुनमिया (पीलो वनी-थाने) का बहुमान किया गया। दोपहर में विशिष्ट पदयात्री श्री महेन्द्र भाई दामजी सोनी (नाहुर) को रजत मुद्रा, शाल, माला, श्रीफल, तिलक आदि से सम्मानित किया गया एवं अन्य 12 पद यात्रियों को भी सम्मानित किया गया। रात्रि महाआरती का लाभ शा. जयंतीलालजी पुखराजजी संघवी (आलासन-थाने) वालों ने लिया। रात्रि भावना में गुरु भक्तों ने सुंदर भक्ति गीतों की प्रस्तुति दी। रात्रि 12 बजे तक करीबन 7000 गुरु भक्तों का दर्शनार्थ आगमन हुआ ।

◆ **रतलाम।** गुरु सप्तमी जयंतसेन धाम पर सकल श्रीसंघ के साथ धूमधाम से मनाई गई। नीमवाले उपाश्रय से वरघोड़े के रूप में धाम पर पहुंचे। तत्पश्चात गुरुदेव की आरती का

लाभ लेकर सकल श्रीसंघ का साधर्मिक स्वामी वात्सल्य का आयोजन रखा गया। सेवा प्रकल्प के रूप में चारों गौशाला में गायों को लापसी और चारे का वितरण किया तथा रात्रि में निसहाय लोगों को 50 कम्बल 50 चद्दर दिए। गुरुसप्तमी के दिन नवयुवक परिषद व लायंस क्लब के संयुक्त तत्वावधान में मधुमेह जांच शिविर रखा गया जिसमें 162 लोगों की निशुल्क शुगर की जांच की गई एवं भव्य अंगरचना के साथ राजेन्द्रसूरी अष्टप्रकारी पूजन पढ़ाई गई।

◆ **राणापुर।** श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय में चल रहे श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म एवं दीक्षा कल्याणक के त्रिदिवसीय महोत्सव के अन्तिम दिन मंदिर जी में भक्ताम्बर पाठ, गुरु इक्कीसा, पक्षाल-केसर पूजन, स्नात्र पूजन, सामूहिक सामायिक के पश्चात् दोपहर को श्री पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजन महिला परिषद द्वारा पढ़ाई गई। नवयुवक परिषद श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय द्वारा कम्बल वितरित किये गये। श्रीसंघ व परिषद परिवार ने लाभार्थी परिवार की खूब-खूब अनुमोदना की। पौष दशमी के अवसर पर राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की ओर से गौशाला में हरी सब्जी व हरी घांस खिलाई गई।

◆ **राणापुर।** गुरु सप्तमी के अवसर पर श्री मुनिसुव्रत जिनालय जैन श्रीसंघ एवं श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के द्वारा मुनिसुव्रत जिनालय में सुबह भक्ताम्बर पाठ गुरु गुण इक्कीसा का पाठ, गुरु मंत्र का जाप किया गया। बाद में भगवान एवं गुरुदेव के अभिषेक हुए। भगवान एवं गुरुदेव की केसर पूजन, पुष्प पूजन व गुरुदेव की आरती का लाभ लिया गया। अष्टप्रकारी गुरुपद पूजन पढ़ाई गई। दोपहर में सामूहिक सामायिक का आयोजन हुआ। शाम को दादा गुरुदेव की सामूहिक आरती हुई। शाम को भगवान और गुरुदेव की आकर्षक अंग रचना रचाई गई। प्रदीप बस के अभय कटारिया की ओर से निःशुल्क बस लगाकर मोहनखेड़ा तीर्थ, भोपावर तीर्थ यात्रा का लाभ लिया गया।

सुविधिनाथ जिन मंदिर में स्नात्र पूजन हुई। महिला परिषद ने गुरुदेव की अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् ओपीआर ने स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में भर्ती मरीजों व सहायकों को फल, मिठाई व बिस्किट वितरण किये गए। श्री राज राजेन्द्र गोपाल गौशाला की गायों को गुड खिलाया गया।

मोहनखेड़ा वाले राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज साहब की अष्टप्रकारी पूजा का आयोजन किया गया।

नागपुर। स्थानीय रामदास पेठ जैन मंदिर में गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज साहब की सप्तमी पर अष्टप्रकारी पूजा का आयोजन किया गया। पूजा कार्यक्रम परमपूज्य प्रशमरति जी महाराज के सान्निध्य में नलिन संघवी, संजय डोसी, अशोक डोसी, स्नेहलता डोसी, मधु डोसी, संगीता संघवी, चिराग संघवी ने पढ़ाई। पूजा की क्रिया हंसा बहन पारेख, हंसा डोसी, भावना मानावत ने सम्पन्न करवाई। डेकोरेशन गौतमजी वेद के निर्देशन में हुआ। गहुली एवं पुष्प सज्जा पूर्णिमा सुराणा,सुशिला बोथरा, शशी पटेल, मधु भाचावत ने की। कार्यक्रम में शैलेन्द्र मानावत, देवेन्द्र पारेख, सुदर्शन बांठिया, निखिल कुसमगर, विनोद फतेहपुरिया, नितीन दोषी, प्रफुल्ल खिवसरा, आनन्द ओस्तवाल, संजय पीपाड़ा, गुगलिया, दिलीप पंचोली आदि उपस्थित थे।

◆ राणापुर। श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद मुनिसुव्रत जिनालय रानापुर द्वारा रविवार को राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान के अंतर्गत 1 स्टाल लगाकर बच्चों को दवाई पिलाई गई। स्टाल का शुभारंभ नगर के बीएमओ डॉ. जी.एस. चौहान, श्री मुनिसुव्रत जिनालय के वरिष्ठ मनोहरलाल नाहर की उपस्थिति में दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरिजी एवं पुण्य सम्राट श्री जयंतसेन सूरिजी के चित्र के सम्मुख दीपप्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण के साथ किया गया।

◆ भाटपचलाना। नगर के श्री आदिनाथ जिनालय मंदिर के शिखर पर छठी ध्वजारोहण वर्षगांठ पर साध्वी श्री अनेकांतलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में मंत्रोच्चार के साथ सत्तरभेदी पूजन की गई। इसके

बाद लाभार्थी परिवार द्वारा मंदिर के शिखर पर अमर ध्वजा फहराई। इसके पूर्व प्रातः 9 बजे लाभार्थी परिवार के निवास स्थान से चल समारोह निकाला गया। चल समारोह गाँव के प्रमुख मार्गों से होता हुआ मंदिरजी पहुँचा।

जहाँ पर साध्वी श्री एवं विधिकारक लाभार्थी परिवार व समाज द्वारा ध्वजारोहण के मंत्र उच्चारित किए गए। लाभार्थी परिवार ने शिखर पर विधिकारक के मंत्रों द्वारा कलश का पूजन करते हुए अमर ध्वजा फहराई । इस अवसर पर परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुधीरजी लोढ़ा एवं प्रांतीय पदाधिकारीगण श्री राजेन्द्रजी ओरा दंगवाड़ावाला, श्री चिरागजी भंसाली, श्री राकेशजी गोलेचा, श्री अनिलजी मूणत भी उपस्थित रहे। साथ ही रात को मंदिरजी में भक्ति का आयोजन भी लाभार्थी परिवार द्वारा रखी गई। अमर ध्वजारोहण का लाभ श्रेणिकमल, मांगीलाल, विनोद कुमार, बुपक्या एवं समस्त बुपक्या परिवार भाटपचलाना द्वारा लिया गया।

चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर पर ध्वजारोहण

जावरा । खत्रीपुरा स्थित चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर की प्रथम वर्षगांठ पर सोमवार को मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण का आयोजन हुआ।

यह आयोजन साध्वीश्री रत्ना विद्वतगुणश्रीजी, साध्वीश्री रत्ना रश्मिप्रभाश्रीजी की पावन निश्रा में लाभार्थी सुशीलकुमार, सुरेशकुमार, सकलेचा परिवार ने विधि-विधान से शुभ मुहूर्त में ध्वजा चढ़ाई। ध्वजा का चल समारोह पिपली बाजार स्थित जैन पंचायती नोहरे से प्रारंभ हुआ। जो नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ खत्रीपुरा स्थित चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर पर पहुंचा। राजेन्द्र महिला मंडल की सदस्याओं ने सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई। अखंड

दीपक की वार्षिक चढ़ाने की बोली सकलेचा परिवार ने ली। समाज के मनोहर आंचलिया का नवीन ट्रस्टी मनोनीत होने पर बहुमान किया। इस मौके पर समाज के आजादसिंह ढढ्ढा, बाबूलाल तांतेड़, चंदनमल कोठारी, बाबूलाल खेमसरा, कमल नाहटा, विमल मेहता, जयंतीलाल दख के साथ समाजजन मौजूद रहे।

पुण्यसम्राट की प्रति जापान में भेंट

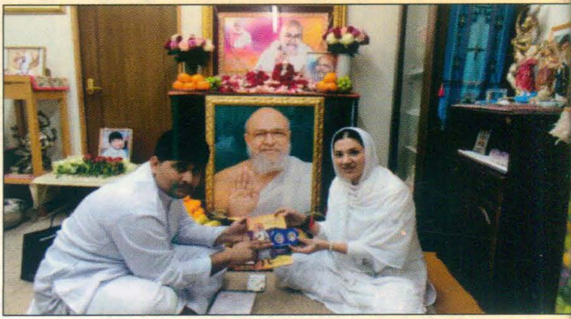

महिदपुर । अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेश छजलानी के सुपुत्र डॉ. आशीष छजलानी (एमडीएस) के जापान प्रवास के दौरान नागानो केन शहर में पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की गुरुभक्त जापान की तुलसी बहन से भेंट कर शाश्वत धर्म के सम्पादक सुरेन्द्र लोढ़ा द्वारा लिखित पुण्य सम्राट का जीवन चरित्र ग्रंथ की प्रति भेंट की।

ग्रंथ की प्रति का तुलसी बहन सहित अनेक जापानी गुरुभक्तों ने अवलोकन कर ग्रंथ की सराहना करते हुए लेखक सुरेन्द्र लोढ़ा के प्रति आभार व्यक्त किया। तुलसी बहन ने चर्चा में श्री छजलानी को बताया कि नागानो केन शहर में पुण्य सम्राट का गुरु मंदिर के निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जापान टोक्यों में डेन्टल आई एकेडमी में आयोजित दो दिवसीय वर्कशाप में डॉ. आशीष छजलानी ने भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त कर भारत का नाम गौरवान्वित किया। इष्ट मित्रों ने इस उपलब्धि पर छजलानी को बधाई दी। यह जानकारी परिषद के नरेन्द्र धाड़ीवाल ने दी।

◆ **निम्बाहेड़ा।** नगर के मध्य स्थित श्री आदीनाथ जैन मंदिर (यतिजी) पर वीराणी परिवार द्वारा गुरुवार को वार्षिक ध्वजा चढ़ाई गई। ध्वजारोहण से पूर्व आदीनाथजी की प्रतिमा एवं ध्वजा का पूजन किया गया। पूजन के पश्चात गाजे-बाजे एवं श्रीसंघ के साथ वीराणी परिवार मंदिर के शिखर पर पहुंचे एवं विविध मंत्रोचार के बीच ध्वजा चढ़ाई । इस दौरान

उपस्थित श्रावकों ने अक्षत से वधामना किया एवं महिलाओं ने मंगलगीत गाए।

इस अवसर पर त्रिस्तुतिक संघ के अग्रणीय समाजजन उपस्थित थे। ध्वजा चढ़ाने की क्रिया श्री रिखनकुमार वीराणी ने की।

◆ **बखतगढ़ (धार)।** सेठ स्व. श्री मांगीलालजी दरड़ा की धर्म सहायिका तपस्विनी श्रीमती शांताबाईजी दरड़ा का 30 नवंबर 2019 को देर शाम को 82 वर्ष की उम्र में अरिहंत शरण हो गया। वे सर्वश्री अनाज व्यापारी श्रेणिककुमारजी, भारतीय स्टेट बैंक इंदौर शाखा प्रबंधक संतोषकुमारजी (इंदौर), किराना व्यवसायी राजेन्द्रकुमारजी (इंदौर) व सीए सुनीलकुमारजी दरड़ा (मुंबई) की माताजी थीं। अंतिम यात्रा में जैन समाज सहित बड़ी संख्या में लोगों ने शामिल होकर श्रद्धांजलि अर्पित की। आप पूज्य संयमी आत्माओं के दर्शन, वंदन, मांगलिक, व्याख्यान आदि का लाभ लेने के साथ वैयावच्च, गौचरी, पानी आदि सेवा में भी अग्रणी रहती थीं। अपने जीवन को

तप में रमाने वाली शांताबाईजी ने जीवन काल में एक सिद्धि तप, दो वर्षीतप, तीन उपधान तप, 45 उपवास, 34 उपवास, 16 उपवास के अलावा 11, 9, अट्ठाई, पचोला, तेला, बेला उपवास आदि की अनेक तपस्या भी की।

◆ **पेदमीरम तीर्थ।** प्रवचनकार आचार्य प्रवरश्री अरविंदसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्री राजेन्द्रसूरी जैन दादावाड़ी के प्रांगण में भव्य रूप से मनाया गया।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में गुरुभक्तों ने पधारकर दर्शन, वंदन, सेवा, पूजा, नवकारशी आयंबिल एकासणा का लाभ लिया। चढ़ावे भी काफी अच्छे हुए। महोत्सव की संपूर्ण व्यवस्था में श्री जैन युवा संगठन गुण्टुर मण्डल वालों का योगदान सराहनीय रहा। अक्षयतृतीया को यहाँ पर वसी तप पारणा का आयोजन होता है। इच्छुक आराधक संपर्क करें।

– महेन्द्रश्री कबदी

◆ **उज्जैन ।** जैन समाज द्वारा जन्मोत्सव गुरु सप्तमी के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ द्वारा श्री राजेन्द्रसूरी जैन ज्ञान मंदिर नमकमंडी से प्रातः भव्य वरघोड़ा निकाला गया, जो मोतीमहल धर्मशाला में गुणानुवाद सभा में परिवर्तित हुआ। गुणानुवाद सभा में श्री राजेन्द्र जैन बालिका परिषद द्वारा मंगलाचरण नृत्य प्रस्तुत किया गया तो राजेन्द्र संस्कार पाठशाला के बच्चों द्वारा गुरु अनुमोदना की गई।

मुख्य अतिथि विधायक श्री पारसजी जैन, राजबहादुरजी मेहता, राजमलजी कोठारी, दीपकजी डागरिया, नरेशजी बाफना, अनिलजी रूनवाल, नवीनजी बाफना, सुनीलजी मेहता, प्रकाशजी तल्लेरा एवं प्रेमजी तल्लेरा, शांतिलालजी चत्तर द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर सभा की शुरुआत की।

संजयजी कोठारी द्वारा संचालित इस सभा में संघ अध्यक्ष मनीषजी

कोठारी, डॉ. भूपेन्द्रजी मेहता, शांतिलालजी रूनवाल, गुणमालाजी नाहर, शांतिबेन मेहता, तनवी गोलेचा एवं उर्वी रूनवाल ने अपने उद्बोधन में गुरुदेव के गुणों की व्याख्या करते हुए सभी से कल्याण के कार्यों को आगे बढ़ाने की विनती की गई। मदनलालजी रूनवाल एवम् विनम्र धारीवारल द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

नितेष नाहटा एवं विरेन्द्र गोलेचा ने बताया कि दोपहर में गुरुदेव की संगीतमयी महापूजन पूर्ण विधिविधान के साथ पढ़ाई गई। नवयुवक परिषद द्वारा रोगी कल्याण समिति में मरीजों एवं उनके परिजनों को भोजन कराया गया।

◆ दसाई । गुरु सप्तमी की पूर्व संध्या पर श्री राजेन्द्र सूरी ज्ञान मंदिर में अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद एवं परिषद परिवार द्वारा शाम दादा गुरुदेव के नाम भक्ति का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में श्रीसंघ अध्यक्ष संजय पीपाड़ा, परिषद के प्रांतीय प्रचार मंत्री राकेश नाहर, परिषद के नगर सचिव कमल राठौर, उपाध्यक्ष सुनील चंडालिया ने राजेन्द्र सूरिश्वरजी के चित्र सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया मंगलाचरण रेखा राठौड़ ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में गुरुदेव से संबंधित स्तवन नृत्य एवं प्रश्न मंच का आयोजन रखा गया था। प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। पहली मर्तबा आयोजन में बच्चों के साथ बड़ों ने भी उत्साह पूर्वक भाग लिया। गुरुदेव के जाप सामूहिक रूप से किए गए।

◆ दसाई । गुरु सप्तमी निमिते साध्वीजीश्री रत्नरेखाश्रीजी म.सा.एवं आदि ठाणा की

निश्रा में कार्यक्रम आयोजित किया गया। 1000 वृक्षारोपण करने का निर्णय लिया गया। इस मौके पर श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट के अध्यक्ष कांतिलाल जैन, उपाध्यक्ष हीरालाल जैन, सचिव शांतिलाल भंडारी, सहसचिव दिलीप वेदमूथा, कोषाध्यक्ष शांतिलाल जैन एवं सभी ट्रस्टीगण व महिलाएँ उपस्थित थीं।

गुरुदेव मेडिकल फाउंडेशन के संस्थापक फतेहराज जैन ने कहा कि पेड़-पौधों का भी अपना परिवार है इनकी रक्षा करना हमारा दायित्व है।

◆ श्री जयंतसेनम्यूजियम । महिला परिषद की द्विमासिक बैठक में बताया गया कि तपस्या कोई करता है तो कोई अनुमोदना करता है। लेकिन हमें गर्व है हमारी अध्यक्ष एवं वर्षीतप पारणे की लाभार्थी श्रीमती स्नेहलताजी डूंगरवाल जो 'करण करावन अनुमोदन' तीनों लाभ लेकर वर्षी तप की तपस्या कर रही है। हमारी संरक्षक 'राखीजी रांका' का बहुमान जो राष्ट्रीय महामंत्री के पद पर सुशोभित होने के अवसर पर किया जा रहा है। 'सुधर्माजी बम' ने

संचालन दीप प्रज्ज्वलन के लिए राखीजी, स्नेहलताजी व पदाधिकारी को आमंत्रित किया। श्वेताजी बोहरा व कल्पनाजी नाहर के मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। इसके पश्चात जयाजी भंडारी ने अपनी सुमधुर आवाज में स्वागत गीत प्रस्तुत किया। सुधर्माजी बम व प्रमोदजी भांडावत ने कविता के माध्यम से परिचय दिया। उसी पर प्रश्नोत्तरी रखकर विजेता को पुरस्कृत किया। तत्पश्चात् दोनों अतिथि का बहुमान माला व अभिनंदन पत्र के माध्यम से परिषद की बहनों ने किया व चौबीसी गाकर अनुमोदना की। साथ ही परिषद की सर्वश्रेष्ठ सदस्या का पुरस्कार विजयाजी मोदी को प्रदान किया गया ।

राष्ट्रीय महामंत्री राखीजी रांका ने अपने उद्‌बोधन में परिषद को कुछ सुझाव व मार्गदर्शन दिया। परिषद अध्यक्ष विनोद बांठिया ने सभी का आभार व्यक्त किया। मनोरंजक गेम और स्वल्पाहार के साथ सभा का समापन हुआ।

गुरुमंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा वर्षगांठ पर चढ़ाई ध्वजा गुरुभक्ति के बाद शाम को 108 दीपों से महाआरती की

◆ जावरा । गुरु सप्तमी श्री राजेन्द्र वाटिका तीर्थ पर गुरुवार को गुरु मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा की 15 वीं वर्षगांठ मनाई। गुरुदेव राजेन्द्र सूरीश्वरजी की गुरु सप्तमी तिथि पर धार्मिक कार्यक्रम हुए। सुबह स्नात्र पूजन व रात में प्रभु भक्ति के साथ 108 दीपों से महाआरती हुई।

श्री सौबृत त्रिस्तुतिक जैन स्वेताम्बर श्रीसंघ व श्री राजेन्द्र वाटिका पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा आयोजित महोत्सव में स्नात्रपूजन और नवकारसी का लाभ चंपालाल सुमेरमल खिमावत की स्मृति में खिमावत परिवार ने लिया। 11 बजे जयंत ज्योति बहू परिषद ने गरीब बस्ती में मिठाई व फल बांटे।

गुरु मंदिर शिखर पर ध्वजारोहण का लाभअशोक दिनेश खिमावत परिवार ने लिया। शाम 6 बजे श्री राजेन्द्र जयंत जैन पाठशाला के विद्यार्थियों ने दादा गुरुदेव के जीवन पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। रात 8 बजे सभाजन ने गुरुभक्ति की। श्रीसंघ अध्यक्ष बाबूलाल तांतेड़, सचिव प्रवीण कोलन, वाटिका अध्यक्ष इंदरमल दसेड़ा, सचिव सुरेश चौरड़िया, सुरेन्द्र पोखरना, सरदारमल धाडीवाल, रमणीक मेहता, संजय तांतेड़, पारस सकलेचा, संजय धाडीवाल उपस्थित थे।

श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ द्वारा श्री राजेन्द्रसूरी जैन दादावाड़ी में साध्वी तत्वदर्शनाश्रीजी की निश्रा में दादा गुरुदेव का निर्वाण व जन्मदिवस गुरुवार को मनाया गया। सुबह 10 बजे साध्वीश्री ने प्रवचन से गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला। स्वामीवात्सलय के आजीवन लाभार्थी श्रेणिक लुणावत इंदौर का बहुमान श्रीसंघ व दादावाड़ी ट्रस्ट और चौपड़ा परिवार ने किया। दोपहर में गुरुदेव को अष्टप्रकारी पूजन पढ़ाई।

◆ रानापुर । नवयुवक परिषद मुनिसुव्रत जिनालय रानापुर द्वारा श्री मुनिसुव्रत स्वामी मंदिर प्रांगण पर एक स्वास्थ्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 'एक

शाम स्वास्थ्य के नाम' से आयोजित इस कार्यक्रम में नगर के डॉक्टर जी.एस. चौहान, डॉ. श्रीमती उषा गेहलोत, डॉ. लोकेश दवे, डॉ. चारूलता दवे ने अपने प्रभावी उद्‌बोधन से उपस्थित महिला पुरुषों को अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहने के लिये सचेत किया।

यहाँ आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों एवं समाज के वरिष्ठों द्वारा दादा गुरुदेव राजेन्द्रसूरिजी एवं पुण्य सम्राट जयंतसेन सूरिजी की तस्वीर पर दीप प्रज्वलन के साथ की। अतिथियों का स्वागत परिषद के अध्यक्ष पवन नाहर, ललित सालेचा, शैलेन्द्र कटारिया, सीमा सालेचा, अर्चना सालेचा, मनोरमा कटारिया आदि ने किया। डॉ. चारूलता दवे ने भी प्रोजेक्टर के माध्यम से महिलाओं में होने वाली बीमारियों की रोकथाम और उसके लक्षण को बताया। कार्यक्रम का संचालन जितेन्द्र सालेचा ने किया। आभार रजनीश नाहर ने व्यक्त किया।

स्मार्ट युग में दौड़ रहे मानव में संस्कार भी जरूरी
मुनिराज श्री चारित्र रत्नविजयजी

पाटणं (गुजरात)। संसार के भौतिक संसाधनों की आपाधापी में मनुष्य भटक रहा है। परिवार बिखर रहे हैं, रिश्तों में दरारें आ रही हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि हम संस्कारों और संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। हमारी नई पीढ़ी को अब शिक्षा के साथ संस्कारों की भी जरूरत है, आज के जमाने में पुरानी पीढ़ी के पास अच्छे संस्कार हैं और नई पीढ़ी के पास अच्छी शिक्षा है।

अगर दोनों आपस में तालमेल बिठाकर चलें तो आनंद से भरा हुआ परिवार का निर्माण होगा। उक्त प्रेरक प्रवचन गुजरात के पाटण नगर में जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा. ने नूतन विनय मंदिर हाईस्कूल के विभिन्न विभागों के उद्‌घाटन प्रसंग पर निश्रा प्रदान करते हुए कहो उन्होंने कहा कि हमारे देश में धन और शिक्षा का तेजी से विकास हो रहा है, मगर संस्कारों में कमी आ रही है। हमें संस्कारवान नई पीढ़ी तैयार करना है। इस काम में शैक्षणिक संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए। पराक्रम, पुरुषार्थ, शिक्षा और धन के साथ संस्कार जरूरी है।

विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ-साथ संस्कार और समाजसेवा की भावना

पैदा करना जरूरी है। उन्होंने आह्वान किया कि विद्यार्थी वर्ग अपनी ऊर्जा का रचनात्मक उपयोग करें और समाज में शांति और सद्भाव में योगदान करें मुनिराज ने प्रवचन देते हुए कहा कि अच्छा शिक्षक वही है जो बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के साथ-साथ जीवन पथ पर आगे बढ़ने के लिए सही मार्ग दर्शन भी करे। यद्यपि शिक्षा विकास की नींव है। शिक्षा के कारण ही विकास हुआ। लेकिन हमें ध्यान रखना चाहिए कि केवल शिक्षा पर जोर देंगे तो यह दुनिया आगे चलकर पंगु बन जाएगी। रिश्तों में दिनों दिन आ रही टूटन, पति-पत्नी के बीच बढ़ते तलाक, भाई-भाई में तकरार, माता-पिता की सेवा के प्रति उदासीनता संस्कारों की कमी का ही परिणाम है। विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान और0 संस्कार जरूरी है। मुनिराज श्री ने भारत के वर्तमान शिक्षा संकुल में चल रही व्यवस्था पर दुख व्यक्त करते हुए कहा कि विद्या के मंदिरों में शिक्षा को बढ़ावा देने की जगह अर्थ की आमदनी कैसे ज्यादा हो पर ध्यान दिया जा रहा है, शिक्षा को बिजनेस का रूप दे दिया है जो भविष्य के लिए नुकसानदायक है, आज के युग का मानव स्मार्ट तो बन रहा, मगर मानवता खत्म हो रही है, संकुल के विभिन्न क्लास के उद्घाटन प्रसंग पर पाटण नगर पालिका के चीफ ऑफिसर पांचाबाई माली, कानजीभाई पटेल, संकुल के ट्रस्टी देवजीभाई परमार एवं पाटण के नगर शेठ विपुलभाई और जैन समाज के अग्रणी चीनुभाई, नितिनभाई सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

गुजरात के पाटण नगर में हुआ गुरु सप्तमी का भव्य महोत्सव

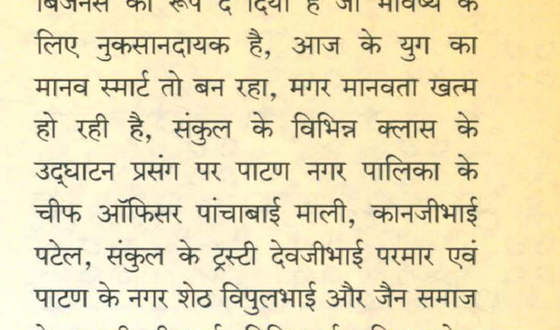

पाटणं (गुजरात)। गुजरात के पाटण नगर में श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण द्वारा पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य श्री चारित्र रत्नविजयजी म.सा. एवं मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में विश्व पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की 193 वीं जन्म तिथि एवं 113 वीं पूण्य तिथि निमित्त गुरु सप्तमी महोत्सव आयोजन त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय के श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन सूरि ज्ञान मंदिर में आयोजित हुआ, इस प्रसंग पर गुणानुवाद करते हुए मुनिराजश्री ने कहा की गुरु जीवन के अज्ञान को दूर कर ज्ञान का प्रकाश करते हैं, गुरु के गुणों का गुणानुवाद करने से दुर्गुण दूर होते हैं, चरम् तीर्थाधिपति श्री महावीर स्वामी ने जैसे रत्नत्रयी प्ररूपित की, वैसे ही देव-गुरु और धर्म स्वरूप तत्वत्रयी भी प्रकाशित की। स्थूल दृष्टि से देखें तो इसमें जो प्ररूरक है वह देवतत्व, जो प्ररूपित है वह धर्मतत्व एवं जो इन दोनों का सम्यग् बोध करवाकर

मोक्षमार्ग में प्रवृत करें वह गुरुतत्व। गुरुतत्व की गरिमा इस बात से स्पष्ट होती है कि गणधरों द्वारा रचित आवश्यक सूत्रों में पंचपरमेष्ठी नमस्कार सूत्र के तुरन्त बाद गुरु की पहचान कराने वाले सूत्र को रखा गया क्योंकि इस कलिकाल में भव्यजीवों में सम्यग् ज्ञान द्वारा सम्यक्त्व का बीजारोपण, देव-धर्म की पहचान और प्रवृतिकारक गुरुतत्व ही है।

गुरु सप्तमी निमित्त विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए मुख्य रूप से शोभायात्रा, सामूहिक आयंबिल तप, गुरु गुणानुवाद सभा में सभी गुरु भगवंतों ने विश्व पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज के जीवन में किये शासन प्रभावना के कार्य एवं विशेष रूप से अभिधान राजेन्द्र कोष पर गुणानुवाद किये, गुणानुवाद सभा में पाटण मूर्तिपूजक श्रीसंघ के विभिन्न समुदायों एवं तेरापंथ ओर स्थानकवासी समुदाय के श्रावक-श्राविकाएं भी विशाल संख्या में उपस्थित रहे, पाटण नगर में प्रथम बार शायद ऐसा हुआ होगा कि किसी गुरु के गुणानुवाद में इतने समुदाय की उपस्थिति रही हो, गुरु सप्तमी महोत्सव में गुरुपद पूजन, आयंबिल तप एवं गुणानुवाद सभा सहित संपूर्ण गुरु सप्तमी का लाभ जोधपुर (राज.) निवासी कनकराजजी हंजारीमलजी परिवार चैन्नई ने लिया।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की नवीन शाखा मक्सी का गठन

मक्सी । मक्सी तीर्थ स्थित गुरु राजेन्द्र सूरि मंदिर में आयोजित बैठक में अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुशीलजी गिरीया, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री धरमचंदजी बोहरा, राष्ट्रीय संगठन मंत्री राजेश वागरेचा की उपस्थिति में स्थानीय युवाओं की बैठक में नवीन परिषद् शाखा मक्सी के गठन की प्रक्रिया पूर्ण की गई।

प्रारंभिक उद्बोधन के द्वारा उपाध्यक्ष श्री सुशीलजी गिरीया ने उपस्थित नवयुवकों को श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के रूप में संगठित होने के लिए प्रेरित किया।

विचार विमर्श के पश्चात् नवीन शाखा के गठन का आवेदन श्री हंसराजजी वेद कटारिया एवं अन्य साथियों द्वारा राष्ट्रीय पदाधिकारियों को प्रस्तुत किया गया। बैठक में सर्वसम्मति से शाखा अध्यक्ष के रूप में श्री हंसराजजी वेद कटारिया, उपाध्यक्ष श्री दीपकजी सालेचा, महामंत्री श्री हेमंतजी वेदमुथा, कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी वेदमुथा मनोनीत किये गये।

नवीन शाखा के गठन के पश्चात् राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रकाशजी हीराणी, महामंत्री श्री सुधीरजी लोढ़ा आदि ने शाखा सदस्यों को शुभकामनाएँ प्रेषित की। ज्ञातव्य है कि नवीन सत्र प्रारंभ होने के पश्चात् नई शाखा के रूप में सर्वप्रथम मक्सी शाखा का गठन किया गया है।

परिषद प्रांगण से

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद एवं परिषद परिवार की बैठक सम्पन्न

बड़नगर । अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, महिला परिषद, बहू परिषद की राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों की एक बैठक रविवार दिनांक 5 जनवरी 2020 को राजेन्द्र जैन जयन्तसेन म्यूजियम मोहनखेड़ा तीर्थ पर सम्पन्न हुई। इस बैठक में पूज्य साध्वी श्री पुण्य दर्शनाश्रीजी म.सा., श्री दर्शित कलाश्रीजी, श्री अनेकांलता श्रीजी, श्री अमृतरसाश्रीजी का सान्निध्य प्राप्त था। बैठक में सर्व प्रथम लघु गुरु वंदन महिला एवं बहू परिषद द्वारा करवाया गया। पूज्य साध्वीजी म.सा. द्वारा मंगलाचरण श्रवण करवाया गया। बैठक का प्रारंभ गुरुदेव के फोटो पर दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। दीप प्रज्ज्वलन परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशजी धरू, राष्ट्रीय महामंत्री सुधीरजी लोढ़ा, प्रान्तीय अध्यक्ष राजेन्द्र दंगवाड़ा शिक्षा मंत्री भरत भाई वोहरा, महिला परिषद की राष्ट्रीय एवं प्रांतीय अध्यक्ष श्रीमती आशा कटारिया, निशा वनवट द्वारा किया गया।

स्वागत उद्बोधन देते हुए परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री सुधीरजी लोढ़ा ने कहा कि अज्ञानता के कोहरे को दूर करना है और भावी पीढ़ी में संस्कारों का बीजारोपण करना है। आत्मा पर छाये विकारों को ज्ञानार्जन कर दूर करना हमारा प्रमुख लक्ष्य है। आज की भावी पीढ़ी भौतिकता में उलझी है। उन्हें आध्यात्म से जोड़ना है। मंत्रों का आत्म भजन करना है। अपने ज्ञान के द्वारा जीवन को ज्योतिर्मय बनाना है। आत्मा की विकृति को ज्ञानार्जन से दूर करना होगा।

परिषद के प्रान्तीय महामंत्री चिरागजी भंसाली द्वारा अतिथि परिचय कराते हुए कहा की हमें पुण्य सम्राट के मार्गों पर चलना है और परिषद के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए लक्ष्य को प्राप्त करना है।

इस अवसर पर श्रुत ज्ञानार्जन योजना का शुभारंभ राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय पदाधिकारियों की उपस्थिति में किया गया। श्रुत ज्ञानार्जन योजना के अन्तर्गत समाज के नौनिहालों में पाठशाला के बच्चों में एवं युवा पीढ़ी में संस्कारों का बीजारोपण करने के साथ धार्मिक सूत्रों का ज्ञान देना मंदिर की

विधि समझाना गुरु वंदन प्रतिक्रमण सामाजिक विधि आदि का ज्ञान देना है। ताकि आने वाली भावी पीढ़ी संस्कारमय हो। सामाजिक उत्सवों में संस्कारवान युवा पीढ़ी अपने ज्ञान के द्वारा पर्युषण पर्व सहित सभी धार्मिक उत्सव सम्पन्न करा सके एवं अपने आत्म कल्याण के लिये सांसारिक जीवन त्याग कर संयम मार्ग की ओर अग्रसर हो सके। इस योजना के अन्तर्गत संपूर्ण भारत वर्ष के जैन संघों में चल रही पाठशालाओं में अध्ययनरत बालक-बालिकाओं को प्रोत्साहित कर धार्मिक सूत्रों का ज्ञान देकर उन्हें प्रेरित करना प्रमुख लक्ष्य है। श्रुत ज्ञानार्जन योजना का चार्ट संपूर्ण कार्यक्रमों के साथ पूज्य म.सा. जी को भेंट किया गया। श्रुत ज्ञानार्जन योजना का चार्ट संपूर्ण कार्यक्रमों के साथ पूज्य म.सा.जी को भेंट किया गया। श्रुत ज्ञानार्जन योजना के संपूर्ण लाभार्थी श्री रमेश भाई वोरा नड़ियादवाला हैं। योजना के बारे में जानकारी देते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशजी धरू ने कहा की धर्म की नींव जितनी मजबूत होगी संस्कारों का महल उतना ही मजबूत होगा। आने वाली पीढ़ी संस्कारमय हो, ज्ञान साधना से परिपूर्ण हो, यही मन की अभिलाषा है। माता-पिता एवं पाठशाला के शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा समाजजनों को धार्मिक ज्ञान एवं धार्मिक सूत्रों से परिपूर्ण करना है ताकि जिन शासन का नाम हमेशा जयवंत रहे। योजना के सपूर्ण लाभार्थी नरपत भाई रमेश भाई वोरा परिवार का बहुमान रमेशजी धरू, सुधीरजी लोढ़ा, भरत भाई वोरा, राजेन्द्र दंगवाड़ा आदि द्वारा किया गया। इस अवसर पर संबोधित करते हुए संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री मनोहरलालजी पौराणीक ने कहा कि दादा गुरुदेव ने जिस मशाल को प्रगट किया था उसके प्रकाश से संघ व समाज प्रकाश वान हो रहा है। हमें शास्त्रों व सूत्रों का ज्ञान जरूरी है।

महिला एवं बहू परिषद की हुई शपथ– कार्यक्रम के दूसरे चरण में अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद एवं प्रान्तीय महिला परिषद का शपथ ग्रहण समारोह भी आयोजित हुआ उपस्थित सभी राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय महिला पदाधिकारियों एवं सदस्यों को रमेशजी धरू द्वारा शपथ दिलाई गई।

इस अवसर पर साध्वी श्री पुण्यदर्शना श्रीजी म.सा. ने उपस्थितजनों को संबोधित करते हुए कहा की पूज्य आचार्य यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. ने 61 वर्ष पूर्व परिषद नाम का एक पौधा रोपा था जो पुण्य सम्राट जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. द्वारा सिंचित कर आज वटवृक्ष के रूप में हमारे बीच है। हमें परिषद के माध्यम से मानव सेवा, जीव दया और परमार्थ के कार्य करते हुए परिषद का नाम रोशन करना है।

साध्वीश्री दर्शितकलाश्रीजी म.सा. ने कहा कि संघ एवं समाज की उन्नती में आचार्यश्री द्वारा अपने जीवन का अमूल्य समय देते हुए बहुत बड़ा

योगदान रहा है हमें समाज सुधार का दायित्व निभाते हुए संघ और समाज को आगे ले जाना है।

साध्वी श्री अनेकांतलताश्रीजी म.सा. द्वारा कहा गया कि संघ अगर मजबूत होगा तो समाज भी मजबूत होगा। संघ और समाज को आगे बढ़ाना है तो शास्त्रों का ज्ञान संस्कारों का सृजन आत्मसात करना होगा। स्वाध्याय हमारा मूलमंत्र होना चाहिए। पाश्चात्य संस्कृति को छोड़कर आध्यात्म का मार्ग अपनाना होगा।

साध्वी श्री अमृतरसाश्रीजी म.सा. ने कहा कि महावीर के शासन में ज्ञान का अभाव दिखाता है। ज्ञान के बिना जीवन अधूरा है। संपत्ति की चोरी हो सकती है किन्तु ज्ञान को कोई नहीं चुरा सकता है।

इस अवसर पर नव नियुक्त प्रवक्ता सीमा लोढ़ा, वीणा जैन एवं सदस्य ममता कोठारी को संकल्प ग्रहण कराया गया। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय मंत्री शांतिलाल गोखरू द्वारा किया गया। अंत में आभार राष्ट्रीय संगठन मंत्री राजेश बागरेचा द्वारा व्यक्त किया गया। बैठक के तीसरे चरण में उपस्थित राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय पदाधिकारियों की मीटिंग आयोजित की गई। मीटिंग का संचालन करते हुए सुधीरजी लोढ़ा ने कहा कि हमें धार्मिक सूत्र एवं संस्कारों से आजाद नहीं होना है बल्कि इन्हें ग्रहण करना है। संगठन में शक्ति लगाना है। गुरु के बताये मार्गों पर चलना है। उपस्थित सभी पदाधिकारियों द्वारा अपने-अपने सुझाव रखे गए एवं नये प्रकल्पों से राष्ट्रीय इकाई को अवगत कराया गया।

सर्वश्री संजय कोठारी, शांतिलाल गोखरू, ब्रजेश ओरा, सुशील छाजेड़, रमेश धरू, शशांक लुणावत, राकेश नाहर, प्रकाश तलेसरा, प्रफुल पिपलौदा सहित अनेक सदस्यों द्वारा सुझाव दिये गये।

– राजकुमार नाहर

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् अहमदाबाद द्वारा केन्द्रीय जेल में सद्भावना सेवा

अहमदाबाद। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक अहमदाबाद की ओर से अहमदाबाद की साबरमती केन्द्रीय जेल में बंदी भाइयों और बहनों के लिए 1100 कम्बल का वितरण किया गया और 1000 नोट बुक और 1000 पेन का वितरण किया गया और संध्या भक्ति करने के लिए साउण्ड सिस्टम माइक्रो फोन स्पीकर दिया गया।

अहमदाबाद परिषद की ओर से वैयावच्च प्रेमी शाखा अध्यक्ष श्री भरतभाई लाडू पैलेस मोरखीया,

बिरेनभाई लाखनी, रीकेन अदाणी, शैलेष संगवी परिषद के वरिष्ठ अरविंदभाई वोहरा (गांधी धाम), चंद्रकांत भाई अनुपम, तरुण परिषद के सदस्य गए। इस कार्य में आरमोर फाउण्डेशन का भी विशेष सहयोग रहा। केन्द्रीय जेल प्रशासन की ओर से विशेष समारोह रखा गया। जिसमें गुजरात डायरेक्टर ऑफ जनरल श्री राव उपस्थित रहे। जेल सुप्रीटेंडेंट डा. महेश नायक ने बताया की पिछले 2 साल से त्रिस्तुतिक जैन संघ की और से पर्वाधिराज पर्युषण के दौरान जेल में बंद भाइयों-बहनों के लिए भक्ति का जो माहौल बनाया गया है, उससे बंदी भाइयों-बहनों में सुधार आया है। ऐसे ही हमें जैन समाज का साथ सहकार मिलता रहे, ऐसी शुभेच्छा करते हैं।

नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय प्रचार मंत्री श्री ब्रजेश बोहरा को साधवीवर्या श्री आत्मदर्शनाश्रीजी के आशीर्वचन

देव गुरु धर्मोपासक सधर्मशाली, बुद्धिशाली, चिंतक, विचारक, पुण्य सम्राट के परम पुण्य शाली गुरुभक्त भाई ब्रजेश बोहरा हार्दिक हार्दिक धर्मलाभ ।

हम सानंद पहुंच गये हैं अलवर नगरी में। कर्नाटक हुबली से हमारी विहार यात्रा प्रारंभ हुई थी और महाराष्ट्र से मध्यप्रदेश होकर राजस्थान तक की यात्रा अनवरत चलती रही बिना रुकावट बिना थकावट के तो इसमें देव गुरु धर्म की असीम कृपा तो है ही लेकिन साथ ही मेरे भाई ब्रजेश आपका भी पूरा - पूरा सहयोग रहा है।

इस लम्बे विहार में हर गाँव से फोन नम्बर मिलाना उन लोगों को आगे से आगे सूचित करना ये सारे कार्य भाई आपने किये हैं। मुझे गर्व है अपने भाई की कसावट युक्त लेखनी पर, क्योंकि आपने अपनी अजस्त्र शक्ति का उपयोग करते हुए और प्रत्येक गाँव नगर के मेसेज के शब्दों को हर रोज बनाकर पूर्ण सार्थकता प्रदान करते थे और मुझे मालूम है कि कुछ लोगों ने इस एस.एम.एस. को अन्यथा भी लिया

होगा। परन्तु आपने तो भाई अपना धर्म निभाया है और भी जिन-जिन लोगों ने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया उन सभी की तहेदिल से हम जितनी अनुमोदना करें, कम है। क्योंकि मेरा भाई न तो पेशेवर रिपोर्टर है, न ही पेशेवर मीडिया प्रभारी। बस भाई आप तो हो गुरु जयंतसेन की सेवा के समर्पित भक्त। मेरा मन धन्यवाद देने के लिये लालायित हो रहा था इसीलिये मैंने यह पत्र आपको लिख दिया। यही कामना करती हूँ भाई ब्रजेश की आप जो सेवा पहुंचा रहे हैं वो सेवा पहुंचाते रहे। इसी तरह और शासन की प्रभावना तथा गुरुगच्छ की सेवा करते रहें।

सम्यक ज्ञान बहुमान समारोह का आयोजन

इंदौर । धार्मिक शिक्षा एवं संस्कार को बढ़ावा देने एवं बच्चों को प्रोत्साहित करने हेतु अखिल भारतीय नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू द्वारा चलाई जा रही सम्यक ज्ञान अभिवृद्धि योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय पदाधिकारी इंदौर पधारे।

कार्यक्रम सौरभ के रूप में राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशभाई धरू, श्रीसंघ अध्यक्ष धरमचंदजी बोहरा आदि उपस्थित थे। देव गुरु भगवंतों के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन पश्चात पाठशाला के संयम जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में पधारे अतिथियों का स्वागत परिषद् के अध्यक्ष अनूप बोहरा, महामंत्री पीयुष रूनवाल, धर्मेन्द्र नाहर, पुनीत जैन, विनयजी भटेवरा आदि तथा शाखा इंदौर जूनी कसेरा बाखल के अध्यक्ष तेज कुमारजी बंबोरिया, उपाध्यक्ष रमेशजी श्रीश्रीमाल, संजय बागरेचा, सुनीलजी बांठिया महिला परिषद गुमास्तानगर की अध्यक्षा विनीता बांठिया, पूर्वाध्यक्ष स्नेहलताजी डुंगरवाल, महामंत्री संगीता जी सेठिया आदि ने किया। सभी ने अतिथियों का आत्मीय बहुमान शाल, माला एवं श्रीफल के द्वारा किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए राजेश वागरेचा ने सभी का अभिनंदन किया एवं योजना की जानकारी दी। पाठशाला संचालिका सोनल जैन ने प्रगति पत्रक पेश किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशजी धरू ने अपने उद्‌बोधन में बच्चों की सराहना करते हुए योजना में शिक्षक-शिक्षिकाओं के योगदान को याद किया।

इस अवसर पर शाखा-इंदौर गुमाश्ता नगर द्वारा पाठशाला संचालिका - शिक्षिका सोनलजी जैन, समताजी जैन, विजयाजी मोदी, प्रीतीजी कटलेचा के कार्यों की सराहना करते हुए उनका बहुमान किया गया एवं बच्चों को प्रमाण पत्र एवं मोमेन्टों देकर प्रोत्साहित किया।

महिला पदाधिकारियों ने संकल्प लिया

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ । महिला परिषद की राष्ट्रीय व प्रांतीय पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी को परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश भाई धरू के द्वारा शपथ दिलाई गई। महिला परिषद की बैठक का आगाज इंदौर परिषद की वैयावच्चमंत्री सुधर्मा बम द्वारा सामूहिक नवकार मंत्र के साथ किया गया। संचालन के साथ सभी पदाधिकारी व कार्यकारिणी का काव्यात्मक परिचय देते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष आशाजी कटारिया को आमंत्रित किया। श्रीमती आशाजी कटारिया ने बैठक को संबोधित किया व परिषद को विश्वास दिलाया कि वह तन-मन-धन से समर्पित होकर परिषद के लिए कार्य करेगी व सभी महिला परिषद शाखा के साथ और सहयोग से परिषद के कार्य को शिखर पर पहुंचाएगी।

प्रांतीय अध्यक्ष निशाजी बनवट ने अपने संबोधन में पुण्य सम्राट के पुण्य दिवस पर परिषद की सभी शाखाओं से सामूहिक रक्तदान करने का आग्रह किया। वैयावच्च मंत्री पुष्पाजी भंडारी ने सभी शाखाओं से वैयावच्च समिति बनाने का अनुरोध किया व

साध्वी भगवंत से निवेदन किया कि आप समय की अनुकूलता देखकर विहार करें। राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री राखीजी राका ने सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को मनोनयन पत्र देकर कार्यभार सौंपा व सभी से सहयोग व पूर्ण समर्पण भाव से कार्य करने के निर्देश दिए।

त्रिसूत्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत ज्ञानार्जन योजना के शुभारंभ के साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री संगीताजी पोरवाल ने आभाजी दुग्गड़ व सुनीताजी खाबिया के साथ अलीराजपुर में यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ की स्थापना की। अंत में पूज्य साध्वीजी दर्शित कला श्री जी महाराज साहब ने परिषद परिवार को मार्गदर्शन दिया। राष्ट्रीय महामंत्री राखीजी राका के आभार के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

– विनीता बांठिया

◆ **पालीताना ।** आचार्य नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा. ने पालिताना तीर्थ में एक समारोह में अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद दक्षिण प्रान्त की नूतन कार्यकारिणी की घोषणा की जिसमें उषा वोरा मैसूर को अध्यक्ष, जया वाणीगोता बीजापुर को उपाध्यक्ष, मिंटू जैन हुबली को महामंत्री, लीलादेवी कोयम्बटूर को सहमंत्री एवं मीना तलावट सेलम को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया। नूतन अध्यक्ष उषा वोरा ने बताया की वे दक्षिण प्रान्त की सभी शाखाओं को साथ में लेकर कई सामाजिक धार्मिक कार्यक्रम कर परिषद को नित नयी ऊचाईयों पे ले जाने का प्रयत्न करेंगे।

महामंत्री मिंटू जैन ने बताया कि हमारा उद्देश्य है दक्षिण में परिषद की अभी 7 शाखाएं चल रही हैं जिसे और भी बढ़ाकर प्रत्येक शहर में परिषद शाखा हो।

तरुण परिषद की राष्ट्रीय समिति घोषित

मोहनखेड़ा । श्री मोहनखेड़ा तीर्थ म्यूजियम गुरु सप्तमी के पावन पर्व पर अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन तरुण परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की घोषणा की गई। जिसमें अध्यक्ष राज देसाई, उपाध्यक्ष राहुल सकलेचा, दीप जोशी, महामंत्री हर्ष कटारिया, कोषाध्यक्ष सपन लोढ़ा, संगठन मंत्री हनी चौरड़िया, सहसंगठन मंत्री रोहित वोरा, रोहन जैन, शिक्षा मंत्री मृशील देसाई,

सहशिक्षा मंत्री यश बाफना, प्रचार मंत्री अर्चित गोखरू, सहप्रचार मंत्री दिव्यांशु दांगी, विवेक वागरेचा, वैयावच्च मंत्री नमन छजलानी, सहवैयावच्च मंत्री अभिषेक सकलेचा, तत्वार्थ मोरखिया को मनोनीत किया गया। जिस पर संपूर्ण भारत की तरूण परिषद की शाखाओं द्वारा हर्ष प्रकट किया गया। उपरोक्त जानकारी तरुण परिषद राष्ट्रीय प्रचार मंत्री अर्चित गोखरू द्वारा दी गई।

◆ **डीसा ।** अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने महाविदेह धाम पर आयोजित सम्मान समारोह में जीवदया के क्षेत्र में अनुमोदनीय कार्य करने हेतु अभिनन्दन पत्र भेंट किया जिसमें कहा गया कि गणतंत्र दिवस पर गुजरात के राज्यपाल ओ.पी. कोहली तथा मुख्यमंत्री श्री विजयजी रूपाणी ने जो सम्मान श्री हंसमुख वेदलीया को दिया है वह परिषद को गौरवान्वित करता है। श्री वेदलिया ने पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से जीवदया कार्य को अपने जीवन का मिशन बना लिया है जो सराहनीय है।

◆ **बड़नगर।** अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की स्थानीय शाखा का वार्षिक स्नेह सम्मेलन रविवार को राजेन्द्रसूरि जैन मांगलिक भवन में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के साथ - साथ आचार्यश्री यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की 60 वीं पुण्य तिथि भी मनाई गई। इस अवसर पर शासकीय अस्पताल में संचालित अन्नपूर्णा भोजनालय में मरीजों एवं सहायकों को भरपेट भोजन करवाया गया। सेवा के इसी क्रम में गीता भवन अन्न क्षेत्र में निराश्रितों, असहायों को भोजन करवाया गया। दोपहर को मांगलिक भवन में बच्चों को गेम्स खिलाए गये एवं विजेता को पुरस्कृत किया गया। गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया जिसमें वक्ता के रूप में प्रिन्सजी धरू सूरत, गौरव गोखरू, राजकुमार नाहर, श्रीमती इन्दुजी गोलेचा, सुशील श्री श्रीमाल ने आपके गुणों को बताते हुए आपके जीवन पर प्रकाश डाला।

परिषद के वार्षिक स्नेह सम्मेलन में संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशजी धरू मुंबई, महामंत्री सुधीर लोढ़ा मंदसौर, भरतभाई वोरा सूरत, राजेश वागरेचा इंदौर, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी ब्रजेश बोहरा नागदा ने सम्मेलन में सहभागिता की। अतिथिगण द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के बाद माल्यार्पण से स्नेह सम्मेलन का प्रारंभ हुआ सभी का अतिथि

परिचय करवाया गया। इस अवसर पर परिषद के नव युवक राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारी नगर के नव नियुक्त श्री शांतिलाल गोखरू राष्ट्रीय मंत्री, सहमंत्री शैलेष, औरा, प्रांतीय अध्यक्ष राजेन्द्र दंगवाडा वाला, मंत्री राकेश गोलेचा, संघ के प्रदेश कोषाध्यक्ष वीरेन्द्र राठौड़, तरुण परिषद के राष्ट्रीय सदस्य अर्चित गोखरू, स्थानीय अध्यक्ष मनोज औरा, प्रांतीय महिला परिषद कोषाध्यक्ष अनिता सर्राफ मंचासीन थे। सभी अतिथियों का स्वागत परिषद सदस्यों द्वारा किया गया। अनिता सर्राफ का बहुमान महिला एवं बहू परिषद द्वारा किया गया। मंचासीन सभी अतिथियों द्वारा सम्मेलन को संबोधित किया गया। सभी मंचासीन अतिथियों का शाल श्रीफल एवं माला से बहुमान किया गया। कार्यक्रम का संचालन साकेत गामा ने किया आभार अमित कुमट ने व्यक्त किया। रात्रि को आध्यात्मिक तम्बोले का आयोजन हुआ।

◆ **राणापुर।** राणापुर शहर में विगत 5 वर्षों से परिषद शाखा की उदासीनता मुझे रास नहीं आ रही थी क्योंकि अखिल भारतीय परिषद की स्थापना के चन्द वर्षों बाद ही 53 वर्ष पहले मुनि जयंत विजय 'मधुकर' के चातुर्मास में राणापुर शाखा का गठन हुआ था। उक्त उद्‌गार परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश धरू ने पूज्य आचार्यश्री यतीन्द्रसूरीजी की पुण्य तिथि के अवसर पर राजेन्द्र भवन में व्यक्त किये। श्री धरू ने कहा कि परिषद के प्रति अनुराग ही पुण्य सम्राट की सच्ची वंदना है।

कार्यक्रम में प्रारम्भिक एवं स्वागत भाषण देते हुए प्रदेश मंत्री कमलेश नाहर ने कहा कि आज हम परिषद शाखा का नवीनीकरण कर रहे हैं इस आशा और उत्साह के साथ की हमारी सामाजिक सक्रियता बनी रहे।

परिषद के पूर्व राष्ट्रीय सदस्य सुरेश समीर ने कहा कि राणापुर शाखा ने तीन बार प्रथम शाखा का पुरस्कार जीता। इस अवसर पर उपस्थित शिक्षा मंत्री भरतभाई, मुकेश नाकोड़ा, राजेश वागरेचा का स्वागत किया। श्री धरू ने अध्यक्ष राजेश वोरा, उपाध्यक्ष विक्की सकलेचा, सचिव मितिन सकलेचा, सह सचिव अमित सियाल, कोषाध्यक्ष मनीष सकलेचा, प्रवक्ता अवि. सुरेश, साहित्य एवं सांस्कृतिक सचिव अक्षत सकलेचा, संगठन सचिव बाबू सेठ की घोषणा की। समाज के चारों पंच एवं अध्यक्ष संरक्षक तथा सुरेश समीर एवं प्रदीप भंसाली मुख्य परामर्शदाता के रूप में अपनी सेवा देंगे। संचालन सुरेश समीर ने किया एवं प्रदीप भंसाली ने आभार व्यक्त किया।

दो दिवसीय आध्यात्मिक यात्रा का आयोजन

बड़नगर। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के नेतृत्व में दो दिवसीय आध्यात्मिक शिविर 28-29 दिसम्बर को आयोजन ज्ञान मंदिर में सम्पन्न हुआ इस आध्यात्म शिविर में सूरत से पधारे प्रिन्सजी धरू एवं रूपसेन धरू द्वारा पाठशाला एवं शिविर के बच्चों को अनेक ज्ञान की बातें बताई। प्रथम दिन दीप प्रज्ज्वलन के साथ शिविर का प्रारम्भ हुआ पश्चात प्रभु जिन पूजा किस तरह से करना इससे बच्चों को अवगत कराया गया।

दोपहर में जिन शासन क्यों है ? मुनि भगवंत शासन क्या है ? इस विषय को विस्तार से समझाया गया। प्रभु दर्शन वंदन नियमपूर्वक भाव से करना है इसे विधि सहित बताया गया। रात्रि को प्रभु भक्ति बच्चों द्वारा की गई।

उपरोक्त सभी आयोजन साध्वी श्री अमिद्रष्टा श्रीजी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुए। शिविर के दूसरे दिन प्रातः काल में पंच औषधियों द्वारा प्रभु का अभिषेक किया गया। इस अवसर पर साकेत गामा, सोनू चण्डालिया, शिविर संचालिका प्रीति खाबिया सहित समाजजन उपस्थित थे। दोपहर के सत्र में सामाजिक क्रिया की शुद्धता एवं जैन धर्म के इतिहास पर समझाइश दी गई। पश्चात जैन धर्म की बारीकियों से अवगत कराया गया। बच्चों को धार्मिक गेम्स भी खिलाये गये। शिविर में मनोज ओरा, प्रकाश खाबिया सहित सदस्यों का सहयोग रहा। शाम को धार्मिक उद्‌बोधन के साथ शिविर का समापन हुआ। समापन अवसर पर परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशजी धरू, राष्ट्रीय महामंत्री सुधीरजी लोढ़ा, भरतभाई औरा, राकेश वागरेचा,ब्रजेश बोहरा, राजेन्द्र दंगवाड़ा, शांतीलाल गोखरू, राकेश गोलेचा ने शिविर का अवलोकन किया। जानकारी राजकुमार नाहर द्वारा दी गई।

◆ **दसाई।** धार्मिक शिविर बच्चों में ज्ञान का प्रकाश करते हैं। शिविर में बच्चे ज्ञान के साथ संस्कारों को भी सीखते हैं। उक्त उद्‌गार दसाई के राजेन्द्रसूरी ज्ञान मंदिर में परिषद् परिवार द्वारा आयोजित दो दिवसीय आध्यात्मिक यात्रा शिविर के समापन पर परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश भाई धरू ने व्यक्त किये।

श्री रमेश भाई धरू ने बच्चों से

धार्मिक और पारिवारिक विषयों पर चर्चा के दौरान धर्म की ओर प्रेरित करते हुए कहा कि बचपन में कंठस्थ हुए सूत्र कभी भूल नहीं सकते इसलिए बच्चों को पाठशाला अवश्य भेजें जिससे उनको इस उम्र में जो सिखाया जाता है वह भूले नहीं। उन्होंने आध्यात्मिक शिविर को धार्मिक शिक्षा से जोड़ने का मार्ग बताया व माता-पिता की सेवा का आह्वान भी किया।

मंचासीन अतिथियों का स्वागत श्री संघ अध्यक्ष संजय पिपाड़ा, संघ के वरिष्ठ बाबूलालजी मंडलेचा, शैतानमलजजी नाहर, पारसमलजी पावेचा, मांगीलालजी लोढ़ा, मनीष पावेचा, विजय नाहर, जितेन्द्र नाहर, नीलेश लोढ़ा, दीपक सियाल, ज्ञानचंदजी पावेचा आदि ने किया। शिविर संचालक सूरत से पधारे मोक्ष भंसाली, भव्या सेठ, एंजल शाह का शाल-श्रीफल से कमल नाहर, पूजा पावेचा, संगीता पीपाड़ा, शिखा नाहर, याशिका मंडलेचा आदि ने किया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय महामंत्री सुधीरजी लोढ़ा ने संबोधित करते हुए युवाओं को सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में कार्य करने का आह्वान किया।

शिविर लाभार्थी भरत भाई व्होरा ने बच्चों को संबोधित करते हुए अपनी ओर से सभी 50 शिविरार्थियों को प्रभावना भी वितरित की।

शिविर में बच्चों की ओर से नैतिक नाहर ने भी अपने विचार रखे। स्वागत गीत रेखा राठौड़, नेहा मंडलेचा ने प्रस्तुत किया कार्यक्रम का संचालन परिषद के प्रांतीय प्रचार मंत्री राकेश नाहर ने किया। स्वागत भाषण कमल राठौड़ व आभार सुनील चंडालिया ने व्यक्त किया।

कार्यक्रम में महिला परिषद, तरुण परिषद , बालिका परिषद का सहयोग सराहनीय रहा। कार्यक्रम में सुभाष मंडलेचा, विशाल जैन लाबरिया, नीलेश सियाल, सिद्धार्थ नाहर, अंगूर बेन खाबीया, मधुबेन सियाल, चन्द्रकान्ता बेन पावेचा सहित समाजजन उपस्थित थे।

इसके पूर्व शिविर के दूसरे दिन रविवार को सुबह 9 बजे पंच द्रव्य से भगवान आदिनाथ और राजेन्द्र सूरिश्वरजी का अभिषेक भी किया गया। अभिषेक के दौरान धार्मिक गीतों पर सभी ने प्रभु भक्ति का आनंद लिया।

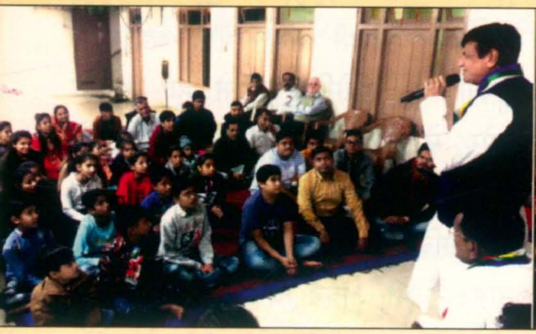

◆ **राणापुर।** राणापुर में आयोजित दो दिवसीय आध्यात्म यात्रा शिविर के दूसरे दिन रविवार को श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरू, राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री भरतभाई बोहरा, राष्ट्रीय पदाधिकारी श्री मुकेश नाकोड़ा, राजेश वागरेचा, श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय में शिविर का निरीक्षण करने पहुंचे। यहाँ उन्होंने उपस्थित बच्चों से शिविर से मिली जानकारी और शिविर आयोजन के महत्व के बारे में पूछा। बच्चों ने भी शिविर से मिली जानकारी को बताया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहाकि सभी बच्चों को धार्मिक शिक्षा में रुचि लाने में पालक भी आगे आवें और बच्चों को पाठशाला भेजें। बच्चों से भी उन्होंने प्रतिदिन पूजन करने की समझाइश दी। पूजन के महत्व को समझाया। शिक्षा मंत्री भरत वोहरा ने भी धार्मिक शिक्षा पर जोर दिया। इस अवसर पर सर्वप्रथम सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों का स्वागत किया गया। सूरत से आये बंधु हित जैन, देव जैन का बहुमान राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश धरू एवं टीम ने किया। इस अवसर पर श्रीसंघ अध्यक्ष चन्द्रसेन कटारिया, परिषद अध्यक्ष पवन नाहर, प्रदेश मंत्री कमलेश नाहर, सूरत परिषद के हित जैन ने भी अपने विचार रखे। संचालन जितेन्द्र सालेचा ने किया। आभार विनय कटारिया ने व्यक्त किया।

आध्यात्मिक शिविर के दौरान ही रविवार को 7 बजे पंच औषधियों के द्वारा सूरत से पधारे तरुण परिषद के बन्धुओं की निश्रा में मुनिसुव्रत भगवान एवं गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी का अभिषेक किया गया। पंच औषधियों के द्वारा किये अभिषेक में बड़ी संख्या में समाजजन एवं पाठशाला के बच्चों ने लाभ लिया। लगभग 3 घण्टे चले अभिषेक में धार्मिक गीतों पर संगीतमयी माहौल में सभी ने खूब

आनंद लिया। शिविर में प्रतिदिन की प्रभावना एवं पुरस्कार के लाभार्थी चन्द्रसेन कटारिया थे। जबकि शिविर आयोजक भरतभाई वोहरा मुंबई की ओर से भी शिविर में लाभ लेने वाले बच्चों को प्रभावना दी गई।

◆ **राणापुर।** आयोजित आध्यात्मिक शिविर यात्रा के समापन समारोह की मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित अभा श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती आशा कटारिया ने बच्चों को अपने सम्बोधन में कहा कि बचपन में सीखी गाथाएं, सूत्र कंठस्थ हो जाते हैं इसलिये बच्चों को पाठशाला अवश्य भेजें जिससे उनको इस उम्र में जो सिखाया जाता है वो भूल नहीं सकते हैं।

आपने राणापुर परिषद द्वारा आयोजित इस शिविर की प्रशंसा की। उन्होंने इस अवसर पर सभी शिविर में भाग लेने वाले बच्चों को पुरस्कृत भी किया। महिला परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद प्रथम नगर आगमन पर मुनिसुव्रत जिनालय श्रीसंघ एवं नवयुवक परिषद, महिला परिषद की ओर से उनका एवं वैयावच्च समिति की प्रमुख श्रीमती भंडारी का बहुमान किया गया।

समापन के पूर्व श्री यतीन्द्र

ज्ञानपीठ परीक्षा के उत्तीर्ण सभी परीक्षार्थियों को भी प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार राशि भी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती आशा कटारिया ने वितरित की, सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन जितेन्द्र सालेचा ने किया।

नहीं

1.क्रोध के समान विष नहीं ।
2.क्षमा के समान अमृत नहीं ।
3.पाप के समान वैरी नहीं ।
4.धर्म के समान मित्र नहीं ।
5.कुशील के समान भय नहीं ।
6.शील के समान शरण भूत नहीं ।
7.लोभ के समान दुःख नहीं ।
8.संतोष के समान सुख नहीं ।

जैन विश्व

मधुबन की जैन संस्थाओं, प्रबंधकों व ट्रस्टियों के विरोध में माओवादियों ने जारी किया पर्चा

मधुबन / पारसनाथ। क्रांतिकारी उत्तरी छोटानागपुर जोनल कमेटी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी माओवादी की ओर से जैन समुदाय के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पारसनाथ, मधुबन स्थित तमाम ट्रस्ट व संस्थाओं एवं प्रबंधकों के खिलाफ पर्चा जारी किया है। पर्चे में इनको मजदूर विरोधी बताकर कहा गया है कि मधुबन में दिगंबर एवं श्वेताम्बर दोनों संस्थाओं को मिलाकर 32 संस्थाएँ कार्यरत हैं। सारी संस्थाएँ यहाँ के दलित, आदिवासी, मूलवासी की जमीनों को कब्जा कर बसे हैं। कहा कि जिन मजदूरों का बल पर यहां अट्टालिकाएँ खड़ी कर रखी हैं उन्हीं मजदूरों के ऊपर संस्थाओं के प्रबंधकों, ट्रस्टियों द्वारा निर्मम, आर्थिक, शोषण, बर्बर मानसिक व शारीरिक उत्पीड़न बदस्तूर जारी है। बिना कारण बताए सम्मेद शिखर तलेटी ट्रस्ट मधुबन में कार्यरत कर्मचारियों में से 5 कर्मचारियों को अकारण अथवा कोई दोष सिद्ध किए बिना काम से निकाल दिया गया है। वहीं कच्छी भवन मधुबन में कार्यरत 2 कर्मचारियों को काम से निकाला गया है। वहीं पर्चे में आगे लिखा गया है कि सम्मेलन चल विकास कमेटी में कार्यरत 7 कर्मचारियों को बिना कोई वजह बताए काम से बैठा दिया गया है जबकि भोमिया भवन मधुबन में कार्यरत कर्मचारियों को सरकारी मानदेय के मुताबिक वेतन का भुगतान न करना इसके खिलाफ आवाज उठाने पर कर्मचारियों पर संस्था के अंदर मांस, मदिरा बेचने का झूठा आरोप लगाकर उनको अधिकार से वंचित रखा गया है। श्रीधर मंगल जैन विद्यापीठ मधुबन में कार्यरत कर्मचारियों को शराब का सेवन करने का आरोप लगाकर डेरा खाली करने का नोटिस जारी करना आदि इन संस्थाओं के मजदूर विरोधी हरकत करने का चारित्र उजागर करता है। वहीं माओवादियों ने

पर्चा में लिखा है कि धर्म की आड़ में यहां कई अनैतिक धंधे मधुबन में चल रहे हैं। धर्म यहां व्यापार बन चुका है। इन धर्म के ठेकेदारों ने निरंतर मजदूरों पर हिंसात्मक कार्रवाई कर रखी है। प्रशासन से इनकी मिलीभगत है और प्रशासन के साथ मिलकर मजदूरों पर उत्पीड़न जारी रखना इनकी नियती बन चुकी है।

पर्चे के माध्यम से माओवादियों ने कहा है कि एक ओर प्रतिदिन मांस-मदिरा का सेवन करने वाले पुलिस प्रशासन को डाक बंगला, रिजु बेड़ा, टाटा और कल्याण निकेतन में जैन संस्थाएँ आश्रय दिए हुए हैं वहीं दूसरी ओर मेहनत मजदूरी कर जीवन यापन करने वालों पर मांस-मदिरा सेवन करने आदि का आरोप लगाकर उन्हें काम से निकाल बाहर किया जा रहा है जो सरासर गलत है। प्रति वर्ष अप्रैल-मई के महीने में पारसनाथ के घने जंगल, पहाड़ में हर साल पुलिस द्वारा आग लगायी जाती है और भीषण आग की लपेट में अनगिनत बेशकीमती पेड़-पौधे और जीव-जंतु जलकर मर जाते हैं, उस समय अहिंसा परमोधर्म कहां चला जाता है न तो संस्थाएँ और न ही प्रबंधक इस पर कुछ सार्थक पहल करते हैं।

अंत में मेहनतकश वर्ग के सभी तबकों का राजनीतिक कर्त्तव्य बनता है कि हर जुल्म के खिलाफ तथा न्याय के लिए शोषक शासक वर्ग के खिलाफ शोषित - पीड़ित वर्ग को एकताबद्ध होकर करारा जवाब देने के लिए समर में कूदना पड़ेगा। निवेदक के रूप में क्रांतिकारी उत्तरी छोटानागपुर जोनल कमेटी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी माओवादी लिखा गया है।

◆ **चैन्नई।** अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग का नई दिल्ली में केन्द्रीय रक्षामंत्री राजनाथसिंह ने सम्मान किया। उपाध्याय मूलमुनि जन्म शताब्दी समारोह शुभारंभ के उपलक्ष्य में जैन दिवाकर अहिंसा सेवा संघ, इंदौर की ओर से आयोजित कार्यक्रम में डॉ. धींग की उल्लेखनीय श्रुतसेवाओं के लिए सम्मान किया गया।

◆ पौष दशमी श्री पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक पर्व पर आचार्यश्री रविरत्न सूरीश्वरजी । पचास साधु-साध्वी की निश्रा में ग्यारह लोगों ने अट्ठम (तीन दिन) की तपस्या की।

◆ अतिप्राचीन जैन तीर्थ श्री भोपावर महातीर्थ का नवीन

जिनालय करीब 40 करोड़ की लागत से बनकर पूरी तरह से तैयार हो चुका है। इस महातीर्थ की प्रतिष्ठा का महोत्सव आठ दिवसीय होगा और प्रतिष्ठा 26 फरवरी को होगी।

◆ अ.भा. श्वेताम्बर महासंघ के आगामी अध्यक्ष के रूप में वरिष्ठ समाजसेवी, कैलाश नाहर मनोनित किये गये।

◆ नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. श्रुति कोचर मारू को जापान की क्योटो सिटी में हुई वार्षिक कान्फ्रेंस में दो अॅवार्ड मिले।

◆ तीर्थराज सम्मेद शिखरजी स्टेशन पर क्षिपा एक्सप्रेस के रुकने के समय को दो मिनट से बढ़ाकर 5 मिनट करवाने के लिए सांसद श्री शंकर लालवानी का समग्र जैन समाज ने अभिनंदन किया।

◆ मदुरै में मुमुक्षु चिंतन वागरेचा, आदित्य वागरेचा वीणा कुमारी वागरेचा इन चारों मुमुक्षुओं की शोभायात्रा गाजे-बाजे के साथ निकाली गई व सम्मान किया गया। श्रीसंघ प्रवक्ता दिनेश सालेचा ने बताया कि स्थानीय कीले चौट्टी स्ट्रीट नगे कड़े बाजार से श्री सकल मदुरै जैन समाज के साथ निकली शोभायात्रा राजेन्द्र भवन में पहुँचकर धर्म सभा में परिवर्तित हो गई।

रात्रि भोज क्यों नहीं ?

सूर्य की रोशनी में नीले आकाशी रंग के सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ती नहीं होती या उस रोशनी को सहन नहीं कर पाने से कही छिप जाते हैं। सूर्य की रोशनी स्पष्ट दिखाई देने के कारण हम बहुत जीवों की हिंसा से बच जाते हैं। रात्रि की कृत्रिम रोशनी अनेक जीवों को आकर्षित करती है। जिससे अनेक प्रकार के सूक्ष्म जीवों का प्रसार बढ़ जाता है। रात्रि में इन्हें स्पष्ट रूप से न देखने के कारण अनायास ही इन जीवों के भोजन के साथ भक्षण कर लेने की संभावना से नकारा नहीं जा सकता। वैज्ञानिकों के अनुसार सूर्य की रोशनी में Infrared तथा Ultravoilet पायी जाती हैं जो कि मंगल के समान पुदगल को भेदकर अनेक कीटाणुओं की उत्पत्ति को संभव ही नहीं होने देती। वैज्ञानिक दृष्टि से सूर्य की रोशनी में ऑक्सीजन की मात्रा अधिक होती है और कार्बनाडायऑक्साईड की मात्रा कम होती है। जिससे भोजन आसानी से व शीघ्र पच जाता है। जो स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होता है। रात्रि दूषित वातावरण में भोजन में ऐसे तत्व मिलते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होते हैं।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी
  भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी
  फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

श्री शत्रुंजय महातीर्थ का छःरि पालक संघ शानदार ढंग से सम्पन्न

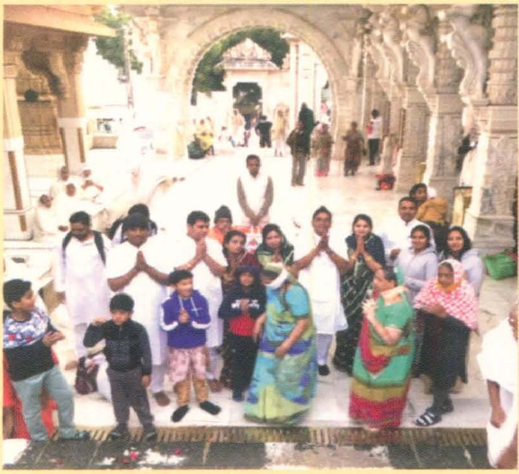
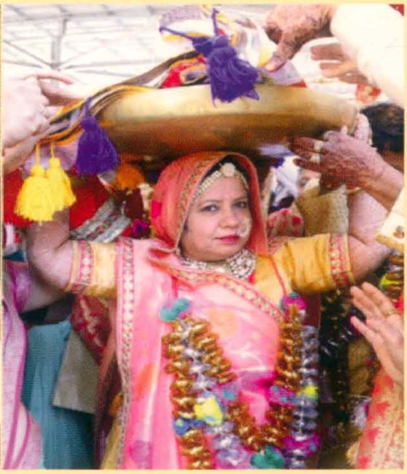

पालीताना । श्री शत्रुंजय महातीर्थ का छःरि पालक संघ पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा एवं वर्तमान गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिजी महाराज साहब की निश्रा में छाजेड़ परिवार पारा द्वारा 15 जनवरी से 19 जनवरी तक भव्यातीभव्य रूप से निकाला गया । संघ में प्रतिदिन अलग-अलग आयोजन हुए।

पहले दिन अलसुबह संघ के आयोजक को श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष वाघजीभाई वोहरा अहमदाबाद ने बहुमान कर बिदाई दी। प्रतिदिन सुबह भक्तामर का पाठ नित्य धार्मिक क्रिया से संघ अगले पड़ाव के लिए प्रयाण कर जिन मन्दिरों के दर्शन वन्दन, वरघोड़ा से प्रवेश के पश्चात् आराधक स्नात्रपूजन, केशर पूजन, एकासना, दोपहर में गुरुभगवन्तों के प्रवचन श्रवण करते हुए शाम को सम्पूर्ण यात्रियों के साथ संघपति परिवार कुमारपाल राजा बनकर मन्दिरजी में आरती करते।

शाम को देवसीय प्रतिक्रमण के पश्चात् रात्रि में कलाकारों द्वारा आकर्षक प्रस्तुतियों ने यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित किया। अंतिम पड़ाव अढ़द्वीप में गिरी वधामणा का शानदार आयोजन हुआ जिसमें मिलनजी शाह भावनगर और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सुमधुर संगीतकार विनितजी गेमावत ने सिद्धाचलजी की स्तवना की फिर सुबह संघ ने वहाँ से चलकर गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में गाजे-बाजे के साथ संघपति मुमुक्षुओं के साथ पालीताना

शेष पेज नं. 4 पर

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/18-20
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- वर्ष-67, अंक-02 कुल पृष्ठ कवर सहित -108

पेज नं. 3 का शेष

प्रवेश किया। जहाँ सेठ आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी की मुख्य गादी पर संघपति को विराजमान कर संघपति पत्र देकर बहुमान किया। उसके पश्चात् संघ तलेटी के दर्शन वन्दन हेतु पहुंचा और चैत्यवंदन किया। दोपहर में बहुमान कार्यक्रम यतीन्द्र भवन में सम्पन्न हुआ। श्रीसंघ परिषद परिवार पारा के साथ यतीन्द्र भवन के ट्रस्टीगण यात्रियों, अनेक संघों, संस्थाओं, मित्र मंडल द्वारा संघपति प्रकाशचंद्रजी केशरीमलजी छाजेड़ का भव्यता से स्वागत अभिवादन किया। माल की आठ बोलियां लगाई गई। कार्यक्रम का संचालन प्रकाश तलेसरा पारा ने किया। सायंकाल संघ तलेटी पर बेन्डबाजे से दर्शन वन्दन करने पहुँचा। जहाँ पर ऐतिहासिक साज-सज्जा की गई जो प्रत्येक तीर्थयात्री के लिये आकर्षण का बिन्दु रहा। रात्रि को संगीतकार राजु विजयवर्गीय व मन मधुकर म्युजिक ग्रुप द्वारा भक्ति का शानदार आयोजन किया साथ ही मुमुक्षु कल्पकुमार दोसी अहमदाबाद व मुमुक्षु निर्मला बेन कुक्षी की 19 जनवरी सुबह दीक्षा हुई सुबह 7 बजे दादा के दरबार में दर्शन वन्दन करने संघ रवाना हुआ।

गच्छाधिपति की निश्रा में सुबह 10 बजे संघमाला का कार्यक्रम दादा के दरबार में हुआ। उसके पश्चात् गिरिराज पर विराजमान मूलनायक आदिश्वर भगवान की ध्वजारोहण का लाभ संघपति परिवार ने किया। भारत भर से पधारे श्रीसंघ एवं परिषद के परम गुरुभक्तों ने नूतन संघपति प्रकाशचन्द्रजी केशरीमलजी छाजेड़ व परिवार को बधाईयां दी एवं बहुमान किया ओर सभी तीर्थयात्रियों, कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। संघ में आकर्षण के केन्द्र 4 घोड़े, 4 ऊँट, हाथी, 4 रथ, 4 बग्गी, भटिंडा का बैंड, भावनगर का बैंड, ताशा पार्टी, शहनाई, भारत भर के प्रसिद्ध संगीतकार, हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा, रंगोली एवं साज-सज्जा यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करती थी।

19 जनवरी शाम को पालीताना से संघ प्रस्थान करके 20 जनवरी को सुबह पारा पहुँचा संघपति परिवार की महिलाओं ने गिरिराज की उतरी हुई ध्वजा को सिर पर रखकर ढोल-ढमाकों से मन्दिर में पहुंचा वहां चैत्यवन्दन गुरुवंदना की।

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001